व्यंजना

2020-21

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय
दुर्ग (छ.ग.)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित 'ए+' ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

महाविद्यालय पत्रिका समिति 2020-21

प्रो. थानसिंह वर्मा

डॉ. जयप्रकाश साव

डॉ. कृष्णा चटर्जी

डॉ. अनुपमा कश्यप

डॉ. तरलोचन कौर

डॉ. ज्योति धारकर

डॉ. संजू सिन्हा

एन.सी.सी. कैडेट एस.यू.ओ. कु. प्रेरणा शर्मा
(यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत रूस में भारत का प्रतिनिधित्व)

श्री ताम्रध्वज साहू माननीय मंत्री छ.ग. शासन एवं श्री अरूण वोरा, विधायक दुर्ग - कु. प्रेरणा शर्मा को
प्रमाण पत्र तथा प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित करते हुए

महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियाँ 2020-21

क्षेत्रीय अपर संचालक डॉ. सुशील चन्द्र तिवारी द्वारा
महाविद्यालय के प्लेसमेंट सेल का उद्घाटन

महाविद्यालय में ऑनलाइन छात्र अभिभावक शिक्षक सम्मेलन

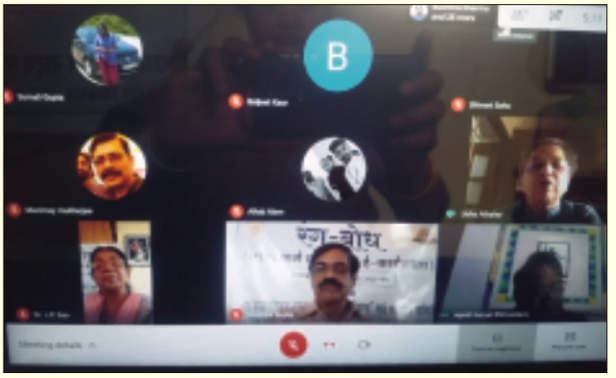

महाविद्यालय की साहित्य समिति एवं नाट्य समिति 'अभिरंग'
द्वारा ई-नाट्य कार्यशाला का आयोजन

एन.एस.एस. एवं यूथ रेडक्रास द्वारा
नशा उन्मूलन अभियान रैली का आयोजन

सड़क सुरक्षा सप्ताह पर एन.सी.सी., एन.एस..एस. एवं
युवक रेडक्रास द्वारा जागरूकता रैली का आयोजन

सहा. प्राध्यापक परीक्षा - 2020
महाविद्यालय में मॉक इंटरव्यू का आयोजन

गतिविधियाँ - 2020-21

माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी द्वारा गणतंत्र दिवस परेड, दिल्ली में सम्मिलित
एन.सी.सी. कैडेट जे.यू.ओ. कु. श्रुति शास्त्री का सम्मान

माननीय श्री अरूण वोरा, विधायक, दुर्ग द्वारा महाविद्यालय के ई-लाईब्रेरी तथा रिपोजिटरी का लोकार्पण

अपर संचालक उच्चशिक्षा श्रीमती चन्दन त्रिपाठी महाविद्यालय की ई-लाईब्रेरी का अवलोकन करते हुए

प्राचार्य, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) द्वारा प्रकाशित तथा विकल्प विमर्श द्वारा मुद्रित।
फोन- 0788 2211688 ई मेल:pprinci2010@gmail.com वेबसाइट www.govtsciencecollegedurg.ac.in

व्यंजना

महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका 2020-21

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) बैंगलोर द्वारा मूल्यांकित
'A +' ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त संस्था

संरक्षक
डॉ. आर. एन. सिंह
प्राचार्य

संपादक मंडल

प्रो. थानसिंह वर्मा

डॉ. जयप्रकाश साव

डॉ. कृष्णा चटर्जी

डॉ. अनुपमा कश्यप

डॉ. तरलोचन कौर

डॉ. ज्योति धारकर

डॉ. संजू सिन्हा

यू.जी.सी., नई दिल्ली की 'कॉलेज विथ पोटेंशियल फॉर एक्सीलेंस' योजना के तृतीय चरण के अन्तर्गत अनुदान प्राप्त करने हेतु चयनित छत्तीसगढ़ का प्रथम एवं एक मात्र महाविद्यालय, केन्द्र शासन के विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी विभाग की प्रतिष्ठित FIST योजना में शामिल महाविद्यालय का रसायन शास्त्र विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा विज्ञान संकाय हेतु घोषित 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस'

Website: www.govtsciencecollegedurg.ac.in

Email- pprinci2010@gmail.com

अनुक्रम

01. विश्वनाथ यादव तामस्कर - एक परिचय 03
02. प्राचार्य की कलम से 04
03. संस्कृत में नैतिक शिक्षा - प्रो. जनेन्द्र कुमार दीवान - 06
04. मंदिर नृत्य और दक्षिण भारत : एक सिंहावलोकन - डॉ. शकील हुसैन.....08
05. प्रकृति को भी समय दें - कु. देव श्री साहू- 10
06. Kalpana Chawla An Inspiring Indian Astronaut - Dr. Jagjeet Kaur Saluja 13
07. वर्तमान परिदृश्य में शहरी नियोजन की आवश्यकता - राहुल शर्मा – 15
08. बचपन बचाओ आन्दोलन - राजकिशोर पटेल - 20
09. फणीश्वरनाथ रेणु - शीतल सेन - 24
10. आदिवासी समाज सुधार में राजमोहिनी देवी का योगदान - जैनब खातून - 26
11. इतिहास में एनी बेसेंट एवं - थियोसॉफिकल सोसायटी - मथुरा मरकाम 28
12. महान मानवतावादी ईश्वरचन्द्र विद्यासागर - शुभम पाण्डेय – 30
13. लाला जगदलपुरी - जितेन्द्र कुमार - 33
14. पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन - प्रो. आई.एस. चंद्राकर, - 35
15. जलवायु परिर्वतन - नितिन कुमार देवांगन - 38
16. बस्तर का दशहरा - विवेक टांडेकर - 42
17. महाविद्यालीन छात्र/छात्राओं की कविताएँ 45
18. कोरोना काल में शिक्षा - कु. धालिन 49
19. What makes the science so interesting- Pragati Agrawal 51
20. हम झगड़ते क्यों है? - डॉ. शकील हुसैन, ... 52
21. महाविद्यालीन छात्र/छात्राओं की कविताएँ.....54
22. Role of Dr. Bindeshwar Pathak in Socio-economic development of untouchables - by Ku. Pragya Nema, ...58
23. My NCC Journey - Prerna Sharma 60
24. आधुनिक भारत में महामारियाँ : एक शब्द चित्र- डॉ. ज्योति धारकर 64
25. शताब्दी स्मरण.....67
26. SCIENTIFIC ACHIEVEMENTS OF DEPARTMENT OF BIOTECHNOLOGY 78

आवरण चित्र – गिरिराज सलामे, बी.एससी. भाग-3

विश्वनाथ यादव तामस्कर : एक परिचय

स्व. श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर दुर्ग जिले के ऐसे जुझारू नेता के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने गुलाम भारत में विदेशी सरकार से लड़ते हुए दुर्ग अंचल में आजादी की अलख जगायी। स्वाधीनता संघर्ष से लेकर छत्तीसगढ़ राज्य-निर्माण के लिये जो योगदान उन्होंने दिया है, उसके लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जायेगा। उनका व्यक्तित्व आज भी हमें प्रेरणा प्रदान करता है।

स्व.श्री विश्वनाथ यादव तामस्कर का जन्म दुर्ग के बेमेतरा तहसील के अंतर्गत झाल नामक ग्राम में 7 जुलाई 1901 में हुआ था। आपके पिता श्री यादव राव वामन तामस्कर कोर्ट में अर्जीनवीस थे एवं माता का नाम पुतली बाई था । आपकी शिक्षा दुर्ग तथा बिलासपुर में पूर्ण हुई तथा कानून की पढ़ाई करने इलाहाबाद गये । यहां पर आप गांधीवादी नेताओं के सम्पर्क में आये और विभिन्न आंदोलनों में भाग लेने लगे । इसी समय 1921 में असहयोग आंदोलन के बहिस्कार कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये आप कानून की पढ़ाई छोड़ कर अपने ग्राम वापस आ गये । आंदोलन समाप्त होने के पश्चात पुनः पढ़ाई प्रारम्भ कर 1927 में नागपुर से कानून की डिग्री लेकर वकालत का पेशा अपनाया किन्तु आपका मन देशप्रेम में रम चुका था, इसलिये 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में कूद पढ़े । नमक कानून की तरह छत्तीसगढ़ में जंगल कानून तोड़ने का सत्याग्रह हुआ । इस सत्याग्रह का नेतृत्व करते हुये आप गिरफ्तार हुये । ब्रिटिश सरकार से अपने कृत्य पर क्षमा नही मांगने के कारण आप पर भारी जुर्माना लगाया था तथा एक वर्ष का कठोर कारावास दिया । जुर्माना नहीं पटाने पर आपकी बहुत सी सम्पत्ति और ग्रंथालय को नीलाम कर दिया गया । तामस्कर जी शासन के इस अत्याचार के आगे नहीं झुके बल्कि जेल से छूटते ही पुनः आंदोलन में कूद पड़े । शराबबंदी आंदोलन में भाग लेते हुए दोबारा 9 माह के लिये जेल गये । साथ ही सरकार ने उनसे वकालत करने का अधिकार छीन लिया । ब्रिटिश शासन की यह नीति देशभक्तों को कुचलने की थी, किन्तु जनता ने ऐसे देशभक्तों को अपने सर आखों पर बैठाया था । तामस्कर जी 1930 से 1933 तक बेमेतरा कौंसिल के चेयरमेन चुन लिये गये । 1933 में दुर्ग डिस्ट्रिक कौंसिल के सदस्य तथा 1937 से 1940 तक उसके चेयरमेन के पद को सुशोभित किया। 1937 में प्रांतीय सरकार बनाने के लिये हुये चुनाव में आप बेमेतरा क्षेत्र से मध्यप्रान्त के धारासभा (विधानसभा) के प्रतिनिधि निर्वाचित हुये। 1939 में द्वितीय महायुद्ध के काल में विरोध स्वरूप सभी कांग्रेसी सदस्यों की तरह विधानसभा की सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया तथा गांधी जी द्वारा संचालित 1941 का व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सत्याग्रही के रूप में भाग लिया । स्वतंत्रता संग्राम के काल में आपने कुल मिलाकर लगभग पांच वर्षों की जेल यात्रा की थी । इसी बीच समाज सुधार के कार्यक्रम में भी आपने सक्रिय भागीदारी निभायी और अछूतोद्धार कार्यक्रम से जुड़े रहे ।

1952 के पहले आम चुनाव में स्वंतंत्र उम्मीदवार के रूप में बेमेतरा क्षेत्र से चुनाव लड़कर विजयी हुये तो 1957 में दुर्ग शहर से सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर विधान सभा के सदस्य बने । म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र के प्रयत्नों से आपने 1967 का चुनाव लड़ना स्वीकार कर लिया तथा विजयी होकर संसद में प्रवेश किया । आप छत्तीसगढ़ की जनता और किसानों की आवाज देश की संसद में पहुचाते रहे । शायद छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण और बहुत पहले हो जाता किन्तु नियति ने इस कर्मठ माटीपुत्र को 2 सितम्बर 1969 को हमारे बीच से उठा लिया । छत्तीसगढ़ की माटी सदा ऐसी जुझारू संतानों के प्रति ऋणी रहेगी । ऐसे कर्मठ एवं माटीपुत्र देशभक्त के नाम पर हमारे महाविद्यालय का छत्तीसगढ़ शासन द्वारा नामकरण किये जाने पर समूचा महाविद्यालय परिवार गौरवान्वित महसूस करता है ।

प्राचार्य की कलम से

1शिक्षण सत्र 2020-21 में अध्ययन रत समस्त छात्र छात्राओं का महाविद्यालय परिवार के मुखिया के रूप में का मैं हार्दिक अभिनन्दन एवं स्वागत करता हूँ । मुझे आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि हमारा महाविद्यालय नैक, बंगलौर द्वारा पुनर्मूल्यांकित छत्तीसगढ़ प्रदेश का एक मात्र एवं सर्वप्रथम 'ए प्लस ग्रेड' प्राप्त महाविद्यालय है । इस उपलब्धि का सम्पूर्ण श्रेय महाविद्यालय परिवार के प्रत्येक सदस्य-वर्तमान एवं भूतपूर्व छात्र-छात्राएं, वर्तमान एवं भूतपूर्व प्राध्यापक तथा प्राचार्य गण, सम्मानीय पालकगण, उच्च शिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन तथा महाविद्यालय से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े समाज के विभिन्न वर्गों के नागरिकों को जाता है । सत्र 2019-20 में हमारे महाविद्यालय के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, प्राध्यापकों एवं खिलाड़ी छात्र-छात्राओं ने अकादमिक सांस्कृतिक, खेलकूद एवं अन्य पाठ्यत्तर गतिविधियों में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी श्रेष्ठता का परिचय दिया है । महाविद्यालय से 22 भूतपूर्व छात्र-छात्राओं ने छत्तीसगढ़ राज्य पात्रता परीक्षा 2018 (सेट) तथा 25 विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर की नेट परीक्षा में सफलता प्राप्त की । इसी प्रकार 2017 में ही छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सहायक प्राध्यापक चयन परीक्षा में महाविद्यालय के 20 भूतपूर्व छात्रों का चयन समूचे महाविद्यालय परिवार के लिए गौरव का विषय है । मैं इन सभी को अपनी तरफ से बधाई एवं भविष्य के लिये शुभकामनाएं देता हूँ । महाविद्यालय की इन्हीं उल्लेखनीय गतिविधयों के आधार पर यूजीसी, नई दिल्ली ने इसे यूजीसी की प्रतिष्ठित योजना ''कॉलेज विथ पोटेशियल फॉर एक्सीलेंस (सीपीई) फेस3'' में शामिल किया है । मानव संसाधन संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय हायर एजुकेशन क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क तैयार करने हेतु चयनित देश के 20 प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थानों में महाविद्यालय का चयन समूचे महाविद्यालय परिवार के लिए हर्ष की बात है । पिछले शैक्षणिक सत्र में महाविद्यालय प्रशासन ने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं रोजगार उपलब्ध करवाने की दृष्टि से अनेक सार्थक प्रयास किये हैं । इन्हीं प्रयासों के परिणाम स्वरूप महाविद्यालय के 80 से अधिक विद्यार्थियों का प्रतिष्ठित संस्थाओं में कैंपस इंटरव्यु द्वारा चयन, अंर्तविश्वविद्यालयीन युवा उत्सव स्पर्धा हेतु चयन, युवा वैज्ञानिक पुरस्कार, डीएसटी का वुमेन्स सांइटिस्ट पुरस्कार जैसी उल्लेखनीय सफलताएँ संभव हो पाईं । महाविद्यालय के अनेक छात्र एवं छात्रा खिलाड़ियों ने विश्वविद्यालय एवं राज्य स्तर पर हिस्सा लेकर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है । महाविद्यालय के एन.सी.सी के 4 कैडेट्स ने गणतंत्र दिवस समारोह, नई दिल्ली में हिस्सा लेकर अपनी दक्षता का परिचय दिया । एन.एस.एस. एवं यूथ रेडक्रास के सदस्यों ने भी अपने उल्लेखनीय समाज सेवी कार्यों के द्वारा विशिष्ट छाप छोड़ी है । अक्टबूर 2016 एवं नवम्बर 2017, अगस्त 2018 एवं जनवरी 2020 में आयोजित एवं भारतीय विज्ञान एवं तकनीकी प्रभाग (डीएसटी) नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित 'इंस्पायर प्रोग्राम' का आयोजन एवं छत्तीसगढ़ प्रदेश के विभिन्न जिलों के 200 शालेय छात्र-छात्राओं की सहभागिता इस महाविद्यालय के इतिहास में मील का पत्थर सिद्ध हुई है ।

गत शैक्षिणक सत्र में महाविद्यालय में 03 स्मार्ट क्लास रूम विकसित किये गये हैं। इनके अतिरिक्त महाविद्यालय में रवीन्द्रनाथ टैगोर सेमीनार हॉस, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम स्मार्ट क्लास रूम, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन हॉल भी महाविद्यालय में स्थापित किये गये हैं । विद्यार्थियों एवं पालकों की सुविधा हेतु महाविद्यालय प्रशासनिक भवन में रिसेप्शन

कांउटर, हेल्प डेस्क, डिजीटल स्क्रीन डिस्प्ले बोर्ड, एन.एस.एस. द्वारा विद्यार्थियों, पालकों एवं महाविद्यालय अधिकारियों/कर्मचारियों को सूचना का सम्प्रेषण, प्लेसमेंट सेल जैसी नयी सुविधायें आरम्भ की गयी है । महाविद्यालय ग्रंथालय में शोधार्थियों हेतु प्रथम तल पर रिफरेन्स सेक्शन भी आरम्भ किया गया है । समूचे महाविद्यालय परिवार एवं आम नागिरिकों हेतु महाविद्यालय के मुख्य द्वार के समीप स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के एटीएम तथा कॉलेज स्टेशनरी शॉप की सुविधा भी मुहैया करायी गयी है । महाविद्यालय में रूसा एवं छत्तीसगढ़ शासन की मदद से निर्मित 14 व्याख्यान कक्षों तथा 100 सीटर बालक छात्रावास का लोकार्पण हो चुका है । कन्या छात्रावास का निर्माण कार्य लगभग पूर्णता की ओर है, जो इस सत्र में प्रारंभ हो जाएगा। शासन की महत्वाकांक्षी योजना 'सैटेलाइट के माध्यम से शिक्षण' हेतु चुने गये 5 महाविद्यालयों में से इस महाविद्यालय का चयन हम सभी के लिए हर्ष का विषय है । एजुकेशन के क्षेत्र में महाविद्यालय को एक और बड़ी उपबल्धि है 'एजुकेशनल वर्ल्ड' नाम की एक मैग्जिन ने देशभर के श्रेष्ठ ऑटोनॉमस कॉलेजों की सूची में साइंस कॉलेज को 10 वां स्थान दिया है ।

वर्तमान शिक्षण सत्र में विद्यार्थियों हेतु अनेक कल्याणकारी योजनाएं प्रस्तावित है । इनमें पोस्ट ग्रेजुएट एवं ग्रेजुएट स्तर पर नये रोजगारन्मुखी पाठ्यक्रमों का स्ववित्तीय आधार पर आरम्भ करना, प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु कोचिंग कक्षाओं का आयोजन तथा ग्रंथालय में प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित पुस्तकों का क्रय, काउंसिलिंग आधारित पीजी कक्षाओं में प्रवेश स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना, कैंटीन तथा बालक छात्रावास का उन्नयन आदि प्रमुख है । उच्च शिक्षा विभाग द्वारा सत्र - 2019-20 से दो नये पाठ्य क्रम एमएसडब्ल्यू तथा डिप्लोमा इन योगा एण्ड फिलॉसफी तथा 07 सार्टिफिकेट कोर्स की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है, जिसे शैक्षणिक सत्र 2020-21 से प्रारम्भ किया जाना है । महाविद्यालय के प्रत्येक विभाग द्वारा मूल्य संवर्द्धन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी शैक्षणिक सत्र 2020-21 से प्रारम्भ किए जाने हैं ।

गतवर्ष की भांति इस (कोविड-19) काल में भी ऑनलाइन अध्यापन, शैक्षणिक तथा शैक्षणेत्तर गतिविधियों को जारी रखा । महत्वपूर्ण विषयों पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वेबीनार का आयोजन किया साथ ही इस महामारी से उबरने के लिए, शिक्षकों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों, ने बड़े संयम व धैर्य से कार्य किया तथा जनता को जागरूक करने में अपनी अहम भागीदारी सुनिश्चत की । इसके लिए मैं सभी को धन्यवाद देता हूँ । मैं आशा करता हूँ कि हमारे विद्यार्थी भी अपने परिश्रम, ईमानदारी से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर महाविद्यालय के नाम को रौशन करेंगे, जिससे हमारा महाविद्यालय न केवल छत्तीसगढ़ अपितु देश के प्रतिष्ठित महाविद्यालय के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर सके । अंत में मैं पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित .....

(डॉ. आर.एन. सिंह)
प्राचार्य

संस्कृत में नैतिक शिक्षा

प्रो. जनेन्द्र कुमार दीवान, सहायक प्रध्यापक (संस्कृत)

'संस्कृत' शब्द का अर्थ परिष्कार होता है, परिमार्जन होता है । वस्तुतः संस्कृत शब्द भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का संवाहक है। संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसे सर्व प्राचीन घोषित किया गया है । सब जानते हैं कि सर्व प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद संस्कृत भाषा में ही है । इस देश के निवासी आर्य कहलाते थे, इस देश का एक नाम आर्यावर्त रहा है । आर्यों की भाषा संस्कृत थी और संस्कृत में ही उनकी रचनाएँ हैं । ऋग्वेद से लेकर रामायण-महाभारत पर्यन्त आर्यों के संस्कार और परम्परा का हमें ज्ञान होता है ।

संस्कृत-साहित्य में हमें प्राचीन भारत का उदात्त चरित्र चित्रित दिखता है । भारतीय संस्कृति का नैतिक उत्कर्ष का वर्णन भी संस्कृत साहित्य में हमें दिखाई देता है। उपनिषद में एक जगह राजा अश्वपति अपने राज्य के बारे में बताते हुए कहते हैं : -

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।

अर्थात् - मेरे राज्य में कोई कंजूस नहीं है, कोई शराबी नहीं है, कोई यज्ञ न करने वाला नहीं है, कोई मूर्ख नहीं है कोई व्यभिचारी पुरुष नहीं तो व्यभिचारिणी कहाँ से हो सकती है ।

इसी प्रकार उदात्त चरित्र वालों का महाभारत में भी वर्णन मिलता है -

'अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्
उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।'

यह तेरा है यह मेरा है यह तो क्षुद्र सोच वालों की बात है, उदार चरित्रवालों के लिए तो यह धरती ही परिवार के समान है ।

उपनिषदों में गुरु अपने अन्तेवासी को अध्ययन कराते हुए यही शिक्षा देता है -

सत्यं वद । धर्मं चर । ... मातृमान् पितृमान् आचार्यमान् पुरुषो वेद ।

मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्य देवो भव।

अर्थात् सत्यबोलो ।

- धर्म का आचरण करो । माता-पिता और आचार्य का सम्मान करो तथा उन्हें देव तुल्य समझो ।

इसी प्रकार वेदों में भी जगह जगह उदात्त आदर्श सूक्तों का वर्णन है । यथा -

मा गृधः कस्यस्वित् धनम् ।।

किसी के धन का कभी लालच मत करो ।

तन्मे मनः शिव संकल्पमसु ।

वह मेरा मन (शिव) पवित्र संकल्प वाला हो ।

स्वस्ति पन्थामनुचरेम ।।

हम कल्याणकारी मार्ग पर चलें ।

भागवत पुराण में भी राजा रन्त्रिदेव यही कहते हैं कि -

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवंम्
कामये दुःख तप्तानां प्राणिनां आर्तिनाशनम् ।।

न मुझे राज्य चाहिए, न स्वर्ग चाहिए, न ही मुझे मोक्ष की कामना है , मैं दुख से पीड़ितो की सेवा करना चाहता हूँ । मुण्डकोपनिषद् में भी कहा गया है -

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येम क्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैतुष्टुवौं सस्तनूभिर्व्यशेमहि, देवहिंत यदायुः।।

अर्थात् हम कानों से कल्याणकारी वचन सुनें, आँखों से भी कल्याणकारी दृश्य ही देखें ।

अर्थात् सबके लिये अच्छा सोचें, देखें और सुनें। इसी प्रकार अगले मंत्र में इसी का विस्तार किया गया है -

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।

अर्थात् ईश्वर हम सबका कल्याण करे । पूरे विश्व का कल्याण हो ।

इस प्रकार भारतीय संस्कृति ने साम्राज्यवादी ताकतों की भांति सम्पूर्ण विश्व पर साम्राज्य स्थापित करने के बजाय अपनी उदात्त भावनाओं से पृथ्वी पर विजय प्राप्त कर सम्पूर्ण विश्व में शांति स्थापना हेतु अपना योगदान दिया। मानवता और नैतिकता के प्रति सदैव आग्रही इस संस्कृति ने दया, क्षमा, अहिंसा और सदाचरण की बात की। भारतीय मनीषियों ने शायद आध्यात्मिक स्तर पर उन क्षणों को जिया या अनुभव किया होगा तभी उन्होंने संतोष को परम सुख बताया । 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः।' मनुष्य भौतिक साधनों से कभी तृप्त नहीं हो सकता ।

इसीलिए संस्कृत के आचार्यों, ऋषियों, मुनियों ने आध्यात्मिक उन्नति की बात की । मानव को मानवता की शिक्षा संस्कृत साहित्य ने दी । वेदों में कहा गया कि 'मनुर्भव' अर्थात् - 'मनुष्य बनो'।

यहाँ पर मानवता रूपी गुणों को धारण कर मनुष्य बनने के लिए कहा गया है । क्योंकि जानवर भी तो दूसरों से छिनकर या मारकर खाते हैं फिर मानव को क्या ये शोभा देता है कि वह उन जैसा व्यवहार करे - अपितु मानव का कर्त्तव्य है कि वह अपने नैतिक जिम्मेदारियों का पालन करते हुए स्वकल्याण, परिवार कल्याण, समाज कल्याण, राष्ट्र कल्याण के साथ विश्व-कल्याण के बारे में चिन्तन करे । अन्त में संस्कृत की संस्कृति अनुरूप कहते हुए विराम लेना चाहता हूँ -

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।।

हे प्रभो! सब सुखी हों, सब निरोगी हों, सभी भद्रभाव देखें, कोई दुखियारा न हों।

***

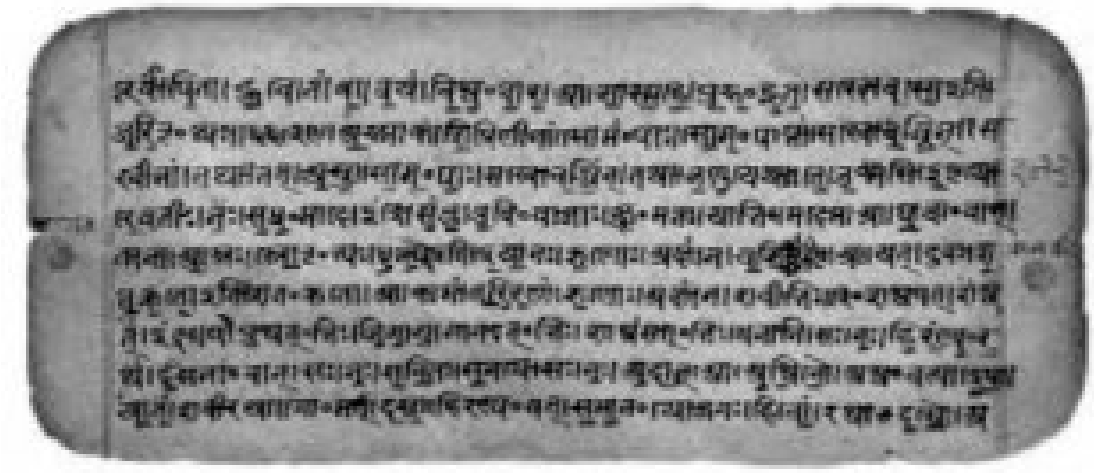

मंदिर नृत्य और दक्षिण भारत : एक सिंहावलोकन

डॉ. शकील हुसैन (सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान)

तंजावुर का राज राजा मंदिर

भारत में नृत्य केवल एक ललित कला भर नहीं है अपितु जीवन और आध्यात्म का अविछिन्न अंग है । यह 'आत्मैव ब्रह्म और ब्रह्मैव आत्म' की अभिव्यक्ति का माध्यम है । यह जीव और शिव के ऐक्य का प्रतीक है । यही कारण है इसे सम्राटों और राज राजाओं से सहस्त्रों वर्षों पूर्व देवालयों में स्थान मिला । स्वयं शिव के आनन्द ताण्डव और नटराज से इसे उद्भूत माना जाता है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के पूर्व भी इस परम्परा के स्पष्ट दर्शन होते हैं। देवालयों में नृत्य का संरक्षण उत्तर भारत की तुलना में दक्षिण भारत में अधिक हुआ । यही कारण है कि नागर शैली के देवालयों की तुलना में वेसर शैली के देवालयों में नृत्य की अविछिन्न परम्परा दृष्टिगोचर है । द्रविण शैली के मंदिरों में गर्भगृह के चतुर्दिक मण्डम की उपस्थिति इसी तथ्य का एक प्रमाण है । देवालयों में नृत्य परम्परा वैष्णव की अपेक्षा शैव परम्परा के अधिक निकट है । परिणाणतः दक्षिण परम्परा में न केवल इसका पल्लवन अधिक हुआ बल्कि नृत्य पम्परा का समाजीकरण भी अधिक हुआ और नृत्य की सामान्य पारिवारिक जीवन में भी जगह बना पायी । यही कारण है कि भरतनाट्यम और ओडिसी जैसी नृत्य विधाओं का जन्म इसी देवालय-नृत्य परम्परा से हुआ ।

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में 108 करणों की उपस्थिति देवालय और नृत्य की संगतिक स्पष्ट करती है ।

कुम्बकोणम का सांरगपानी मंदिर

चिदम्बरम का नटराज मंदिर

ताण्डव की व्याख्या में भरतमुनि इन 108 करणों को विस्तार देतें हैं । भरत नाट्यम और ओडिसी में इन 108 मुद्राओं की स्पष्ट अभिव्यक्ति पायी जाती है । दक्षिण भारत की नृत्य परम्परा में कुछ देवालय ऐसे है जहाँ प्रतीत होता है कि भरतमुनि के 108 करण आत्मैव ब्रह्म की पूर्णता को प्राप्त कर चुकें हैं । ये हैं -

1. तंजावुर का राज राजा मंदिर
2. कुम्बकोणम का सांरगपानी मंदिर
3. चिदम्बरम का नटराज मंदिर
4. तिरूअन्नमुलाई का अरूणाक्लेश्वरा मंदिर

दक्षिण की इस दैवालय-नृत्य परम्परा के साथ गृहस्थ से संयोजित किया गया । तदनुकूल यह जीवन और शिव के ऐक्य का मूल आधार बन गया । दक्षिण भारत का भारतीय संस्कृति को यह अप्रितम प्रदाय है । ***

तिरूअन्नमुलाई का अरूणाक्लेशवरा मंदिर

प्रकृति को भी समय दें

कु. देवश्री साहू, बी.ए. प्रथम वर्ष

हम सबसे सुन्दर और प्यारे ग्रह पृथ्वी में रहते हैं जो प्रकृति की एक खुबसूरत देन है ।

प्रकृति ने हमें पीने को पानी, सांस लेने को शुद्ध हवा, पेट के लिये भोजन, रहने के लिये जमीन दी है और पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि हमारी बेहतरी के लिए उपलब्ध हैं। प्रकृति हमारे जीवन का आधार है । प्रकृति से हमें जीवन जीने की उमंग मिलती है ।

यह धरती जो हमें इतनी सुन्दर लगती है वह इस प्रकृति के कारण है अन्यथा एक निर्जन ग्रह के अलावा कुछ न हो । प्रकृति ने हमें इतना कुछ दिया है कि हम सोच भी नहीं सकते । इसलिए हमें प्रकृति की देन का सम्मान करना चाहिए ।

प्रकृति में वह शक्ति है जो शरीर से कई बीमारियों को दूर कर देती है।

प्रकृति में जब तक संतुलन है तभी तक हमारे जीवन में भी संतुलन है ।

जहाँ इस प्रकृति का संतुलन खराब हुआ, वहीं हमारे जीवन का संतुलन भी डगमगाने लगेगा ।

हमें अपने आसपास के प्रकृति को स्वच्छ रखने में अपना पूर्ण योगदान देना चाहिए ।

एक माँ की तरह हमारी लालन-पालन, मदद और ध्यान देने के लिए हमें अपने प्रकृति का धन्यवाद करना चाहिए ।

आज आधुनिक युग का मनुष्य प्रकृति को बहुत साधारण और तुच्छ समझ बैठा है । क्योंकि प्रकृति की नेमतें हर जगह मौजूद है इसीलिए लोग इसे आसानी से मिलने वाली एक तुच्छ वस्तु समझ बैठे हैं । यह इस संसार का सबसे बड़ा सत्य है ।

प्रकृति को एहसास करना और इसे समझना हर-किसी व्यक्ति के जीवन का एक अभिन्न हिस्सा होना चाहिए।

आज के इस आधुनिक युग में ज्यादातर लोग टेलीविजन देखकर अपना समय बरबाद कर देते हैं। यही दुनिया की सबसे बड़ी बीमारी है ।

यह मानसिक तनाव को जन्म देता है । अपने काम के साथ साथ कुछ दिनों के लिये हमें प्रकृति का भी आनन्द लेना चाहिए क्योंकि प्रकृति ही वह शक्ति है जो हमें सब कुछ प्रदान करती है । चाहे वो हमारा खाना हो या जीवन ।

हरियाली से मन को भी शांति मिलती है । अगर आपका काम का बोझ ज्यादा है तो ज्यादातर समय आप मानसिक तनाव से ग्रस्त रहते हैं । ऐसे में अपने मन को शांत करने के लिये प्रकृति के पास जायें ।

प्रकृति हमारा सबसे बड़ा मित्र है। हम इस ग्रह पृथ्वी पर रहते हैं। हमें इसके सभी क्षेत्रों में सौन्दर्य देखने को मिलते हैं। हर व्यक्ति को इस सुन्दर प्रकृति का आनन्द मिल सकता है, इसलिए हर एक व्यक्ति का कर्तव्य है कि पृथ्वी के संतुलन को बनाये रखने में अपना योगदान करे । पर्यावरण और प्रकृति के विनाश रोकने के लिए हमें इस स्वच्छ रखना होगा ।

प्रकृति ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक अद्भुत उपहार है। प्रकृति ने मनुष्य को बहुत कुछ दिया है इसलिए हम प्रकृति से उतना ही लें जितनी हमें आवश्यकता है । गाँधी जी ने ठीक ही कहा है - **''प्रकृति के पास मनुष्य के लिए सब कुछ है किन्तु वह उसके लालच को पूरा नहीं कर सकती है।''**

जैव विविधता -

अन्तर्राराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस 22 मई को दुनिया भर में मनाया जाता है । जैव विविधता का संबंध पशुओं और पेड़ पौधों की प्रजातियों से है ।

ये अलग एवं अनूठी विचित्रता और विशेषता ही हमें जीवन जीने के योग्य बनाती है । **जैव विविधता से हमारा तात्पर्य विभिन्न प्रकार के जीव जन्तु और वनस्पति से है जो संसार में या किसी विशेष क्षेत्र में एक साथ रहते हैं । जैव विविधता को बनाये रखने के लिए हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी धरती के पर्यावरण को बनाये रखें । जैव विविधता का संबंध मुख्य रूप से अलग-अलग तरह के पेड़-पौधों और पशु पक्षियों का धरती पर एक साथ अपने अस्तित्व को बनाये रखने से है।**

यह बहुत जरूरी है कि उच्च स्तर की जैव विविधता को बनाये रखने के लिए हम अपने प्राकृतिक परिवेश को समुचित और अच्छे ढंग से बनाकर रखें तभी धरती पर मानव जीवन सुरक्षित हो सकेगा ।

भारत में संसार का केवल 2.4 प्रतिशत भू-भाग है जिसके 7 से 8 प्रतिशत भू-भाग पर भिन्न प्रजातियाँ पाई जाती हैं । प्रजातियों कि संवृद्धि के मामले में भारत स्तनधारियों में 7वें, पक्षियों में 9वें और सरीसृप में 5 वे स्थान पर हैं ।

विश्व के 11 प्रतिशत के मुकाबले भारत में 44 प्रतिशत भू-भाग पर फसलें बोई जाती है ।

भारत के 23.39 प्रतिशत भू-भाग पर पेड़ और जंगल फैले हुए हैं । दुनिया भर की 34 चिह्नित जगहों में से भारत में जैव विधिधता के तीन हॉटस्पॉट हैं जो वनस्पति और जीव जन्तुओं के मामले में बहुत समृद्ध है और जैव विविधता के संरक्षण का कार्य करता है ।

पर्यावरण के अहम मुद्दा में से आज जैव विविधता का संरक्षण एक अहम मुद्दा है । राज्यों, सरकारी एंजेसियों और संगठनों तथा व्यक्तिगत स्तर पर जैविक विविधता के संवर्धन और संरक्षण एक बड़ी चुनौती है। क्योंकि प्राकृतिक संसाधनों से लोगों की जरूरतों को भी पूरा करना होता है।

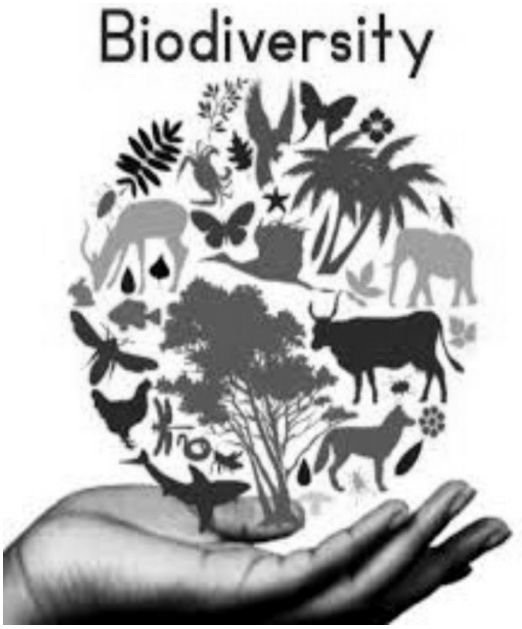

इसलिए चहुँओर जैव विविधता को बचाने का अभियान चलाया जा रहा है। 22 मई को दुनिया भर में अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

मनुष्य का जीवन प्रकृति की अनुपम देन है । हरे भरे पेड़- पौधे, विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु, मिट्टी, हवा पानी, पहाड़, नदियाँ, समुद्र, महासागर आदि सब प्रकृति की

देन है जो हमारे अस्तित्व एवं विकास के लिए आवश्यक है।

मरूस्थलों से लेकर महासागरों की गहराई तक विभिन्न आकार, प्रकार, रंग और रूपों में जीवन विद्यमान है, जिनमें काफी विविधता होती है, जिसे हम जैव विविधता के रूप में जानते हैं। पृथ्वी पर मौजूद जीवन की विविधता ही जैविक विविधता है । जो विकास के करोड़ों, अरबों, वर्षों के परिणाम के रूप में विभिन्न प्राकृतिक प्रक्रियाओं और मानवीय प्रभावों के फलस्वरूप ही प्राप्त हुई है ।

जैव विविधता का हमारे जीवन में काफी महत्व है । ऐसा पर्यावरण जो जैव-विविधता से समृद्ध है, टिकाऊ आर्थिक गतिविधियों के लिए, विकल्प के रूप में सबसे वृहद अवसर प्रदान करती है ।

जैव विविधता के ह्रास से प्रायः परितंत्र की उत्पादकता कम हो जाती है । जिसके कारण विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं को प्रदान करने संबंधी उनकी क्षमता भी कम हो जाती है । जिनका हम लगातार उपभोग करते हैं इससे परिस्थितिक तंत्र में अस्थिरता आती है और 'प्राकृतिक अपदाओं' जैसे बाढ़, सूखा, और तूफान एवं मानव जनित हवाओं जैसे - प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से लड़ने की क्षमता भी कम हो जाती है ।

वातावरण में तीव्र गति से होते नकारात्मक बदलाव के कारण बहुत से पेड़-पौधे और पशु-पक्षी विलुप्त हो चुके हैं । जिससे जैव विविधता को बनाये रखने के स्तर में भी काफी गिरावट आई है । इसीलिए यह जरुरी हो जाता है कि मानव के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए और अपने वातावरण की शुद्धता के लिये इन नकारात्मक बदलावों को काबू में किया जाये । जैव विविधता वनस्पति, जन्तुओं और अन्य जीवों का परिस्थितिक तंत्र में सही संतुलन है। ये सभी वातावरण की शुद्धता बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं । पशुओं और पौधों की प्रकृति में असमान्य तरीके से बंटवारा किया है । कहीं ज्यादा तो कहीं कम । प्रकृति द्वारा किये इस असामान्य वितरण के पीछे मूल कारण है हमारे ग्रह की जलवायु का अनियमित होना । धरती के अलग-अलग भागों का मौसम एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है और इसी वजह से हर जगह का जीवन एक-दूसरे से विविध है । वातावरण में भीषण बदलाव हुए जिसके कारण जैव-विविधता को बनाये रखने में गिरावट आयी है ।

यह बिगड़ते हालात हमारे मनुष्य जीवन के लिए किसी भयंकर खतरे का सूचक है । इसलिए भौगोलिक परिस्थियों पर ध्यान देना जरुरी है । ताकि जैव विविधता के लिये कोई संकट उत्पन्न न हो और जीव-जन्तुओं, पेड़-पौधों के जीवन पर भी किसी तरह का कोई खतरा नहीं आये।

जैव-विधिता से हमारी रोजमर्रा की जरूरतों यथा - रोटी, कपड़ा, मकान, ईंधन, औषधियों, आदि आवश्यकताओं की पूर्ति होती है । यह पारिस्थितिक संतुलन खाद्यान उत्पादन बढ़ाने में भी सहायक होती है ।

पर्यावरण संरक्षण, पारिस्थितिक स्थिरता, फसल उत्पादन में बढ़ोतरी के साथ-साथ तपन, बाढ़, सूखा, भूमि क्षरण आदि से बचाव के लिए जैव-विविधता संरक्षण समय की सबसे बड़ी जरुरत है । वर्तमान में मनुष्य का तकनीक की तरफ इतना ज्यादा झुकाव हो गया है कि वह इसके दुष्परिणाम को भी नहीं समझना चाहता ।

मानव के लिये यह सही समय है कि वह इस संकट को गंभीरता से ले और वातावरण को शुद्ध बनाने का संकल्प ले। साफ-सुथरा वातावरण ही समृद्ध जैव विविधता को बढ़ावा दे सकता है । हर एक वनस्पति तथा जीव को रहने योग्य बनाने में अलग-अलग उद्देश्य हैं ।

इसीलिए हमें अपने वातावरण की शुद्धता को उच्च स्तर तक पहुँचाना है तो जैव विविधता के संतुलन को बनाये रखने भी अपना ध्यान केन्द्रित करना होगा । जिससे मानव जाति को जीवनयापन में किसी तरह की कठिनाई का सामना न करना पड़े ।

मानव सभ्यता के विकास की धुरी जैव-विविधता मनुष्यतः के आवास, विखण्डन, पर्यावरण प्रदूषण, विदेशी मूल के वनस्पतियों के आक्रमण अतिशोषण व नये-जीवों का शिकार, वन-विनाश, अति चराई, बीमारी आदि के कारण खतरे में है । अतः पारिस्थितिक संतुलन, मनुष्य की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति एवं प्राकृतिक आपदाओं से मुक्ति के लिए जैव-विविधता का संरक्षण आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है । ***

Kalpana Chawla An Inspiring Indian Astronaut

Dr. Jagjeet Kaur Saluja, Professor (Physics)

Fifteen years ago, on the morning of February 1, the world lost 7 shining stars, and India - its first Indian-born woman in space. The tragic loss of the space shuttle Columbia that killed seven astronauts, including Kalpana Chawla, resonated far and wide.

The space shuttle was on its way home, intending to land at Kennedy Space Centre, when it exploded on entering the EarthÒs atmosphere. Born in Karnal, India, on July 1, 1961, Chawla who was the youngest of four children, went on to become the second Indian person to fly in space after astronaut Rakesh Sharma. With an aim to join NASA, Chawla moved to the United States in 1982. She went on to obtain a MasterÒs degree in Aerospace Engineering from the University of Texas at Arlington in 1984 and got her second MasterÒs degree in 1986. Not stopping there, she went on to earn a doctorate in aerospace engineering from the University of Colorado at Boulder. In 1988, she took another step closer to her dream, joining NASA, and in 1997 she went on her first space flight. Before that Chawla began her career at NASA in 1988 as a powered-lift computational fluid dynamics researcher at the Ames Research Center in alifornia.Her work concentrated on the simulation of complex air flows encountered by aircraft flying in ground-effect.She held commercial pilotÒs licenses for single- and multi-engine aeroplanes, seaplanes and gliders, and was also a certified flight instructor. In 1993, Chawla joined Overset Methods Inc. as vice president and a researcher in aerodynamics.

After becoming a naturalised US citizen in April 1991, Chawla applied for the NASA astronauts corps. She was selected in December 1994 and reported to the Johnson Space Center in Houston in 1995 as an astronaut candidate in Group 15.

In November 1996, Chawla was assigned as a mission specialist on STS-87 aboard the Space Shuttle Columbia, becoming the first woman of Indian descent to fly in space.ChawlaÒs second

spaceflight experience came in 2001 when she was selected for the crew of STS-107. The flight was dedicated to science and research, with approximately 80 experiments completed.Chawla lost her life during the STS-107 mission when the Space Shuttle Columbia disintegrated upon reentering the EarthÒs atmosphere. Over the course of her two missions, Chawla logged 30 days, 14 hours, and 54 minutes in space. Her determination and grit has been an inspiration to little girls, and strong women across the world.

In her honour, India renamed its first satellite of Met-Sat series, ÒMetSat-1Ò to ÒKalpana-1Ò. NASA honored the seven heroes with a special musical tribute by Tal Ramon, the son of Ilan Ramon - one of the astronauts on Columbia - at Kennedy Space Centre. An American commercial cargo spacecraft bound for the International Space Station has been named after fallen NASA astronaut Kalpana Chawla, the first India-born woman to enter space, for her key contributions to human spaceflight.

The events of Columbia have been officially investigated and reported on to understand what happened and how to prevent the tragedy from re-occurring in future spaceflights. Examples include the Columbia Accident Investigation Board (2003) NASAÒs Columbia Crew Survival Investigation Report (released in 2008).Several documentaries have been produced about the Columbia crew. Some examples include »Astronaut Diaries: Remembering the Columbia Shuttle Crew» (2005), and one that focused on Ilan Ramon, called »Space Shuttle Columbia: Mission of Hope» (2013). The University of Texas dedicated a Kalpana Chawla memorial at the Arlington College of Engineering in 2010. At the time of its opening, the display included a flight suit, photographs, information about ChawlaÒs life, and a flag that was flown over the Johnson Space Center during a memorial for the Columbia astronauts.

***

वर्तमान परिदृश्य में शहरी नियोजन की आवश्यकता

राहुल शर्मा, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (भूगोल)

हाल ही मे केरल में आई निवाशकारी बाढ़ और कुछ समय पहले दक्षिणी मुम्बई के सिंधिया हाउस में लगी भीषण आग ने नीति निर्माताओं को एक समन्वित शहरी नियोजन की आवश्यकता पर फिर से सोचने के लिये मजबूर किया है । बात चाहे सेन्टर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट द्वारा 14 शहरों के प्रदूषण संबंधित किये गए सर्वेक्षण की हो या फिर विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं के कारण शहरों के बुरी तरह से प्रभावित होने की, इनके ठोस समाधान के लिए एक शहरी नियोजन की जरूरत काफी समय से महसूस की जा रही है । इसी को देखते हुए हम इस लेख में शहरी नियोजन के कमजोर पक्षों पर प्रकाश डालने के साथ-साथ उसके बेहतर प्रबंधन से संबंधित तथ्यों पर भी नजर डालेंगे ।

शहरी नियोजन क्या है और भारत को एक व्यापक एवं एकीकृत शहरी नियोजन की आवश्यकता क्यों हैं?

शहरी नियोजन एक प्रक्रिया है जिसके तहत स्थानीय स्तर पर नियोजन सीधे हस्तक्षेप द्वारा शहर के विकास से संबंधित विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित किया जाता है । इसकी सहायता से निवासियों की मोबिलिटी, गुणवत्तापूर्ण जीवन एवं धारणीयता जैसे उद्देश्यों को पूरा किया जाता है। शहरी नियोजन आज के इस बढ़ते शहरीकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू हो गया है ।

हम जानते हैं कि इस समय भारत भी तीव्र नगरीकरण की प्रक्रिया से गुजर रहा है । यू.एन. अर्बनाइजेसन प्रोस्पेक्टस, 2018 रिपोर्ट के अनुसार भारत की जनसंख्या का करीब 34 फीसदी हिस्सा शहरी क्षेत्रों में निवास करता है । इसमें 2011 की जनगणना की तुलना में 3 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गयी है ।

मेगासाइज़ अर्बन क्लस्ट की संख्या वर्षों से स्थिर बनी हुई है जबकि स्मॉलर अर्बन क्लस्टर की संख्या तेजी से बढ़ रही है । आपको बताते चलें कि मेगासाइज उन्हें कहा जाता है जिनकी जनसंख्या 50 लाख से ऊपर होती है। नगरीकरण में हो रही इस वृद्धि के कारण शहरों की माँग-आपूर्ति अंतर में भी बढ़ोतरी हो रही है । यह अंतर आवास के अलावा जल, स्वच्छता एवं सफाई, परिवहन और संचार सेवाओं में भी दिखायी देता है ।

गाँवों और शहरों के बीच सुविधाओं के लेकर जो

अंतर देखने में आता है उसके कारण गाँवों से शहरों की ओर प्रवसन होता है । ऐसे में जहाँ एक तरफ सवाल है कि क्या ये शहरी क्षेत्र नए निवासियों को आत्मसात करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं? तो वहीं दूसरी तरफ हम यह भी देखते हैं कि भारत प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों वाला देश है ।

भारत के ग्रामीण तथा शहरी दोनों ही इलाके इन आपदओं के प्रति सुभेद्यता रखते हैं । लेकिन भारतीय शहर ज्यादा जनसंख्या घनत्व के कारण इन आपदाओं के प्रति अधिक सुभेद्यता रखते हैं । हर आपदा तेजी से हो रहे शहरीकरण की प्रक्रिया में हुई गलतियों को उजागर कर देती है । इन समस्याओं को देखते हुए देश के शहरों के लिए एक ठोस शहरी नियोजन की आवश्यकता है जिसमें वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण पर आधारित मास्टर प्लान की व्यवस्था की गयी हो ।

खराब शहरी नियोजन किस प्रकार से शहर में आपदा एवं विभिन्न गंभीर परिस्थितियों को जन्म देता है ?

जनसंख्या का बढ़ता दबाव शहरों के विकासात्मक कार्यों पर भी दबाव डालता है । मानवीय जरूरतों को पूरा करने के लिए किए गए कार्य बुनियादी परिस्थितिकीय तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं जिनकी क्षतिपूर्ति करना एक समय सीमा के बाद संभव नहीं हो पाता है । साथ ही शहरी नियोजन में व्याप्त कमियाँ इन आपदाओं को और गंभीर बना देती हैं ।

शहरी नियोजन, मास्टर प्लान या डेवलपमेंट प्लान पर आधारित होते हैं। ये प्लान भूमि उपयोग पर भी आधरित होते हैं यानी विभिन्न मानवीय गतिविधियों के आधार पर भूमि को कई वर्गों मसलन रेसिडेंशियल, कामर्शियल, ट्रांसपोर्टेशन, पब्लिक और गवर्मेंट ऑफिस इत्यादि में बाँटा जाता है । इन योजनाओं को संबंधित राज्य विधायिका से मंजूरी प्राप्त होती है जिन्हें लगभग 20.25 वर्षों की अवधि में पूरा करना होता है, लेकिन ये मास्टर प्लान फंड की कमी के कारण ठीक ढंग से लागू नहीं हो पाते ।

देश की वर्तमान शहरी नियोजन व्यवस्था के साथ महत्त्वपूर्ण चिन्ता यह है कि यह भूमि उपयोग के पुराने तरीकों पर आधारित है। हमें इससे आगे बढ़ते हुए ऐसी योजना और प्रक्रिया अपनानी होगी जो लोगों की जरूरतों के मुताबिक हो ।

आपको बता दें कि शहरी नियोजन और स्थानीय शासन के बीच आपसी तालमेल का न होना भी हमारी नियोजन प्रक्रिया की एक बेसिक कमी है । हालाँकि 74 वें संवैधानिक संशोधन ने शहरी और स्थानीय सरकारों को सशक्त बनाने की बात कही गयी थी ताकि वे सेल्फ-गवर्मेंट संस्थान के रूप में कार्य कर सकें । लेकिन, शहरी नियोजन के संबंध में उनकी प्रभावशीलता अभी भी सीमित है । 1985 में केन्द्र सरकार मॉडल क्षेत्रीय और शहर नियोजन एवं विकास कानून लेकर आई थी पर, ज्यादातर राज्य अपने नियोजन कानूनों में इसके प्रावधानों को शामिल

करने में नाकाम रहे हैं ।

दूसरी ओर, भारत में मोटर-वहानों की संख्या अपनी विस्फोटक स्थिति में है । सड़क परिवहन, ग्रीन हाऊस गैसों में बढ़ोतरी का बड़ा कारण बना है । दरअसल, शहरी आवागमन द्वारा पार्टिकुलेट मेटर और नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसे टॉक्सिक उत्सर्जन में वृद्धि हुई है । ऐसे में शहरी नियोजन का कुप्रबंधन शहरी ताप द्वीप एवं प्रदूषण की मुख्य वजहों में से एक बनता जा रहा है ।

डब्लू.एच.ओ. और यू-एन-हेबिटेट के एक अध्ययन से पता चला है कि शहरों की इमारतों और घरों के बल्वों, एयरकंडीशनर, रेफ्रिजरेटर और वाटर कूलर इत्यादि के इस्तेमाल से शहरी इलाकों के तापमान में 2-3 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो जाती है । स्वास्थ संबंधी मुद्दों पर गौर करें तो स्लम पुनर्वास प्राधिकरण द्वारा बनाई गई बसावटें और बहुत छोटे घर जहाँ दिन की रोशनी और हवा संचार सुचारू रूप से नहीं होता, वहाँ टी.बी. जैसी बीमारियों का फैलाव देखने को मिलता है । यह तथ्य साबित करता है कि टी. बी. जैसी बीमारियों की वृद्धि एवं कमी में हाऊसिंग डिजाइनिंग महत्तवपूर्ण भूमिका निभाती है ।

प्रदूषण के कारकों के अलावा भवनों में आग लगना एवं विभिन्न शहरी अवसंरचनाओं और बिल्डिंग का गिरना भी शहरी नियोजन के कुप्रबंधन को दर्शाता है । बढ़ती जनसंख्या की आधारभूत जरूरतों को पूरा करने एक क्रम में भवन निर्माण संबंधी विभिन्न मानकों और नीतियों का अनुपालन ही तरीके से नहीं हो रहा है । आमतौर पर भवनों के डिजायन में अग्नि सुरक्षा संबघी प्रावधान ही नदारद रहते हैं, फायर डिपार्टमेंट के पास भी आग के खतरों का आकलन करने के लिये तकनीकी ज्ञान का अभाव होता है । संबंधित विभाग शायद ही अग्मि शमन अनुभनव के आधार पर नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट जारी करते हैं ।

अब अगर हम आपदाओं पर नजर दौड़ये तो कैग ने 2005 की चेन्नाई बाढ़ का मानव निर्मित आपदा घोषित किया था । कैग की रिर्पोट के अनुसार, चेम्बरकम झील से अंधाधुंध पानी छोड़े जाने के कारण अडयार नदी पर जल का दवाब बढ़ा जिससे शहर एवं उपनगरों में बाढ़ आई। नदियों का तलछटीकरण नहीं होना भी इसका प्रमुख वजहों में से एक था ।

इसी प्रकार 2014 में जम्मू-कश्मीर में बाढ़ का कारण भी झेलम नदी के किनारे शहर का अनियोजित विकास था जिसने आपदा के स्तर में बढ़ोतरी ला दी थी । जम्मू-कश्मीर का आपदा प्रबंधन तंत्र भी अल्पविकसित अवस्था में है एवं इसके पास कोई बाढ़ पूर्वानुमान तंत्र भी नहीं है । एक रिपोर्ट के अनुसार मुम्बई शहर की मीठी नदी जो कचरे के कारण अवरूद्ध हो गयी है उसने शहर के विकास में अपनी 60 प्रतिशत जलग्रहण क्षेत्र को खो दिया है । जबकि हम जानते हैं कि एक साफ स्वच्छ नदी बाढ़ के पानी को तेजी से निकालने का कार्य करती है ।

शहरी नियोजन के बेहतर प्रबंधन हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण सरकारी नीतियाँ और अंतर्राष्ट्रीय प्रयास इस प्रकार है - भारत के पहले नेशनल कमीशन ऑन अर्बनाइजेनश ने 1988 में शहरी नीति पर रिपोर्ट सौंपी थी। उसके बाद 1992 में 73 वाँ 74 वाँ संवैधानिक संशोधन लाया गया जिसे पंचायती राज एक्ट एवं नगरपालिका एक्ट के नाम से जाना जाता है । इसका उद्देश्य आर्थिक एवं स्थानीय नियोजन द्वारा गाँव एवं शहरों का विकास करना था। चूँकि भूमि राज्य का विषय है इसलिए सिर्फ कुछ राज्यों ने ही इसे अपनाया इससे इसके क्रियान्वयन में धीमापन आ गया ।

इसके बाद भारत सरकार ने जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी नवीनीकरण मिशन, 2005 अपनाया जो अपनी तरह का पहला कदम था ।

2015 में भारत सरकार ने 'स्मार्ट सिटी मिशन' शुरू किया जिसका उद्देश्य 5 वर्षों के अंदर 100 शहरों की स्थिति में सुधार लाा था । 2015 में ही, आधुनिक सुविधाओं के साथ अधिक से अधिक शहरों के विकास के लिए ....योजना लायी गयी ।

UN HABITAT FOR A BETTER URBAN FUTURE
World Health Organization

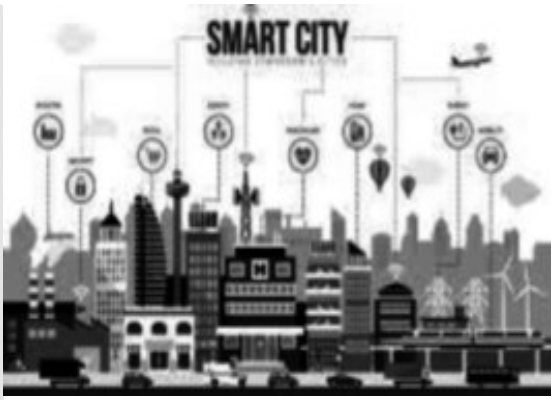

इन सबके अलावा हाल ही में केन्द्र सरकार पूरे देश के लिए एक राष्ट्रीय शहरी नीति लाना चाह रही है ।

चूँकि शहर विकास राज्य का विषय है इसलिए अभी तक ऐसी कोई व्यापक राष्ट्रीय नीति नहीं बन पाई है जो शहरीकरण से संबंधित योजनाओं को बताए। बहरहाल, देश की यह प्रथम नेशनल अर्बन पॉलिसी 10 मुख्य क्षेत्रों पर केन्द्रित है, जिनमें से प्रमुख हैं - सहकारी संघवाद, समावेशी वृद्धि, धारणीयता, स्थानीय संस्थाओं का सशक्तिकरण, शहरी अवसंरचना वित्त प्रणाली, सशक्त शहरी सूचना प्रणाली आदि ।

आपको बता दें कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी यू.एन. हैबिटेट संयुक्त राष्ट्र का एक कार्यक्रम चल रहा है जो वैश्विक स्तर पर एक बेहतर शहरी भविष्य की दिशा में काम कर रहा है । इसका लक्ष्य सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ मानव बस्तियों का विकास और सभी के लिए समुचित आश्रय उपलब्ध करवाना है ।

गौरतलब है कि 2016 में हैबिटेट 3 का आयोजन किया गया था, जो आवास और टिकाऊ शहरी विकास पर हरेक दो दशकों पर होने वाला संयुक्त राष्ट्र का सम्मेलन है । हेबिटेट 3 में जारी न्यू अर्बन एजेंडे में बताया गया है कि 2016 से 2030 के बीच धारणीय शहरी विकास, को प्राप्त करने के लिए देशों को क्या किये जाने की आवश्यकता है । भारत भी इसी एजेंडे को आधार बना कर अपने शहरी नियोजन को आकार दे रहा है । वहीं हम पाते हैं कि यू.एन. के सतत् विकास लक्ष्य-11 के अनुसार शहरों एवं मानव बसावटों को समावेशी, सुरक्षित लोचपूर्ण एवं धारणीय भी होना चाहिए ।

शहरी नियोजन के बेहतर प्रबंधन के लिए और क्या किये जाने की जरूरत है ?

शहरी नियोजन के बेहतर प्रबंधन के लिए सबसे पहले प्रभावी शहरी नियोजन में नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित किये जाने की आवश्यकता है तभी विश्व स्तरीय शहरी भारत का निर्माण हो सकेगा । संविधान की 12वीं अनुसूची के तहत सूचीबद्ध कार्यों में शहरी नियोजन, भूमि उपयोग का विनियमन और आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए योजना का निर्माण करना शामिल है । इसलिए राज्यों से उम्मीद की जाती है कि वे इन कार्यों को नगर-निगम को सौंप दें ।

74 वें संविधान संशोधन के अनुसार मेट्रोपोलिटन सिटी में मेट्रोपोलिटन प्लानिंग कमिटी के गठन की व्यवस्था की गयी है । जो स्थानीय निकायों द्वारा तैयार योजनाओं को मेट्रोपोलिटन क्षेत्र में एकीकृत करेंगे । आपको बता दें कि मेट्रोपोलिटन सिटी उन शहरों को कहा जाता है जिनकी जनसंख्या दस लाख से ऊपर होती है ।

3 लाख से ऊपर वाले प्रत्येक शहर के लिये वार्ड कमिटी के गठन की बात की गयी है जो नगरपालिका संबंधी कार्यों को देखेगा । इन सभी संस्थानों को नियोजन प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनाना आवश्यक है । वहीं हम दूसरी तरफ देखते हैं कि शहरी स्थानीय निकायों के ऊपर विकेन्द्रीकरण के नाम पर बहुत अधिक जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं ।

स्थानीय निकायों के पास निरीक्षण कार्यों के लिए श्रम शक्ति की भी कमी रहती है । इसलिए पेपर वर्क में कमी लाते हुए सिस्टम को ऑनलाइन बनाने पर ध्यान देने की जरूरत है । वर्तमान की अप्रूवल संबंधी प्रक्रियाओं का आधुनिकीकरण भी जरूरी है ।

शहरीकरण को देश के आर्थिक विकास का अभिन्न अंग मानते हुए भारत सरकार के थिंक टैंक नीति आयोग ने कुशल एवं टिकाऊ सार्वजनिक परिवहन को नीति में शामिल करने की बात कही है । नीति आयोग ने 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहरों के लिये एक एकीकृत

महानगर परिवहन प्राधिकरण के गठन का सुझाव भी दिया है । ये समन्वित सार्वजनिक परिवहन योजना को तैयार करेंगे ।

हाल ही की एक रिपोर्ट में यह बात सामने आयी है कि ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन एवं ऊर्जा उपभोग के मामले में मेट्रोपोलिटन सिटीज ने मेगासिटीज के बनिस्पत बेहतर प्रदर्शन किये हैं ।इसका यहाँ जनसंख्या, यात्रा अनुपात एवं वाहनों की संख्या का निम्न होना बताया गया है । कोलकाता एवं मुम्बई दोनों ने भूमि उपयोग के साथ सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को अच्छे तरीके से एकीकृत किया है । 2004 में नॉन-मोटराइज्ड ट्रांसपोर्ट अपनाने वाला मुम्बई पहला शहर बन चुका है । इसका उद्देश्य ट्रैक और ग्रीन-वे का नेटवर्क तैयार कर वॉकिंग एवं साइक्लिनंग करने वालों की संख्या में वृद्धि करना था ।

शहरी ताप वृद्धि संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिये दक्षिण भारत में सड़कों को उत्तर-दक्षिण दिशा में बनाने पर जोर दिया जा रहा है ताकि सीधी पड़ने वाली सूर्य की रोशनी को टाला जा सके । शहरी नियोजन में सड़कों के विभिन्न हिस्सों, छतों के ऊपरी हिस्से को सफेद पेंट करने जैसे कार्यों को शामिल किया गया है जिससे सूर्य विकिरण को अधिक से अधिक परावर्तित किया जा सके ।

अगर सड़कें सँकरी हैं तो भवनों की ऊँचाई को सड़कों की चौड़ाई के बराबर करना भी बताया गया है, इससे ताप नियंत्रण में मदद मिलती है । निर्माणकारी गतिविधियों के समय हर 7 वर्ग कि.मी. पर जल निकास और खुले स्थान के लिए 1 वर्ग किमी का क्षेत्र छोड़ना भी इसमें शामिल है । फुटपाथों का निर्माण कुछ इस तरह से करने की बात हुई है कि बारिश के मौसम में ये जल अवशोषण में भी सहायक भूमिका निभाएँ ।

प्लानिंग के समय आर्थिक असमानता के मुद्दे को भी ध्यान में रखना आवश्यक है ताकि समाज का कोई भी वर्ग हाशिये पर न चला जाए । क्योंकि, आपदा के समय इन वर्गों के प्रभावित होने की सबसे ज्यादा संभावना होती है । आवासीय सुविधाओं में गरीबों के रहने के लिए ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जहाँ आधारभूत सुविधाओं की कमी न हो । इंडोनेशिया में इसी प्रकार का एक सोशल हाउसिंग प्रोजक्ट लाया गया है जो बेहतर वायु संचार और गुणवत्ता पूर्ण जीवन का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है ।

भारत की जियो-टेक्टॉनिक्स स्थिति में भी बदलाव आ रहा है । ऐसी स्थिती में दिल्ली में अगर एक मध्यम तीव्रता का भूंकप भी आता है तो आपदा की भयंकरता का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। राजधानी की नव निर्मित इमारतों में शायद ही नेशनल बिल्डिंग्स कोड, भारत का सुभेद्यता एटलस 2006 और भवन उप-नियमों का पालन किया गया है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जहाँ एक तरफ शहरी बुनियादी ढॉचे के निर्माण के समय भवन मानकों को भूकंप प्रतिरोध संबंधित सुरक्षा मानकों का पालन करना चाहिए वहीं दूसरी तरफ बाढ़ आपदा प्रबंधन के समय हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि भवनों और सड़कों के निर्माण के लिये शहरं में स्थित परम्परागत जल निकासी तंत्रों तथा विभिन्न जलनिकायों जैसे झील, तालाब और आर्द्रभूमियों का अतिक्रमण न हो । नदी तल और बाढ़ मैदानों के अतिक्रमण को रोकने के लिये नोटिफिकेशन को प्रभावी बनाये जाने की आवश्यकता है ।

***

बचपन बचाओ आन्दोलन

राजकिशोर पटेल
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (इतिहास)

बचपन बचाओ आंदोलन एक ऐसा आंदोलन है जो बच्चों के हितों और अधिकारों के लिये कार्य करता है । इस आंदोलन की शुरूआत सन् 1980 में कैलाश सत्यार्थी ने की थी । उन्होंने बच्चों को बंधुआ मजदूरी, गुलामी और शोषण से बचना तथा उनके जीवन को बेहतर करने हेतु इस आंदोलन की शुरूआत की थी । बचपन से ही वे संवेदनशील और जागरुक थे और सदैव दूसरों के बारे में सोचा करते थे । उनके स्कूल का पहला दिन ही कुछ अलग था, जब वे स्कूल गए तो स्कूल के बाहर एक बच्चा अपने पिता के साथ जूते पॉलिश करने बैठा था । जिसे देखा कर कैलाश सत्यार्थी को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने अपने शिक्षक से पहला सवाल यह पूछा कि एक बच्चा बाहर बैठा है, वह हमारे साथ कक्षा में क्यों नहीं? मास्टर जी का उत्तर था, विपन्नता के कारण वह अध्ययन न कर अपने पिता के कार्य में सहयोग करने को विवश है। सत्यार्थी जी ने जिससे भी पूछा, लगभग सभी का यही उत्तर था। लेकिन कैलाश जी को यह उत्तर संतुष्ट नहीं कर पाया, और तभी से उनके मन में बच्चों के बेहतर जीवन के लिये कुछ करने की भावना जागृत हुई । गाँधी जी से प्रभावित कैलाश जी ने अपने कुछ साथियों द्वारा सन् 1980 में 'संघर्ष जारी रहेगा' नामक पात्रिका प्रकाशित की और यही से बचपन बचाओ आंदोलन की शुरूआत हुई ।

कैलाश सत्यार्थी ने अपने बचपन बचाओ आंदोलन को सम्पूर्ण भारत में चलाया और इसका सकरात्मक प्रभाव भी दिखाई दिया, परन्तु सत्यार्थी ने इस आंदोलन को भारत तक ही सीमित नहीं किया बल्कि इसे विश्वव्यापी बनाया। उन्होने बहुत से शिविर यूरोपीय और अमेरिकन देशों में लगाये जर्मनी में बाल श्रमिकों के विरुद्ध एक कार्यक्रम का आयोजन किया और सन् 1982 में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन द्वारा International Program on the Elimination of Child Labour का निर्माण हुआ । उसके बाद United Nations childrens Fund (UNICEF) और विश्व बैंक ने भी इसमें सहयोग दिया।

सन् 1923 में बचपन बचाओं आंदोलन द्वारा भारत में पहली बार बाल-श्रम के खिलाफ पदयात्रा की गई। 5 साल बाद सन् 1998 में 80,000 कि.मी. की विश्व यात्रा बाल श्रम के विरोध और बचपन बचाओं के समर्थन में 103 देशों में रैली निकाली गयी, जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों को बच्चों के अधिकारों के प्रति जागरूक करना था । अंतर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन की सन् 2013 की रिपोर्ट के अनुसार 168 मिलियन बच्चें बाल-श्रम से जुड़े हुए थे । इस दिशा में आगे बढ़ते हुए 2017 में भारत यात्रा के तहत 36

दिनों में 11,000 कि.मी. की दूरी तय करने वाली एक राष्ट्रव्यापी यात्रा की गई जो Make India Safe again for childeren का स्पष्ट आह्वान था । बाल यौन शोषण दुनिया भर में यह एक आधुनिक बढ़ती हुई समस्या है और भारत में यह एक आधुनिक महामारी बन गया है । हर दो मिनट में एक बच्चा बेचा जाता है और हर आधे घण्टे में यौन शोषण किया जाता है । देश में आए दिन कोई न कोई यौन शोषण संबंधित घटनाएं घटित होते रहती है । लोगों के जनवादी आंदोलन से बच्चों के खिलाफ हिंसा की समस्या तो कम हुई है परन्तु बाल विवाह और शोषण आज भी प्रमुख समस्या बनी हुई है । Child Rights and You report 2016 के मुताबिक बच्चों के विरूद्ध अपराध जो 2015 में 94,172 थे, 2016 में बढ़कर 1,06,958 हो गये । मात्र 5 राज्यों (उ.प्र., म.प्र. महाराष्ट्र, देल्ली, पं. बंगाल) में बच्चों के खिलाफ 50 प्रतिशत से अधिक अपराध दर्ज हुए है । उत्तर प्रदेश में बच्चों के विरूद्ध सर्वाधिक अपराध दर्ज हुए है, जिसमें किडनैपिंग और रेप के मामले सर्वाधिक हैं ।

बचपन बचाओ आंदोलन के प्रयास

1. **सहायता केन्द्र** - इसका मुख्य कार्य पीड़ितों की सुरक्षा और उनके पुर्नवास की व्यवस्था करना तथा नियम बना कर उन्हें कानूनी सहायता प्रदान करना है । पीड़ितों के पुर्नवास हेतु बचपन बचाओ संस्था ने 'मुक्ति आश्रम' और 'बाल-आश्रम' का भी निर्माण कराया है । 2015-16 की एक रिपोर्ट के अनुसार 2774 बच्चों की पहचान तस्करी व जबरन काम में लगाये जाने में की गयी है, जिसमें से 1060 बच्चों को विभिन्न उद्योगों से छुड़ाया गया है। जिसमें 950 बालक, 110 बालिका हैं । इन बच्चों को असम, दिल्ली, हरियाणा, कर्नाटक, पंजाब, उत्तर प्रदेश के उद्योगों से छुड़ाया गया है ।

मुक्ति आश्रम - इसे 1991 में दिल्ली से प्राम्भ किया गया था, छुड़ाए गए बालश्रमिकों की सुरक्षा व सहायता हेतु इसकी स्थापना की गई । जब तक इन बच्चों के परिवार वाले नहीं मिल जाते थे, इन बच्चों को इसी आश्रम में रखा जाता था । इस आश्रम में बच्चों के रहने, खाने, चिकित्सा की पूर्ण व्यवस्था के साथ उन्हें भावनात्मक समर्थन दिया जाता था। कानूनी औपचारिकताओं की पूर्ति तक बच्चे यही रहते हैं । वर्ष 2015-16 में दिल्ली उसके आस-पास के इलाकों से 438 बच्चे छुड़ाए गए, जिनमें से 301 बच्चों को उनके परिवारजनों को सुपुर्द कर दिया गया और शेष बच्चों को पुर्नवास की व्यवस्था आश्रम में ही कई गई।

बाल आश्रम - इसकी स्थापना 1998 में की गई तथा इसका मूल उद्देश्य पुर्नवास की व्यवस्था करना और औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा द्वारा बच्चों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ना है । इस आश्रम में बच्चों को उनके अधिकारों, समाजिक न्याय, लैंगिक समानता और भारत की समृद्ध विरासत के बारे में बताया जाता है । इस आश्रम में 2015-2016 तक 2200 बाल मजदूरों के पुर्नवास की व्यवस्था की जा चुकी है ।

2. **बाल मित्र ग्राम** - यह एक आदर्श प्रयास है जहाँ बच्चों के अनुकूल ग्राम बनाया जाता है, यहाँ बच्चों को उनके अधिकारों के बारे में जागरुक किया जाता है, क्योंकि बालश्रम और यौन शोषण का एक कारण बच्चों का अपने

अधिकारों को ना जानना भी है । 'बाल मित्र ग्राम' द्वारा बच्चों में नेतृत्व कौशल का विकास करना, शोषण के प्रति लोगों की सोच में बदलवा लाना तथा बच्चों के विरूद्ध हो रहे अपराधों को कम करना है । बाल मित्र ग्रामों में बाल पंचायतों का भी निर्माण किया गया है जिसके सदस्य केवल बच्चे होते हैं। यह बाल पंचायत बचपन बचाओं आंदोलन का मुख्य अंग है और यह एक जनतांत्रिक संस्था है । बचपन बचाओं आंदोलन द्वारा 2015-16 तक 116 गाँवों में बाल पंचायतों का निर्माण कराया गया है, यह संस्था लैंगिग समानता को बढ़ावा देती है और बच्चे की सुरक्षा, ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं की शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देने का कार्य करती है ।

3. विभिन्न अभियान - कैलाश सत्यार्थी जी ने बचपन बचाओ, आंदोलन के माध्यम से भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में कई अभियान चलाए ताकि बच्चों को बाल-श्रम और यौन-शोषण जैसे गंभीर अपराध से बचाया जा सके । विभिन्न स्कूलों में अभियान चलाए गए, ताकि बच्चों को जागरूक किया जा सके, दिल्ली पुलिस के साथ मिलकर (Project Nirbheek) चलाया, (Big FM Radio) के साथ मिलकर लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया । बचपन बचाओं संस्था ऐसी बहुत सी देशी विदेशी संस्थाओं के साथ मिलकर बचपन बचाने का प्रयास कर रही है और अपने प्रयास में कामयाब भी हो रही है । वेबसाइट और सोशल मीडिया के माध्यम से भी इसका प्रचार-प्रसार किया जा रहा है । इस, दिशा में सन् 1996 में (Anti firecracker Campaign) चलाया गया, बहुत सारी यात्राएं की गयी जैसे सन् 1995 की दिल्ली से कन्याकुमारी की यात्रा, सन् 1998 की कलत्तता से काठमाण्डू यात्रा, विश्व यात्रा इत्यादि ।

कै लाश जी के इस आंदोलन का प्रभाव सरकार पर भी पड़ा और 1979 में सरकार ने बाल श्रम की समस्या के अध्ययन और उससे निपटने के उपाय सुझाने हेतु 'गुरुपाद स्वामी समिति' नानक प्रथम समिति का गठन किया। इस समिति ने विस्तार से समस्या का अध्ययन-परिक्षण किया और पाया कि जब तक गरीबी बनी रहेगी, तब तक बाल-श्रम को पूरी तरह मिटाना मुश्किल है और इसीलिए कानूनी उपाय से उसे समूल मिटाने का प्रयास व्यवहारिक नहीं होगा, अतः लोगों में जागरूकता लाना और कार्यकारी परिस्थितियों में सुधार लाना एक अच्छा विकल्प हो सकता है । समिति की सिफारिशों के आधार पर 1986 में बाल श्रम (निषेध एवं विनियमन) अधिनियम लागू किया गया । अधिनियिम कुछ निर्दिष्ट खतरनाक व्यवसायों और प्रक्रियाओं में बच्चों के रोजगार पर प्रतिबंध लगाता है और अन्य स्थलों पर कामकाजी परिस्थितियों को नियंत्रित करता है । अधिनियम के तहत बाल-श्रम तकनीकी सलाहकार समिति बनी जो खतरनाक व्यवसायों और प्रक्रियाओं को सूचीबद्ध करने का काम करती है और उनके पुर्नवास की व्यवस्था करती है ।

संवैधानिक प्रावधान - अनुच्छेद 23- मानव तश्करी, बेगार और सभी प्रकार के बाल-श्रम को निषेध करता है, यह अधिकार नागरिक और गैर-नागरिक दोनों के लिए उपलब्ध है । मानव तश्करी से तात्पर्य पुरुष, महिला, बच्चों के खरीद फरोख्त से, वेश्यावृत्ति व दास-प्रथा से संबंधित है । इन कृत्यों को रोकने के लिए भारत सरकार द्वारा अनैतिक व्यापार अधिनियम 1956, बंधुआ मजदूरी

अधिनियम 1976 और समान पारिश्रमिक अधिनियम 1976 बनाए गए हैं ।

अनुच्छेद 24 - कारखानो में बाल-श्रम निषेध- 14 साल से कम उम्र के किसी भी बच्चे को किसी फैक्ट्री या खदान में या किसी अन्य खतरनाक रोजगार में नियोजित नहीं किया जाएगा । यह निषेध संयुक्त राष्ट्र के सिद्धान्तों के अनुसार है । बाल-श्रम (निषेध एवं विनियमन) अधिनियम का उल्लंधन करने वाले को 6 माह से 2 साल तक का कारावास और 20,000 से 50,000 रुपये तक का जुर्माना या कैद अथवा दोनों हो सकता है ।

कैलाश सत्यार्थी जी ने बचपन बचाओ आंदोलन द्वारा बहुत से बच्चों को एक नया जीवन दिया, उनके इस अथक और बहुमूल्य प्रयास के कारण ही उन्हें विभिन्न राष्ट्रों द्वारा सम्मानों से भी नवाजा गया है । 1994 में जर्मनी द्वारा "Achener Interantional Peace Award" से नवाजा गया, 1995 में "US" द्वारा "robert F. Kennedy Human Rights Award" दिया गया , 1998 में नीदर लैंड द्वारा "Golden Flag Award" 2007 "Gold Medal of the Italian Senat" जैसे ढेरों अवार्ड मिले और वर्ष 2014 में उन्हें अपने इस कार्य के लिए **नोबेल शांति पुरुस्कार** से भी नवाजा गया । इन्हें लोकतंत्र का रक्षक भी कहा जाता है ।

बाल श्रम तथा बच्चों की यौन प्रतड़ना संबधी समस्या आज भी देश के समक्ष एक चुनौती बन कर खड़ी है । सरकार इस समस्या को सुलझाने के लिये विभिन्न सकारात्मक कदम उठा रही है, परन्तु यह एक सामाजिक - आर्थिक समस्या है और विकट रूप से गरीबी और निरक्षरता से जुड़ी है, इसलिए समाज के सभी वर्गों द्वारा प्रयास करने की जरूरत है । 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 10 से 13 मिलियन बाल श्रमिक है, जिनकी उम्र 5 से 14 वर्ष है तथा 33 मिलियन काम करने वाले बच्चे हैं जिनकी उम 5 से 18 वर्ष के मध्य है यानी बच्चों की कुल जनसंख्या का लगभग आधा भाग । इस तरह के काम करने वाले बच्चों का अनुपात सर्वाधिक गुजरात, तमिलनाडू , राजस्थान और केरल में हैं । नेशनल क्राईम रिकार्ड ब्यूरो 2016 की रिर्पोट के अनुसार भारत से लगभग 150 बच्चे रोजाना गायब हो रहे हैं जिसमें किडनैपिंग की घटना सर्वाधिक हुई है । 2006 से 2016 तक में बच्चों के विरूद्ध अपराध 5 गुना बढ़ा है।

कैलाश सत्यार्थी ने इस समस्या के समाधान हेतु कहा कि नेताओं को अधिक से अधिक स्कूलों, कॉलेजों का दौरा करना चाहिए और वहाँ की समस्याओ, विद्यार्थियों की परेशानियों को जानना और स्कूलों को सुरक्षित क्षेत्र बनाना चाहिए। मानव तस्करी से संबंधित बने कानूनों की पूर्ण जानकारी तथा जागरूकता कार्यक्रम करने चाहिए तथा लोगों में नैतिक भावना का विकास करना चाहिए तभी यह समस्या पूर्ण रूप समाप्त हो सकती है ।

***

कथाकार फणीश्वरनाथ 'रेणु'

शीतल सेन - एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी)

फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के 'अररिया' जिले में फॉरबिसगंज के पास 'औराही हिंगना' गाँव में हुआ था । उस समय यह पूर्णिया जिले में था । उनकी शिक्षा भारत और नेपाल में हुई थी । इन्टरमीडिएट काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1942 में की इसके बाद वे स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े । सन् 1952-53 के समय वे भीषण रूप से रोगग्रस्त रहे थे, लेखन की ओर उनका झुकाव हुआ । इस काल की झलक उनकी कहानी 'तब एकला चलो रे' में मिलती है । उन्होंने हिन्दी में आंचलिक कथा की नींव रखी ।

रेणु जी के लेखन में अभावग्रस्त जनता की पीड़ा का वर्णन मिलता है। रेणु जी एक आंचलिक कथाकार हैं उन्होंने समकालीन परिस्थितियों को अपने लेखन के माध्यम से जनता तक पहुँचाया। उनकी भाषा मुहावरेदार एवं भावनात्मक है । रेणु जी कहानियों में गाँव के जीवन का जैसा चित्रण करते हैं उसे पढ़ते हुए लगता है उन्होंने अपनी कहानियों में सम्पूर्ण गाँव को समेट लिया है । ग्राम्य जीवन के लोक गीतों का उन्होंने अपने कथा-साहित्य में सर्जनात्मक प्रयोग किया है ।

रेणु को जितनी ख्याति हिन्दी साहित्य में अपने उपन्यास 'मैला आँचल' से मिली उसकी मिसाल मिलना दुर्लभ है ।

रेणु जी की सहित्यिक कृतियाँ

उपन्यास - मैला आँचल, परती परिकथा, जुलूस, कितने चौराहे, दीर्घतपा आदि । एक आदिम रात्रि की महक, ठुमरी, अग्निखोर, अच्छे आदमी ।

रिपोर्ताज – ऋणचल -धनजल, नेपाली क्रांतिकथा आदि ।

प्रसिद्ध कहानियाँ - मारे गये गुलफाम (तीसरी कसम), ठेस, पंचलाइट, तबे एकला चलो रे आदि ।

तीसरी कसम पर इसी नाम से प्रसिद्ध फिल्म बनी । यह फिल्म हिन्दी सिनेमा में मील का पत्थर मानी जाती है । हीरामन और हीराबाई की प्रेम कथा पर आधारित यह एक अद्भुत महाकाव्यात्मक पर दुखांत, कसक से भरा आख्यान है ।

सन् 1954 में आंचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' प्रकाशित हुई । इस उपन्यास का कथानक 'पूर्णिया' जिले का है । रेणु जी लिखते हैं - ''इसमें फूल भी है शूल भी, धूल भी है, गुलाल भी, कीचड़ भी है, चन्दन भी, सुन्दरता भी है कुरुपता भी - मैं किसी से भी दामन बचाकर निकल नहीं पाया ।

कथा की सारी अच्छाइयों और बुराईयों के साथ

साहित्य की देहलिज पर आ खड़ा हुआ हूँ । पता नहीं अच्छा किया या बुरा जो भी हो निष्ठा में कमी महसूस नहीं करता ।''

रेणु जी ने अपने इस उपन्यास में ग्रामीण क्षेत्र की सत्यता से हमारा परिचय करवाया है कि किस प्रकार मेरीगंज की जनता समाजिक शोषण के चक्रों में फँसी हुई है, अभावों में अंध विश्वासों से जकड़ी हुई है। उपन्यास का अन्त इस आशामय संकेत के साथ होता है कि युगों से सोई हुई ग्राम चेतना तेजी से जाग रही है । 'मैलाआँचल' आचंलिकता, लोक जीवन की समग्रता और अंचल की संस्कृति को उजागर करती है । मेरीगंज गाँव भारत के सम्पूर्ण गाँवों का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी समस्याएँ भारत के प्रत्येक गाँव की सम्याओं को उद्घाटित करती है ।

फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित दूसरा आंचलिक उपन्यास 'परती परिकथा' उत्तरी बिहार के आंचलिक जीवन को चित्रांकित करने वाला आंचलिक उपन्यास है । इसमें अंचल के गाँव पुरानपुर की कथा का चित्रण है । परती अर्थात् बन्ध्या धरती, अंचल के बहुत बड़े भाग को घेरे हुए है। कोसी नदी तथा अन्य नदियों ने प्रलय मचाकर इस पूरे क्षेत्र को रेत से भर दिया और भूमि को बंजर बना दिया है कथा नायक के प्रयास से अन्त में यह भूमि उपजाऊ हो जाती है। पुरानपुर की धरती पर फसल लहराने लगती है ।

'परती परिकथा' उपन्यास के माध्यम से 'रेणु' ने बताया है कि रूढ़िवादी संस्कारों के कारण समाज का विकास अवरूद्ध हो गया है इस जड़ता को तोड़े बिना समाज का विकास नहीं हो सकता। 'रेणु' इस उपन्यास में धरती की परती की तरह समाज की परती भी तोड़ते दिखाई देते हैं।

इनकी रचनाओं का आरम्भ ग्रामीण क्षेत्रों की कथा, समस्याएं, मान्यताएँ आदि से होती है तथा अन्त एक आशामय तथा सुखद संकेत में होता है। रेणु जी की भाषा सरल एवं सहज है जो उनकी रचनाओं को सजीव बनाते हैं जैसे - ''डॉक्टर साहिब ! क्या है जरा चलिए ! मेरी बहन को कै हो रही है ! पेट भी मचलता है जी ! ... डॉक्टर साहब यह जो जकसैन दे रहें हो उसका कितना होगा।''

रेणु जी कवि भी थे । उनकी एक कविता है 'मेरे गीत सनीचर' उसकी कुछ पंक्तियाँ इस तरह है .....

''बहुत दिनों के बाद गया था, उन गाँवों की ओर
खिलखिलकर हँसते क्षण, अब भी जहाँ मधुर बचपन का
किन्तु वहाँ भी देखा सबकुछ, अब बदला-बदला सब
इसलिए कुछ भारी ही मन, लेकर लौटा रहा था।''

इनका मूल उद्देश्य आंचलिक स्तर पर अंचल की सभी बुराईयों, कुरीतियों शोषण आदि को सभी के सामने लाकर सुधार का संदेश देना था ।

फणीश्वरनाथ रेणु जी को प्रथम उपन्यास 'मैला आँचल' के लिये उन्हें 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया ।

11 अप्रैल, 1977 को इस सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार ने साहित्य जगत को अलविदा कहा ।

***

आदिवासी समाज सुधार में राजमोहिनी देवी का योगदान

जैनब खातून, एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर (इतिहास)

छ.ग. के दुर्गम वनांचल क्षेत्र में सरगुजा में 1950 के दशक में गाँधीवादी विचारधारी की आधारशिला पर एक ऐसे आंदोलन की नींव रखी गई जो राजमोहिनी देवी आंदोलन के नाम से जाना जाता है । उल्लेखनीय है कि इस आंदोलन की सूत्रधार एक गौड़ आदिवासी महिला है, जिनके विषय में सामान्य अवधारणा है कि वे पिछड़े अशिक्षित एवं आधुनिक विचारधारा से अनभिज्ञ होते हैं । राजमोहिनी देवी का आंदोलन एक सामाजिक, सांस्कृतिक आंदोलन है जो आदिवासी समाज को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास है ।

राजमोहिनी देवी का आंदोलन विशुद्ध रूप से एक सुधारवादी आंदोलन था । राजमोहिनी देवी गोंड जनजाति से थीं । उनकी आर्थिक पृष्ठभूमि मजबूत नहीं थी वह उस समय सरगुजा में प्रचलित आर्थिक संकट से पीड़ित थीं । सामाजिक आंदोलन पर उपलब्ध साहित्य से पता चलता है कि सामाजिक आंदोलन संकट की स्थिति में उत्पन्न होते हैं। आर्थिक संकट एक स्पष्ट कारक था, जिसने राजमोहिनी देवी के आंदोलन की उत्पत्ति में अहम् योगदान दिया । सन् 1951 में 37 वर्ष की आयु में राजमोहिनी देवी के जीवन में चमत्कारिक परिर्वतन आया । आषाढ़ की पहली बरसात होते ही कृषकों ने खेतों में बुआई शुरू कर दी किन्तु इसके बाद वर्षा बंद हो गई । भूख से व्याकुल लोग कंदमूल की तलाश में जंगल की ओर गये, राजमोहिनी देवी भी इन लोगों में शामिल थीं । कहा जाता है कि 10 जुलाई 1951 के दिन राजमोहिनी देवी राजमिलान के जंगलों में सतनदी के पास बैठी थी, तभी उनकी भेंट एक साधु से हुई। उन्होंने राजमोहिनी देवी से कहा कि तुम्हारा जन्म खाने-पीने की व्यवस्था करने जैसे मामूली कार्यों के लिये नहीं हुआ है। तुम्हें तो घर-घर में स्नेह और सादगी का अलख जगाना है, लोगों को माँस-मदिरा से मुक्त कराकर उनमें जागृति लाना है ।

राजमोहिनी देवी वहाँ से वापस लौटी और गोविन्दपुर में एक शिला पर तीन दिनों तक ध्यानमग्न रहीं। उसके बाद उन्होंने लोगों से कहा कि - सत्य धर्म का अनुसरण करो, खादी का प्रयोग करो, स्ववस्त्र निर्माण के लिये चरखा व करघा को अपनाओ, गाँधी जी के मार्ग का अनुसरण करो । शराब, तम्बाकू का परित्याग करो, हमें इन मुसीबतों से मुक्ति मिलेगी । इस तरह 1951 में अकाल के

समय गाँधीवादी विचारधारा व आदर्शों से प्रभावित होकर उन्होंने एक जन आंदोलन चलाया जिसे राजमोहनी आंदोलन के नाम से जाना जाता है । इस तरह जन सेवा करते हुए साधारण सी महिला राजमोहिनी देवी बन गई । आदिवासी समाज वर्तमान प्रगति से दूर था जिसके कारण वहाँ सामाजिक रुढ़ियों और बुराइयों ने अपना स्थान बना लिया था, इसके निराकरण के लिये एवं जनजातीय क्षेत्रों में जागृति व विकास के उद्देश्य से राजमोहिनी देवी ने 1951 में 'बापू धर्म सभा,' 'आदिवासी सेवा मण्डल' की स्थापना की। यह संस्था महात्मा गाँधी के सिद्धान्तों का प्रचार जनजातियों के मध्य कर रही है । इस संस्था के प्रमुख उद्देश्य - समाज में शांतिप्रिय तरीकों से विश्व - बंधुत्व की भावना स्थापित करना, महात्मा गांधी के सिद्धान्तों का प्रचार करना, जनजातियों में स्वच्छता का प्रसार करना एवं सामाजिक कुरितियों एवं साम्प्रदायिकता को दूर करना था ।

राजमोहिनी देवी को गाँधी जी के आदर्शों पर अटल विश्वास था उनके नेतृत्व में गाँव की औरतों ने शराब बंदी के लिए सत्याग्रह प्रारम्भ किया । राजमोहिनी देवी ने समाज को एक नयी दिशा प्रदान की, वे गांधी के विचारों के माध्यम से आदिवासियों के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया ।

वर्ष 1855-56 में उन्होंने सर्वोदय समिति सरगुजा के माध्यम से अनेक कार्य किये । 1975 में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल से मिलकर आदिवासी समाज के उद्धार की घोषणा कराने में अहम् भूमिका निभाई । इनके प्रयासों से 1976 में गोविंदपुरा में एक स्कूल प्रारम्भ हुआ, जिसका नाम इंदिरा गाँधी बालिका आश्रम रखा गया ।

जनजातीय क्षेत्र में शोषित समाज की स्थिति को सुधारने के लिए उन्होंने न सिर्फ आंदोलन किए बल्कि जहाँ आवश्यक था वहाँ श्रमदान के लिए प्रेरित किया।

गाँधी जी के विचारों पर असाधारण आस्था , समर्पित जीवन तथा समाज की भलाई की दिशा में काम करने के लिये उन्हें ''इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय समाज सेवा पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया । समाज, सुधार कार्य के लिए भारत सरकार की ओर से उन्हें आमंत्रण भेजा गया । 25 मार्च 1989 को तत्तकालिक राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमन द्वरा उन्हें 'पदम श्री' सम्मान प्रदान किया गया। उनकी स्मृति को चिर स्थायी बनाने के लिए छ.ग. शासन द्वारा उनके नाम पर स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय का नामकरण किया गया है।

***

इतिहास में एनी बेसेंट एवं थियोसॉफिकल सोसाइटी

मथुरा मरकाम, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (इतिहास)

''गुलामी के ऐशोआराम से स्वतंत्रता की कठोरतायें अच्छी है। यही होमरूल आंदोलन की भावना है, इसलिए इसे दबाया नहीं जा सकता और न ही कुचला जा सकता है । यह सदाबहार आंदोलन है और नौकरशाही द्वारा दिये गये किसी प्रलोभन से अपने इस जन्म सिद्ध अधिकार को किसी और चीज से बदलने के लिये फुसलाया भी नहीं जा सकता ।''

- डॉ. एनी बेसेंट

जब अपने राष्ट्र-राज्य के प्रति समर्पण, त्याग, ज़ज्बा, परिवार-समाज से पहले राष्ट्र को रखना, देश के प्रति निष्काम कर्म की भावना हमारे मन में हो तो उसे राष्ट्रवादी कहा जाएगा । लेकिन संसार में ऐसे व्यक्ति बहुत कम हुए हैं जिन्होंने जन्म अपने देश में लिया हो और जन सेवा का कार्य किस दूसरे देश में किये हों। डॉ. एनी बेंसेट उन्हीं बिरले व्यक्तियों में से एक हैं । इनका जन्म इंग्लैंड में हुआ और जन सेवा भारत में आकर किया ।

डॉ. एनी बेसेंट का जन्म 1847 में लन्दन में हुआ । उन्के पिता अंग्रेज तथा माता आयरिस थीं । इन पर माता का प्रभाव अधिक पड़ा । शिक्षा प्राप्ति के समय ही इनका विवाह पादरी फ्रैंक बेसेंट से हुआ इसलिए एनी को एनी बेसेंट कहा जाने लगा । सन् 1873 में इनका वैवाहिक जीवन टूट गया । तत्पश्चात वह सार्वजनिक क्षेत्र व सेवा संबंधी कार्यों में संलग्न हो गईं । मैडम एच.पी. ब्लावात्सकी की पुस्तक 'सीक्रेटडाक्ट्रा' पढ़कर वे उनसे बहुत प्रभावित हुई और उनकी शिष्या बन गईं ।

सन् 1875 में मैडम ब्लावात्सकी और कर्नल आल्कॉट ने मिलकर 'थियोसॉफिकल सोसायटी' की स्थापना न्यूयार्क में की गई। 1880 में एनी बेसेंट इसकी सदस्य बन गई । थियोसाफिकल सोसायटी एक आध्यात्मिक संस्था थी । थियोसॉफी ग्रीक भाषा के दो शब्दों 'थियोस' 'सोफिया' से मिलाकर बना है । जिसका अर्थ हिन्दू धर्म की 'ब्रह्मविद्या' ईसाई धर्म की 'नॉस्टिसिज्म' अथवा इस्लाम धर्म के 'सूफीज्म' के समकक्ष लिया जा सकता है । अतः कोई प्राचीन दर्शन, जो परमात्मा के विषय में चर्चा करे उसे ''थियोसाफी'' कहा जाएगा ।

वास्तव में यह एक दर्शन है जो जीवन को बुद्धिमता पूर्वक प्रस्तुत करता है और दिशा प्रदान करता है । हमें यह बताता है कि 'न्याय' तथा 'प्यार' ही वे मूल्य हैं जो विश्व को राह दिखाता है । इसकी शिक्षाएं मानव के अन्दर छुपी हुई आध्यात्मिक प्रकृति को उद्घाटित करती है।

भारतीय समाज एवं संस्कृति में इस दर्शन की जड़े 1879 में ही पनपनी शुरू हुई । भारत में इसकी शाखा मद्रास प्रेसीडेंसी में स्थापित हुई जिसका मुख्यालय अड्यार में था । भारत में इसका प्रचार प्रसार सन् 1893 में एनी बेसेंट के आने के बाद से हुआ ।

थियोसाफी के अनुयायियों की धारणा है कि सभी धर्म सच्चे हैं, सभी में आधारभूत एकता है । धर्म परिवर्ततन में उनका विश्वास नहीं है । कोई भी धर्म के अनुयायी थियोसॉफिकल सोसायटी के सदस्य बन सकते हैं । वे कर्म व पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वीकारते थे । उनका यह भी विश्वास है कि धर्म और विज्ञान में विरोध नहीं है । थियोसॉफी जाति, वर्ग, नस्ल, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव नहीं करती । उनके अनुसार सभी आत्माएँ ईश्वर का अंश है इसलिए सब समान हैं। 'थियोसिकल सोसायटी' तीन सिद्धान्तों पर कार्य करती थी

1. विश्व बंधुत्व की भावना
2. धर्म एवं दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन ।
3) प्राकृतिक रहस्यों तथा मनुष्यों की अंतर्निहित शक्तियों का उद्घाटन करना ।

एनी बेसेंट की विशेषता यह थी कि अंग्रेज महिला होते हुए भी उन्हें हिन्दू धर्म एवं संस्कृति से बहुत गहरा लगाव था । वे कहती थीं कि भारत व भारत की जनता मेरे लिए उस देश से अधिक निकट है जहाँ मैंने जन्म लिया था। भारत आने पर लगा जैसे अपनी मातृभूमि में आ गई । वह हिन्दू धर्म से अत्यधिक प्रभावित थीं । उनका कथन है - हिन्दूत्व वह मिट्टी है जिसने भारत की जड़े फैली हुई है यदि उस मिट्टी को उखाड़ दिया जाए तो वह मुरझा जाएगा। एनी बेसेंट ने सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि कई देशों में प्राचीन हिन्दू जीवन आदर्शों पर उत्साहवर्धक व्याख्यान दिए। उनका विश्वास था कि आज भी भारत में पुराने ऋषियों और आध्यात्मिक प्रतिभा की चिंगारी विद्यमान है । भारत के पास आज भी संसार को देने के लिए बहुत कुछ है । उन्होंने गोरे आदमी के बोझ के सिद्धान्त को ध्वस्त कर दिया जो इस विचार को लेकर चलते थे कि गोरे लोगों को राज करने का अधिकार ईश्वर से प्राप्त है ।

'थियोसिकल सोसायटी' के दृष्टिकोण को प्रसारित करने के लिए एनी बेसेंट ने 'द न्यू इंडिया' व 'कॉमन वील' नामक दो पत्रों का प्रकाशन भी किया लेकिन इसका प्रभाव अम जन की अपेक्षा बैद्धिक वर्ग पर अधिक पड़ा । भारत के लिये राजनीतिक स्वतंत्रता आवश्यक है इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये उन्होंने 1916 में होमरुल आन्दोलन चलाया । 1907 में एनी बेसेंट 'थियोसिकल सोसायटी' की सभापति चुनी गई तथा संसार के अधिकांश

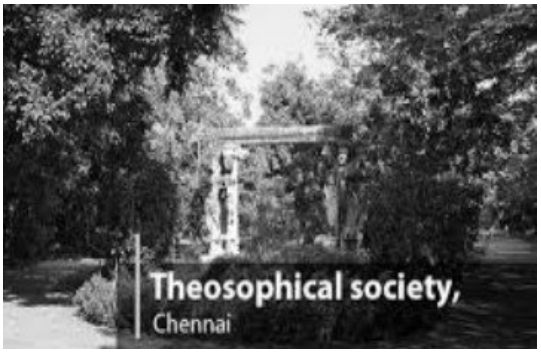

भागों की यात्रा करके इस संख्या के सिद्धान्तों को प्रसारित किया । बनारस में रहीं । शैक्षिक विकास के लिए उन्होंने देश के अनेक भागों में विद्यालय खोले । उन्होंने धार्मिक शिक्षा, शारिरीक शिक्षा के अर्थ, उद्देश्य, शिक्षण कार्य के संबंध में व्यापक विचार दिए । 1998 में इन्होंने सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जो आगे चलकर हिन्दू विश्वविद्यालय का आधार बना । उनके द्वारा शिक्षा के संबंध में दिये विचारों से वर्तमान समाज की शिक्षा व्यवस्था में निहित तमाम समस्याओं का समाधान सहजत से हो सकता है । उनके द्वारा प्रस्तुत शिक्षा चिन्तन सर्वकालिक व व्यवहारिक हैं ।

1947 में श्रीमती सरोजनी नायडू ने लिखा था कि डॉ. बेसेंट से भारतीय जीवन का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा। उन्होंने 400 से अधिक पुस्तकों की रचना की तथा ''गीता'' का अंग्रेजी में अनुवाद किया । इसके अलावा उन्होंने स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन देने, बाल विवाह को समाप्त करने, विधवा को प्रोत्साहन देने तथा निरक्षरता-निवारण के उद्देश्य से 'हितार्थ-स्काउट' एवं 'गर्ल्स गाइड' की स्थापना की। तत्कालीन परिस्थितियों में बेसेंट के विचार, व्यवहारिक आदर्शवाद के निकट थे । वह जीवन के अंतिम क्षणों तक भारत में रहीं। 28 सितम्बर 1933 को यह समाज सेविका, धर्म, प्रचारिका, बारतीय राष्ट्रीय चेतना की अग्रदूत और शिक्षाशास्त्री अपनी जीवन लीला समाप्त कर परम सत्ता में विलीन हो गई । उन्होंने सभी भारतीयों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया । उनके इस योगदान के लिये हम सदैव ही चिरऋणी रहेंगे । सर तेज बहादुर सप्रु ने उनके योगदान को इन शब्दों में व्यक्त की है - ''जो कुछ मैं कह सकता हूँ वह यह कि भारतीय राष्ट्र के निर्माताओं ने एनी बेसेंट का नाम ऊपर आता है ।''

***

महान मानवतावादी ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

शुभम पाण्डेय एम.ए. तृतीय सेमेस्टर, (अंग्रेजी)

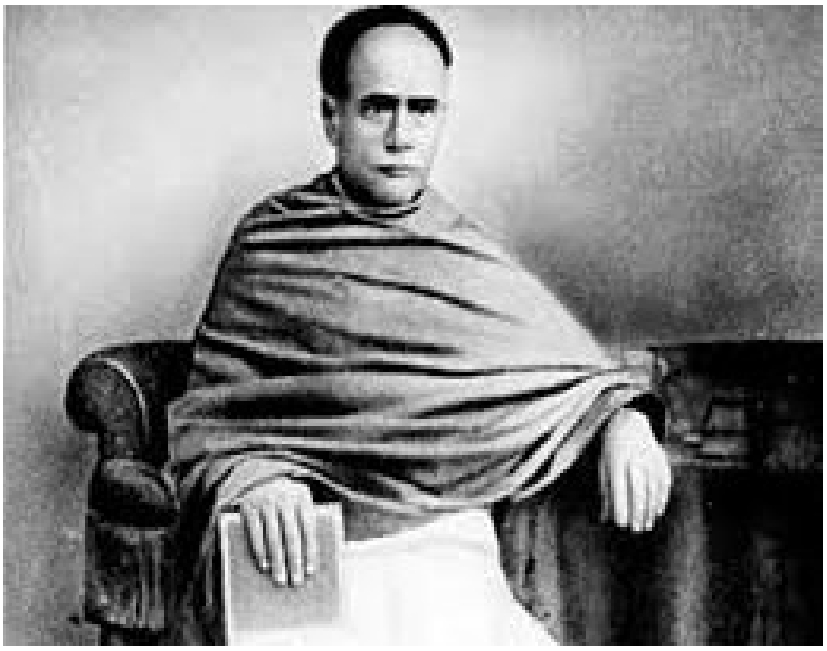

झूठ बोलना पाप नहीं बल्कि गलत है । इस प्रकार के आधुनिक विचार तात्कालीन समय में जिनके द्वारा प्रदर्शित और चिन्हित थे वह हैं, भारतीय नवजागरण के महान मानवतावादी ईश्वरचन्द्र विद्यासागर । बंगाल के आधुनिक कवि माइकल मधुसूदन दत्त ने उन्हें इस देश का प्रथम आधुनिक व्यक्ति कहा ।

महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर ने ठीक ही कहा था ''यह सच है कि हमारे देश के लोग उन्हें श्रद्धाजंलि दिये बिना रह ही नहीं सके, लेकिन विद्यासागर अपने चरित्र के जिस महान के द्वारा दशान्तर के किले पर निर्भयता से हमला कर पाये थे, उसे वे केवल उनकी दया-करुणा आदि कहकर छिपाये रखना चाहते हैं। अर्थात् विद्यासागर का जो गुण उनका सबसे बड़ा परिचय था, उसे ही उनकी वेशभूषा के पर्दे के पीछे रखने की कोशिश कर रहे हैं।

उन्हेंने कहा था कि ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के चरित्र का मुख्य गौरव था उनकी दयाशीलता या विद्या नहीं बल्कि उनका अजेय पौरूष और उनका अक्षय मनुष्यत्त्व है ।' रवीन्द्रनाथ का यह कथन अत्यन्त महत्वपूर्ण, अत्यधिक उपयुक्त और पूरी तरह से ऐतिहासिक है ।

विद्यासागर का जन्म बंगाल में उस समय हुआ जब रूढ़िवादी हिन्दुओं और नई सोच वाले साहसिक युवाओं के बीच भयंकर युद्ध छिड़ा हुआ था । रूढ़िवादी हिन्दुओं ने पश्चिम से उन्नत आदर्श लाने से इंकार कर दिया और माना की भारतीयों को किसी से कुछ भी सीखने की जरूरत नहीं है क्योंकि इस पवित्र भूमि के प्राचीन ऋषियों ने अपनी पवित्र रचनाओं में दुनिया के सभी सवालों का जवाब दिया हुआ है ।

छात्र जीवन-संघर्ष की तैयारी

वे आठ साल की उम्र में अपने गाँव की पाठशाला से प्राथमिक शिक्षा ग्रहण कर कलकत्ता आ गये। अपने पैतृक गाँव से 60 मील दूर पैदल चलकर कलकत्ता आये और शासकीय संस्कृत कॉलेज में प्रवेश लिया । उन दिनों संस्कृत कॉलेज केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जातियों (उच्च जातियों के हिन्दुओं) के लिए था । नीची जाति के अन्य लोगों को उस कॉलेज में दाखिला नहीं दिया जाता था । इस तर्कहीन जातिगत प्रतिबंध के चलते ज्ञान के फैलाव पर प्रतिबंध भी लग गया। इस कारण युवा ईश्वचर चन्द्र

विद्यासागर संस्कृत, कॉलेज के प्राचार्य बने तब उन्होंने बंगाल की एक पिछड़ी जाति कायस्थ को कॉलेज में प्रवेश करने की अनुमति दी । इस प्रकार विद्यासागर ने शिक्षा जगत में जाति बाधा खत्म करने की शुरूआत की ।

संस्कृत कॉलेज में अध्ययन के 12 साल के दौरान उनका प्रदर्शन काफी शानदार व उज्जवल रहा । उन्होंने अध्ययन किए गए सभी विषयों में श्रेष्ठ अंक अर्जित किए । प्राथमिक अंग्रेजी में भी उनका प्रदर्शन अच्छा रहा, लेकिन कुछ समय बाद जब कॉलेज प्रशासन ने अंग्रेजी का अध्ययन को बंद करने का फैसला लिया तो अन्य छात्रों के साथ-साथ विद्यासागर ने भी उस भाषा में महारत हासिल करने का अवसर खो दिया । अंग्रेजी सीखने में इतनी दिलचस्पी थी कि उन्होंने अपने सहपाठियों के हस्ताक्षर एकत्र कर कॉलेज ऑथोरिटी को ज्ञापन सौंपा और तुरन्त अंग्रेजी को पुनः शुरू करने की माँग की । इस दौरान, उन्हें घर में कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी । यहाँ उनके पिताजी के अलावा और भी कई लोग रहते थे, उन्हें ही सबकी देखभाल करना होता था । बर्तनों को साफ करना और अन्य घरेलू कार्य भी करना पड़ता था । इसके साथ ही उन्हें रोजाना कई घंटे अध्ययन करना पड़ता था । क्योंकि संस्कृत शिक्षा बहुत कठिन थी और इसके लिए उन्हें अधिक समय और श्रम की आवश्यकता होती थी । घरेलू कार्यों और फिर कॉलेज की कक्षायें । वे कभी-कभी बहुत थक कर सो जाया करते थे लेकिन उनके पिता अपने बेटे की शिक्षा के बारे में बहुत सचेत थे । रात में उन्हें अध्ययन करने पर जोर देने के लिये कई बार वे विद्यासागर की पिटाई भी कर देते थे । चूँकि वे बहुत गरीब थे, उन्हें रात में कई घण्टों तक तेल का दीपक उपयोग करने की अनुमति नहीं थी। इसलिए वे रात में सड़क किनारे गैस लैंप के नीचे बैठकर अध्ययन करते थे ।

संस्कृत कॉलेज -संघर्ष की शुरूआत -

अप्रैल 1846 में, विद्यासागर को संस्कृत महाविद्यालय में सहायक सचिव के रूप में नियुक्त किया गया, जहाँ वो पढ़ भी चुके थे । वह संस्था को अच्छी तरह से जानते थे इसलिए उन्होंने पुराने घिसे पिटे तौर-तरीकों को युक्ति संगत बनाना और इसे अंग्रेजी शिक्षा के साथ जोड़ना और इस प्रकार शैक्षणिक क्षेत्र में उपयोगिता के दृष्टिकोण से कॉलेज को तैयार करना चाहते थे। लेकिन कॉलेज के सचिव, रास दत्ता को अपने सहायक की योजना पसन्द नहीं आई इसलिए उन्होंने उदासीन रवैया अपनाया जिससे विद्यासागर को बहुत निराशा हुई । वे अपने कॉलेज के लिये कुछ भी उपयोगी नहीं कर पा रहे थे । उन्हें लगा कि केवल पैसे कमाने के लिए यहां नहीं बने रहना चाहिए। नतीजतन, 1847 में उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। सचिव श्री दत्ता ने सोचा कि विद्यासागर नौकरी छोड़कर खुद को जीवित कैसे रखेंगे । जब यह बात विद्यासागर को दूत द्वारा बताई गई तो उन्होंने दूत से श्री दत्ता को सूचित करने के लिये कहा कि ''अपने आत्म सम्मान को मार कर नौकरी करने से अच्छा वह बाजर में सबिज्याँ बेचना ज्यादा पसन्द करेगा ।''

कुछ समय बाद, जनवरी 1851 में उन्हें संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य के रूप में नियुक्त किया गया । जहाँ उन्हें तमाम बदलाव करने के अधिकार दिए गए । शिक्षा परिषद के सहयोग से विद्यासागर ने अपनी पुरानी योजना को आगे बढ़ाया और संस्कृत महाविद्यालय के पाठ्यक्रम और प्रणाली में बड़े पैमाने पर बदलाव किए। उन्होंने पहली बार में प्रवेश के लिये जाति की बाधा को खत्म किया । उन्होंने अंग्रेजी के अध्ययन को अनिवार्य किया और इतिहास, तर्कशास्त्र, प्राकृतिक विज्ञान और आधुनिक गणित को पाठ्यक्रम में शामिल किया ।

विद्यासागर के कुशल नेतृत्व में संस्कृत कॉलेज एक नई दिशा में आगे बढ़ा । 1853 में, विद्यासागर के काम से खुश होने के बावजूद शिक्षा परिषद ने कलकत्ता संस्कृत के प्रिंसीपल श्री जे.आर. वैलेन्टाइन को आमंत्रित किया । वैलेन्टाइन ने अन्य बातों के साथ यह सुझाव दिया की मिल्स की पुस्तक 'लॉजिक' को पूरा पढ़ाने की बजाय उस पुस्तक के सरलीकृत रूप में लिखे सारांश को पढ़ाया जाए, जिसके विषय प्रवेश में 'मिल्स' ने यूरोप के औपचारिक तर्कशास्त्र और भारतीय 'न्याय प्रणाली' के बीच समन्वय स्थापित करने की कोशिश की है । इसके अलावा उन्होंने दृढ़ता से कहा कि संस्कृत कॉलेज के सिलेबस में विशप वर्कले के ''एन एक्वायरी इन टू ह्यूमन नॉलेज'' को

भी शामिल किया जाये। लेकिन विद्यासागर ने इस समय तक धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक सोच को अच्छी तरह से ग्रहण कर लिया था । इसलिए इन सुझावों पर उन्होंने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की । उन्होंने 7 सितम्बर 1853 में शिक्षा परिषद के सचिव श्री माउट को एक पत्र में लिखा था -- मेरे विचार में वर्तमान स्थिति में संस्कृत कॉलेज में अध्ययन के लिये 'मिल' के लॉजिक को पढ़ाना अपरिहार्य हो जाता है । जहाँ तक बिशप बर्कले की 'इन्क्वायरी' को पाठ्यक्रम में शामिल करने की बात है यह हमारे लिये फायदेमंद कम और नुकसानदायक ज्यादा साबित होगा ।

महिलाओं की शिक्षा -

केवल लड़कों के लिए शिक्षा से वे संतुष्ट नहीं थे। वे बच्चियों और महिलाओं को भी शिक्षित करना आवश्यक समझते थे। इसके लिए उन्होंने बालिका विद्यालय खोले ।इस कार्य में विद्यासागर को उन सभी लोगों को सहयोग मिला, जो बंगाल की महिलाओं को अज्ञानता के अंधेरे से मुक्ति दिलाने के लिए प्रयासरत थे। उस समय बालिकाओं के लिये स्कूल शुरू करना कोई आसान काम नहीं था । सालों के अंधविस्वास के कारण लोग यह सोचा करते थे कि बालिकाओं को स्कूल नहीं जाना चाहिए । उन्हें केवल घरेलू काम करने चाहिए । उन्हें डर था कि यदि कोई लड़की शिक्षा ग्रहण करती है तो वह विधवा हो जायेगी । स्वभाविक रूप से विद्यासागर को कड़े विरोधों का सामना करना पड़ा । कोई भी अपनी बच्ची को बेथ्यून के स्कूल में भेजने को तैयार नहीं थे । उस समय विद्यासागर ने अपने दोस्त मदन मोहन तारालंकार की तीन बेटियों को 'बेथ्यून' के स्कूल में भेजा जो उस स्कूल का पहला बैच था । समाज के रूढ़िवादी लोगों ने उनको यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि महिला शिक्षा से महिलाओं का पतन होगा । उन्होंने विद्यासागर को बहुत भला-बुरा कहा, उनकी चुगली की, लेकिन निडर होकर, विद्यासागर ने अपना प्रयास जारी रखा ताकि वे समाज में महिला शिक्षा की आवश्यकता को बताते हुए शिक्षा के प्रसार के लिए जागरूकता ला सकें ।

1851 में बेथ्यून की मृत्यु के बाद विद्यासागर ने अकेले ही बालिकाओं की शिक्षा के स्कूल खोलने के काम को आगे बढ़ाया । नवम्बर 1857 और मई 1868 के बीच उन्होंने बालिकाओं के लिये 35 स्कूलों की स्थापना की जिसमें 1300 बालिकाओं ने प्रवेश लिया लेकिन ब्रिटिश सरकार ने स्कूलों के लिए आर्थिक मदद देने से इंकार कर दिया, इससे विद्यासागर बहुत निराश हुए । उन्हें ऐसा लगा जो दीपक उन्होंने जलाया था वह बुझ गया । उन्होंने दीपक की लौं को बुझने न देने का संकल्प लिया । और शिक्षकों को स्कूल चालू रखने के लिए कहा और 35000/- रुपये सालाना का वित्तीय भार खुद वहन किया जो उस समय के हिसाब से बहुत बड़ी राशि थी । इतनी कठिनाइयों और रूकावटों के बावजूद विद्यासागर कभी अपने लक्ष्य से नहीं हटे । समाजिक रूकावटों और रूढ़ियों को तोड़ते हुए उन्होंने बालिका शिक्षा प्रसार के काम को आगे बढ़ाया ।

विद्यासागर का पूरा जीवन दुख तकलीफ में रह रहे लोगों की सहायता करते ही गुजरा है । एक समय कि बात है कलकत्ता के भाव बाजार इलाके में उन्होंने बारिश में भीगते एक महिला को देखा जो महिला अपना शरीर बेचने को खड़ी थी । विद्यासागर ने उन्हें जैसे ही देखा उनकी जेब में जितने पैसे थे सभी उसे देकर कहा - घर चली जाओं माँ ! कितनी संवेदना व ममता के साथ उन्होंने उसे माँ कहकर संबोधित किया था । उनके जीवनी पर बिहारी लाल सरकार ने भी लिखा है कि अक्सर रात में घर लौटते हुए ऐसी महिलाओं को कुछ आर्थिक मदद देकर उन्हें घर भेज दिया करते थे ।

आज देश भर में छात्र, नौजवान, शिक्षाविद, बुद्धिजीवी वर्ग ईश्वर चंद्र विद्यासागर को याद करते हैं और उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करते हैं । लेकिन सवाल यह आता है कि क्या उनको याद करना और उद्धरण का पाठ करना भर सही मायने में श्रद्धांजलि होगी। जब चारो ओर अंधविश्वास, रूढ़िवादी परम्परा के नाम पर आज भी शोषण अन्याय व्याप्त है। शिक्षित लोग खाओ-पियो-मौज करो की संस्कृति से घिरे हुए हैं, युवा वर्ग शराब के नशे में डूबे हुए हैं। यदि हम आज के समाज में व्याप्त समस्याओं के खिलाफ आवाज उठाते हैं तो यही सही मायने में विद्यासागर के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

***

आदिवासी लोक जीवन के चितेरे - लाला जगदलपुरी

जितेन्द्र कुमार, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी)

साहित्य साधक लाला जगदलपुरी जी का जन्म 17 दिसम्बर 1920 में जगदलपुर के समीप तोतर ग्राम में हुआ था। लाला जी की माता का नाम श्रीमती जीराबाई तथा पिता का नाम श्री रामलाल श्रीवास्तव था । उनका परिवार काफी सम्पन्न था परन्तु बचपन में ही उनके पिता का साया सर से उठ गया और लाला जी सहित उनके दो भाईयों और एक बहन का पालन पोषण का दायित्व उनकी माँ पर आ गया । इस दौरान इनके परिवार की आर्थिक स्थिति भी चरमराने लगी । माँ का हाथ बँटाने के लिए उन्हें अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी ।

सोलह-सत्रह वर्ष की अल्पायु में ही लाला जी लेखन कार्य करने लगे थे । उनके रचना संग्रहों में मिमियानी जिंदगी पछाड़ते परिवेश, जिन्दगी के लिये जूझती गजलें, 'बस्तर : इतिहास एवं संस्कृति' आदि प्रमुख हैं ।

लाला जी मिमियती जिंदगी दहाड़ते परिवेश जो 1983 में प्रकाशित हुआ था के माध्यम से समाज का आइना बनकर हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं । लालाजी की गजलें समाज की वास्तविकता और कटुता को यथार्थ रूप में हमारे सामने रखते हैं -

'अशांति की इमारतें ऊँची हैं, लेकिन
शांति का कहीं शिलान्यास नहीं होता है ।
झूठ की कई कई पोषाकें होती है,
साँच का एक भी विश्वास नहीं होता।

इसी तरह उनकी अनेक गजलों और कविताओं से यह समझ सकते हैं कि वे समाज में व्याप्त दुख, अशांति, स्वार्थ आदि को लेकर कितने चिंतित थे ।

बस्तर का इतिहास, संस्कृति का वर्णन लाला जी के जिक्र बिना अधूरा ही कहा जा सकता है । एक तरफ वह प्रगतिशील साहित्यकार के रूप में हमारे सामने आते हैं, तो दूसरी ओर उन्हें बस्तर का अघोषित रूप से राजदूत भी कहा जा सकता है । दण्डकारण्य के लोक जीवन, साहित्य और संस्कृति के सम्बन्ध में देश-दुनिया को प्रामाणिक जानकारी लाला जी के द्वारा ही प्राप्त हो सका है। लाला जगदलपुरी ने हिन्दी के साथ-साथ हल्बी, भतरी एवं छत्तीसगढ़ी में भी कविता, गीत, मुक्तक, नाटक, एकांकी, निबंध एवं ग़ज़ल की रचना की है ।

उनकी पुस्तक 'बस्तर : इतिहास एवं संस्कृति' ने उन्हें पूरे देश में चर्चित कर दिया । उनके प्रमुख लोक साहित्य संग्रहों में हल्बी लोक कथाएं 1972, वन कुमार और अन्य लोक कथाएं तथा बस्तर की लोकोत्तियाँ, बस्तर की मौखिक कथाएं (1991) बस्तर की लोकोक्तियाँ (2008) आदि विशेष उल्लेखनीय हैं ।

उनका समग्र साहित्य यश-पबिल्केशन द्वारा दो खंडों में प्रकाशित है ।

लाला जी एक नाटककार व रंगकर्मी भी थे ।

नाट्य संस्था थियेट्रिकल सोसायटी द्वारा मंचित विभिन्न नाटकों में उन्होंने अभिनय भी किया था । 1949 में सिरहासार चौक में सार्वजनिक गणेशोत्सव के तहत लाला जी द्वारा अभिनित नाटक ''अपनी लाज'' विशेष चर्चित रहा था, इस नाटक के रचनाकार भी स्वयं लाला जी थे । लाला जी के व्यक्तित्व का एक अन्य चेहरा बस्तर अंचल के प्रारंभिक पत्रकारों में से एक के रूप में भी हमारे सामने आता है । सन् 1948-50 तक लालाजी दुर्ग से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका 'जिन्दगी' के लिये संवाददाता के रूप में कार्य किया तत्पश्चात 1950 में उन्होंने स्वयं पाक्षिक पत्रिका 'अंगारा' का प्रकाशन प्रारम्भ किया जो 1972 तक चलता रहा ।

सन् 1984 में पत्रकारिता के क्षेत्र में अनूठा प्रयोग करते हुए देवनागरी लिपि में 'बस्तरिया' नामक पत्रिका का सम्पादन प्रारम्भ किया जिसमें वे बस्तर के स्थनीय जनजातियों की लोकचेतना के साथ केदारनाथ अग्रवाल, निर्मल वर्मा जैसे साहित्यकारों की रचनाओं का 'हल्बी' अनुवाद प्रकाशित किये ।

लाला जी के व्यक्तित्व का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि तत्कालीन मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह जब बस्तर दौरे पर आए थे तब वे अपने तय कार्यक्रमों को बदलकर लालाजी से मिलने अचानक ही चले गए । उस समय लाला जी टीन के डिब्बे से लाई निकालकर खा रहे थे और उसी सादगी से मुख्यमंत्री को भी लाई खिलाई । परन्तु यह विद्वान शीलवान रचनाकार भी साहित्यिक उपेक्षा का शिकार हुआ । एक कविता के माध्यम से लाला जी इस व्यथा को प्रस्तुत करते हैं -

चाहते मुझको न गाना,
अप्रक्षेपित गेय हूँ ।
चाहते मुझको न पाना,
मैं अलक्षित ध्येय हूँ ।
चाहते जिसको तू लेना,
वह प्रताड़ित श्रेय हूँ ।
मैं स्वयं अपने लिए
उपमान हूँ, उपमेय हूँ ।
दृश्य हूँ ।
दृष्टा हूँ ।
पर अमर ..... ।

लाला जी आजीवन अविवाहित रहे । 4 अगस्त 2013 में एक लम्बी अस्वस्थता के बाद 93 वर्ष की अवस्था में दण्डकवन के इस ऋषि ने जगदलपुर के अपने निवास में अंतिम साँस ली । ***

पर्यावरण संरक्षण एवं प्रबंधन

प्रो. आई.एस. चंद्राकर, सहायक प्रध्यापक (भूगोल)

पर्यावरण नियोजन का अर्थ विकासीय कार्यों के लिये पृथ्वी के असमाप्य प्राय एवं समाप्य प्राय संसाधनों का विभिन्न रूपों में उपयोग करना, दुर्लभ एवं बहुमूल्य संसाधनों का संरक्षण तथा स्वस्थ्य जीवन को बनाये रखने के लिए पर्यावरण की गुणवत्ता की रक्षा करना है ।

टी.ओ. राइआरडन (1971) के मतानुसार प्रबन्ध का अर्थ विभिन्न वैकिल्पक प्रस्तावों में से उपयुक्त उद्देश्यों की पूर्ति कर सके। जहाँ तक संभव होता है प्रबंधन के अन्तर्गत अल्पकालिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये एक या कई रणनीतियाँ अपनायी जाती है, परन्तु दीर्घकालीन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भी भरपूर व्यवस्था रहती है ।

डेनिस मीडोज (1971) के मतानुसार पर्यावरण प्रबन्धन की संकल्पना सामान्यतः पर्यावरण-मॉडल से संबंधित होती है, जो यह सुनिश्चित करता है कि पूंजी, वार्षिक कृषि निवेश तथा भूमि विकास में वृद्धि के साथ, खाद्य पदार्थों की आपूर्ति में भी वृद्धि होगी, परन्तु पर्यावरण प्रबन्धन का मॉडल इन कारकों की सीमितताओं आने वाली चुनौतियों तथा समस्याओं से निपटने के लिये नीतियों को भी सम्मिलित करता है।

आर्थिक एवं प्रौद्योगिकीय मनुष्य की क्रिया-कलापों से पर्यावरण एवं मानव के बीच मधुर सम्बन्ध नहीं रहे, पर्यावरण प्रबन्धन, इस प्रकार मनुष्य एवं पर्यावरण के बीच सम्बन्धों को मधुर बनाने की प्रक्रिया है, ताकि पर्यावरण एवं समाज दोनों की गुणवत्ता में सुधार हो सके और यह मनुष्य के विध्वंसक क्रिया-कलापों पर रोक लगाकर तथा प्रकृति के परिरक्षण, संरक्षण, नियमन एवं पुनर्जनन द्वारा की जा सकती है ।

इस तरह पर्यावरण प्रबन्ध के अन्तर्गत, एक तरफ तो समाज के समाजिक-आर्थिक विकास पर ध्यान दिया जाता है, तथा दूसरी तरफ पर्यावरण की गुणवत्ता के परिरक्षण एवं संरक्षण के लिये भरपूर प्रयास किया जाता है

पर्यावरण प्रबन्धन के अन्तर्गत अधोलिखित बातों को सम्मिलित किया जाता है :-

1. प्राकृतिक संसाधनों के अंधा-धुंध एवं लोलुपतापूर्ण दोहन तथा मनुष्य के अविवेकपूर्ण क्रिया कलापों पर रोक तथा नियंत्रण द्वारा पर्यावरण की रक्षा करना, प्रदूषण स्तर पर नियंत्रण एवं उसे कम करना, मानव जनसंख्या की तीव्र वृद्धि पर नियंत्रण तथा हानिकारक प्रौद्योगिकी पर रोक लगाना।
2. पर्यावरणीय संसाधनों के आर्थिक महत्व को बढ़ाना एवं
3. भावी पीढ़ियों के लिये पर्यावरण का परिरक्षण करना ।

संरक्षण का अर्थ : विकासीय कार्यों का स्थगन नहीं होता, वरन उपयुक्त प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा सुलभ संसाधनों के मूल्य को बढ़ाना तथा वृद्धि एवं विकास की प्रक्रिया को तेज करना होता है ।

संक्षेप में यह कहा सकता है कि पर्यावरण प्रबन्धन के दो प्रमुख पक्ष होते हैं - सामाजिक-आर्थिक तथा सामान्य रूप में जीव मण्डल की स्थिरता एवं विशेष तौर पर एकाकी पारिस्थितिक तंत्रों का अस्तित्व एवं स्थिरता ।

संविकास की अवधारणा : 1960 की दशक में यह मान्यता थी कि वातावरण संरक्षण तथा विकास एक दूसरे के प्रतिलोम है दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि पर्यावरण को क्षति पहुँचाये बिना विकास असंभव है। यदि विकास करना है तो वातावरण की गुणवत्ता में ह्रास स्वाभाविक है, परन्तु अब यह महसूस किया जाने लगा है कि दोनों एक-

दूसरे के प्रतिलोम नहीं वरन् आश्रित हैं। आज विश्व के विकसित देश वातावरण संरक्षण पर तथा विकासमान देश विकास पर-बल दे रहे हैं । संविकास, सामाजिक दृष्टि से वांछित है। आर्थिक दृष्टि से संविकास के निम्नांकित पक्ष है, यथा --

1. सन्तुलित विकास
2. ठोस विकास
3. समन्वित या समग्र विकास

सन्तुलित विकास : विकास के इस व्यवस्था अर्न्तगत, पर्यावरण को बिना क्षति पहुँचाये, समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए न्यूनतम सुविधा का प्रबंध हो। असमानता आज विश्व की सबसे बड़ी चुनौती है। यह विकास के मार्ग में बाधक है। विकास के लाभ का वितरण सभी को समान रूप से नहीं मिला है, जिससे विश्व के देशों में असमानता आई है। विकसित देश के निवासी अनेक वस्तुओं का भारी मात्र में उपयोग कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर विकासमान देशों के निवासी जीवित रहने के लिये आवश्यक सुविधाओं से भी वंचित है। स्विटजरलैण्ड में प्रति व्यक्ति उपयोग सोमलिया के 40 व्यक्तियों के बराबर है, विश्व के 150 करोड़ व्यक्ति ईधन के लिए केवल वन संसाधन पर निर्भर करते हैं। उनकी प्रति व्यक्ति/वर्ष आय 50 डालर से कम है। यदि ऐसे लोग वातारवण संरक्षण के विषय में सोचने लगें तो उन्हें चारा, ईधन तथा भोजन कहाँ से उपलब्ध होगा, उनके लिए संरक्षण का अर्थ मृत्यु का वरण है ।

गरीबी व पर्यावरण ह्रास विपन्नता में सतत् वृद्धि के कारक हैं, जब इस दुष्चक्र को समाप्त कर सन्तुलित विकास की स्थिति नहीं आती है ।

पर्यावरण विकास के विश्व आयोग के अनुसार - असमानता विश्व की सबसे बड़ी पारिस्थैतिक समस्या है। यही विकास की भी सबसे बड़ी समस्या है ।अतः स्पष्ट है कि संविकास ऐसे आर्थिक विकास पर बल देता है, जिससे विकसित तथा विकासमान देशों के मध्य सन्तुलन बना रहे।

ठोस विकास : टिकाऊ विकास की अवधारणा वर्तमान के साथ-साथ भावी पीढ़ी पर भी नजर रखती है। इसे संधृत विकास भी कहते हैं। इसका उद्देश्य - मानव समाज की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति को पारिस्थतिकी विकास अथवा संविकास है जो भारत में भावी पीढ़ियों की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता को बिना क्षति पहुँचाये सुनिश्चित करना है ।

समन्वित विकास : पारिस्थितिकी तंत्र की समग्रता को ध्यान में रखकर किया जाने वाला विकास समन्वित विकास कहलाता है । किसी राष्ट्र के सभी पर्यावरणीय तत्वों यथा - कृषि, मिट्टी, जल, वायु, वनस्पति, वन जीव जन्तु, पशु, पक्षी, ऊर्जा तंत्र, उद्योग विकास, विज्ञान एवं प्राविधिकी को ध्यान में रखकर विकास नीति बनाई जाती है, जो पर्यावरण खतरों से बचा सकता है। अतीत में आर्थिक विकास के कारण पर्यावरण के तत्वों पर इतना अधिक दबाव बढ़ा है जिसके कारण पर्यावरण प्रदूषण की समस्यायें बढ़ी है । ऊर्जा संकट, पर्यावरण संकट, विकासजन्य संकट तथा सामाजिक विषमता जैसी समस्यायें एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी एक दूसरे से जुड़ी है। ब्राजील के अमेजन घाटी के सेलवा वनों की कटाई से सम्पूर्ण विश्व की जलवायु पर प्रभाव पड़ा है। सेल्वा वनों को पृथ्वी के फेफड़े की संज्ञा दी जाती है । अमेजन घाटी के वनों क लगातार कटाई करते रहने से 'हरित गृह प्रभाव' का प्रतिफल, पूरे विश्व को भोगना पड़ रहा है ।

संविकास के उद्देश्य :

पर्यावरण एवं विकास सम्बन्धी विश्व आयोग के अनुसार संविकास के निम्नलिखित उद्देश्य है :-

1. आर्थिक वृद्धि को सक्रिय करना ।
2. आर्थिक वृद्धि की गुणवत्ता तथा उत्पादन का समाज के सभी वर्गों में सम्यक वितरण व्यवस्था
3. सभी वर्गों के लोगों के लिये रोजगार, खाद्य पदार्थ, ऊर्जा, पयेजल एवं स्वास्थ्यप्रद वातावरण प्रदान करना ।
4. अनुकूल जनसंख्या की स्थिति निश्चित करना, जिससे भरण पोषण एवं अन्य मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति दीर्घकाल तक हो सके।
5. संसाधन आधार पर संरक्षण एवं संवर्धन
6. प्रविधि, विकास की दिशा का पुनर्निर्धारण जिससे किसी विपरित स्थिति पर नियंत्रण पाने की क्षमता में वृद्धि हो सके।
7. विकास परक निर्णय प्रक्रिया में पर्यावरण एवं आर्थिक दृष्टिकोणों में सामंजस्य ।

संविकास के सिद्धान्त : एक ऐसा राजनैतिक, प्रशासनिक तंत्र जो निर्णय प्रक्रिया में नागरिकों की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित कर सके। पिछड़े तथा विकासमान राष्ट्रों में निर्णय प्रक्रिया में जनसामान्य की भागीदारी नहीं होती। अतः जनसहयोग के बिना पारिस्थितिक तंत्र पर पड़ने वाले कु-प्रभावों को नहीं रोका जा सकता ।

एक ऐसे आर्थिकतंत्र का निर्माण जो ठोस तथा टिकाऊ उत्पादन आधिक्य का प्रयत्न करे ।

एक ऐसे सामाजिक तंत्र का निर्माण जो सामाजिक असमानताओं को दूर कर सके तथा विकास के परिणाम सभी को उपलब्ध करा सकें । समतावादी समाज में पर्यावरण ह्रास को रोका जा सकता है, जबकि सामन्तवादी सामाजिक व्यवस्था में यह संभव नहीं होता ।

एक ऐसे प्राविधिकी क्षेत्र का निर्माण जो सतत् आर्थिक विकास एवं पारिस्थिति की समस्याओं के नए हल ढूँढने में सक्षम हो। विकासमान देशों में बढ़ती जनसंख्या के भरण-पोषण के लिये हरित क्रान्ति में अधिक रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करने से मिट्टी की नाइट्रोजन स्थिरीकरण प्रक्रिया एवं बैक्टीरिया संक्रियता खत्म हो रही है । संविकास की दृष्टि से ऐसी प्राविधिकी पर्यावरण के लिए घातक है। अब फसलों में उर्वरकों की कमी को नील हरित शैवाल, सनई, मूँग आदि फसलें उगाकर दूर करने का प्रयास किया जा रहा है ।

एक ऐसी अंतराष्ट्रीय व्यवस्था बनाना जो ठोस विकास को प्रश्रय देती हो, वायुमण्डल में बदली कार्बन डाईअक्साइड, सल्फर आक्साइड, क्लोरोफ्लूरोकार्बन, नाइट्रिक आक्साइड गैसों की मात्रा, तेजाबी वर्षा व ओजन परत क्षीणता ऐसी समस्यायें हैं जिनकी उत्पत्ति के लिये विकसित राष्ट्र अधिक उत्तरदायी हैं, अतः संविकास का मूल उद्देश्य यह है कि ऐसा कोई कार्य न किया जाए जिससे पर्यावरण का ह्रास हो ।

तकनीक पर्यावर्तन : हमें संसाधन, उत्पादन प्रणाली के रूप में, प्राकृतिक पर्यावरण के प्राकृतिक नियमों जिनसे प्राकृतिक - पारिस्थितिक प्रणाली संचालित होती है तथा उत्पादन में वृद्धि होती है, का गहनतर अध्ययन तथा उन क्रियाविधियों की खोज करनी चाहिए जिसके द्वारा प्राकृतिक संतुष्टियाँ स्वयं को बनाये रखती है और पुर्नवृत्ति होती है। (सियोरेको, 1986, पृष्ठ 34)

इस संदर्भ में प्राविधिकी द्वारा अपशिष्ट पदार्थों को विषहीन बनाने की नई विधियों का विकास, औद्योगिक कच्चेमाल का पूर्ण उपयोग, अपशिष्टों का उपचार एवं उन्हें जमीन में गाड़ना अपशिष्ट रहित या कम अपशिष्ट वाली तकनीकि का विकास, खनिजों एवं संसाधनों का पूर्ण उपयोग, जल संवृत्ति चक्रों की स्थापना, औद्योगिक एवं उपभोक्ता मल पदार्थों को साफ करने की कारगर जैविकी विधियों का उपयोग आदि प्रमुख उपागम है।

पारिस्थितिक तन्त्र संवर्धन : पर्वत, वन, नमीयुक्त भूमि, द्वीप एवं समुद्र तट, शुष्क तथा अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र तथा नदी घाटी आदि परिस्थितिक तंत्र का निर्माण करते हैं। इन प्राकृतिक तंत्रों के संवर्धन हेतु विभिन्न प्रक्रियायें अपनायी जाती है। पर्वतीय क्षेत्रों के संवर्धन हेतु विभिन्न प्रक्रियायें अपनायी जाती है । पर्वतीय क्षेत्रों में पारिस्थितिक ह्रास को रोकने एवं संवर्धन हेतु मिट्टी की उर्वरता बढ़ाना, मिट्टी का संरक्षण , नवीन कृषि पद्धति का विकास, मृदा अपरदन एवं भू-स्खलन को रोकना, निर्वणीकरण पर रोक आदि सम्मिलित है। वन क्षेत्रों में निर्वनीकृत क्षेत्रों की खोज तथा उनमें पुनरोत्पादक विधियों का विकास, मृदा संरक्षण एवं अनुर्वरता को कम करना समय की माँग है। इसके साथ ही बाग-बगीचों में वृक्षारोपण एवं वृक्षों के कटाव को रोकने की आवश्यकता है। नमीयुक्त भूमि, समुद्री द्वीपों एवं तटों की उत्पादकता बढ़ाना, भू-क्षरण को रोकना, समुद्री कटाव को रोकना आदि भी पारिस्थितिक संवर्धन के अभिन्न अंग है, नदी तटों के मृदा अपरदन एवं कटाव को नदी बेसिन नियोजन से रोका जा सकता है । ***

जलवायु परिवर्तन

नितिन कुमार देवांगन
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (भूगोल)

जलवायु परिवर्तन औसत मौसमी दशाओं के पैटर्न में ऐतिहासिक रूप से बदलाव आने को कहते हैं । सामान्यतः इन बदलावों का अध्ययन पृथ्वी के इतिहास को दीर्घ अवधियों में बाँटकर किया जाता है । जलवायु की दशाओं में यह बदलाव प्राकृतिक भी हो सकता है और मानव के क्रियाकलापों का परिणाम भी । ग्रीन हाऊस प्रभाव और वैश्विक तापन को मनुष्य की क्रियाओं का परिणाम माना जा सकता है जो औद्योगिक क्रांति के बाद मनुष्य द्वारा उद्योगों से निःसृत कार्बन डाई आक्साइड आदि गैसों के वायु मण्डल में अधिक मात्रा में बढ़ जाने का परिणाम है । जलवायु परिवर्तन के खतरों के बारे में वैज्ञानिक लगातार आगाह करते आ रहे हैं ।

मूल कारण :

मुख्य रूप से, सूर्य से प्राप्त ऊर्जा तथा उसका ह्रास के बीच का संतुलन ही हमारे पृथ्वी की जलवायु का निर्धारण और तापमान निर्धारित करती हैं । यह ऊर्जा हवाओं, समुद्री धाराओं और अन्य तंत्र द्वारा विश्व भर में वितरित हो जाती हैं तथा अलग-अलग क्षेत्रों की जलवायु को प्रभावित करती है ।

वे कारक जो जलवायु में परिवर्तन के जिम्मेदार होते हैं जिनमें सौर विकिरण में बदलाव, पृथ्वी की कक्षा में बदलाव, महाद्विवीपीय बहाव तथा ग्रीनहाउस गैस की सांद्रता में परिवर्तन आदि शामिल है, जलवायु परिवर्तन के अंदरूनी तथा बाहरी कारक हो सकते हैं। अंदरूनी कारकों में जलवायु प्रणाली के भीतर ही प्राकृतिक प्रक्रियाओं में हो रहे परिवर्तन जैसे उष्मिक परिसंचरण, वहीं बाहरी कारको में कुछ प्राकृतिक जैसे उष्मिक परिसंचरण सौर उत्पादन में परिवर्तन, पृथ्वी की कक्षा, ज्वालामुखी विस्फोट या मानवजनित ग्रीन हाउस गैसों और धूल के उत्सर्जन में वृद्धि शामिल हो सकते हैं। कुछ परिवर्तन का जलवायु में बहुत जल्द ही प्रभाव पड़ता है जबकि कुछ प्रभावित करने में सालों लगा देते हैं ।

आंतरिक जलवायु परिवर्तन

महासागर-वातावरण परिवर्तनशीलता

जैव :- जैव, कार्बन और पानी के चक्र में अपनी भूमिका के माध्यम से जलवायु को प्रभावित करता है । इसके साथ ही ही वाष्पन-उत्सर्जन, बादल गठन, और प्रतिकूल मौसम के रूप में भी यह तंत्र को प्रभावित करता है । जैव ने, भूतकाल में जलवायु को कैसे प्रभावित किया, इसके कुछ उदाहरण हैं ।

2.3 अरब साल पहले हिमाच्छादन में ऑकिस्जेनिक प्रकाश संश्लेषण का विकास हुआ, जिससे ग्रीन हाऊस गैस, कार्बन डाइऑक्साइड का उपयोग कर ऑक्सीजन मुक्त करने की प्रक्रिया शुरू हो गई ।

एक और हिमाच्छादन 300 लाख साल पहले, लंबी अवधि से दफन संवहनी भूमि-पौधों के अपघटन के द्वारा शुरूआत हुई। (जिससे कार्बन सिंक और कोयला बनने की प्रक्रिया शुरू हुई ।)

- 55 लाख साल पहले समृद्ध समुद्री पादप प्लवक द्वारा पेलियोसीन-युगीन उष्मा की अधिकतम समाप्ति ।

- 49 लाख साल पहले, 8000,000 साल का आर्कटिक अजोला ब्लूम्स के कारण भूमण्डलीय तापक्रम वृद्धि के उत्क्रमण ।

- घास-तृणभोजी पशु पारिस्थितिक तंत्र के विस्तार के द्वारा पिछले 40 लाख साल में वैश्विक ठंड का बढ़ना ।

बाहरी जलवायु परिवर्तन कारक

1. कक्षीय परिवर्तन
2. सौर उत्पादन
3. ज्वालामुखी
4. सतह विवर्तनिकी
5. मानव जनित

जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में, मानव जनित गतिविधियाँ जो कि जलवायु को प्रभावित कर रहे हैं । जलवायु परिवर्तन पर वैज्ञानिकों की आम सहमति है कि जलवायु परिवर्तनों में मानव गतिविधियों का सबसे बड़ा हाथ रहा हैं और यह व्यापक तौर पर अपरिर्वतनीय है ।' इन मानवीय कारकों में सबसे अधिक चिन्ता का विषय, औद्यगिकरण के लिये कोयले और पेट्रोलियम पदार्थों जैसे फासिल फ्यूएल्स का अंधाधुंध उपयोग के कारण कार्बन डाई ऑक्साइड का बेहिसाब उत्सर्जन होना हैं, इसके अलावा वायुमंडल का सुरक्षा कवच ओजोन परत, जो सूर्य के खतरनाक रेडिएशन को रोकता है उसका लगातार ह्रास होना। जनसंख्या वृद्धि, जल को बेहिसाब दोहन, वनों की अंधाधुंध कटाई आदि भी मानवीय कारकों में शामिल हैं ।

ग्रीन हाउस इफेक्ट :

पृथ्वी का वातावरण सूर्य की कुछ ऊर्जा को ग्रहण करता है, उसे ग्रीन हाउस इफेक्ट कहते हैं। पृथ्वी के चारों ओर ग्रीन हाऊस गैसों की एक परत होती है । इन गैसों में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड शामिल हैं । ये गैसें सूर्य की ऊर्जा का शोषण करके पृथ्वी की सतह को गर्म कर देती है इससे पृथ्वी की जलवायु में परिवर्तन हो रहा है । गर्मी की ऋतु लम्बी अवधि की और सर्दी की ऋतु छोटी अवधि की होती जा रही है ।

ग्रीन हाऊस गैस उत्सर्जन में विभिन्न गैसें :

1. कॉर्बन डाईआक्साइड (लकड़ी, कोयला के जलने पर)- 57 %
2. कॉर्बन डाईआक्साइड (वृक्षों की कटान हो जाने पर):
3. मीथेन -14 %
4. नाइट्रस ऑक्साइड 8 %
5. कॉर्बन डाइऑक्साइड 3 %
6. फ्लोरिनेटेड गैसे : 1 %

जलवायु परिवर्तन के साक्ष्य कई प्रकार के स्रोतों

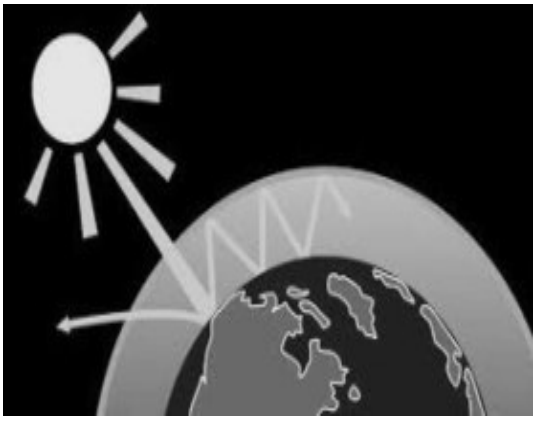

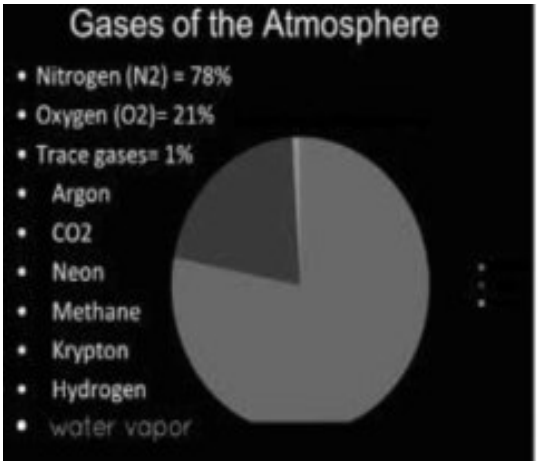

से उपलब्ध होते हैं जिन्हें पुराकालीन जलवायुवीय दशाओं के विवेचन हेतु प्रयोग में लाया जा सकता है । धरातलीय सतह के पास तापमान के प्रत्यक्ष मापन द्वारा प्राप्त किए गये आँकड़ें, उन्नसवीं सदी के मध्य के बाद के पूरी दुनिया के विभिन्न स्थानों के लिए उपलब्ध हैं और ये आँकड़े तार्किक निष्पत्तियाँ निकालने हेतु पर्याप्त मात्रा में मौजूद हैं। इससे पहले की जलवायुवीय दशाओं के पुननिर्माण हेतु विविध अप्रत्यक्ष तरीकों से प्राप्त किये आँकड़े प्रयोग में लाए जाते हैं ।

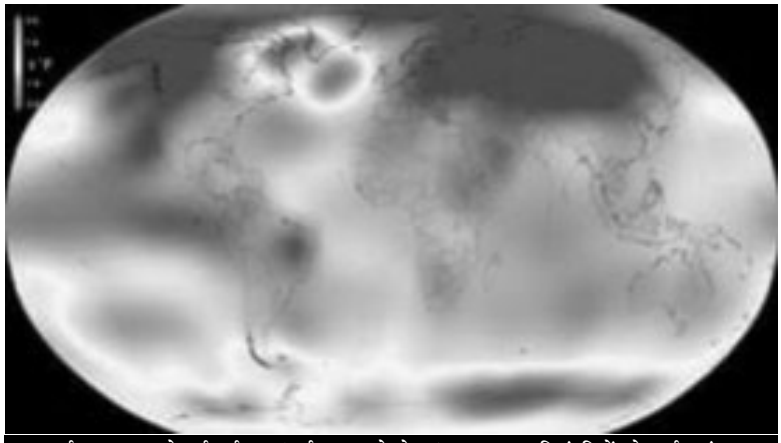

वर्ष 2015 सबसे गर्म वर्ष रहा (वर्ष 1980 से लेकर) - तापमान विसंगतियों को दर्शाता रंगः लाल-गर्म, नीला-ठंडा (नासा द्वारा लिया गया चित्र 20 जनवरी 2016)

पुराजलवायु वैज्ञानिक अध्ययनों में प्राप्त संरक्षित लक्षण जिनका उपयोग उस समय की जलवायु के निर्धारण में मददगार साबित होता है, अन्य संसूचक जो जलवायु दशाओं को प्रतिबिंबित करते हैं, जैसे वनस्पतियाँ, हिमक्रोड पेड़ों के आयु निर्धारक आँक्ड़े, समुद्रतल परिवर्तन संबंधी आँकड़े और हिमनदीय भूविज्ञान से प्राप्त आँकड़े इत्यादि ।

तापमान पर्यवेक्षण और प्रतिनिधिक जलवायु आँकड़े : पृथ्वी के सतह पर विभिन्न स्थानों पर सीधे तौर पर यंत्रों द्वारा मापे गए तापमान के अतिरिक्त रेडियोसोन्ड गुब्बारों द्वारा मापे गए उँचाई पर वायुमण्डलीय ताप दशाओं के आँकड़े भी उपलब्ध हैं। $^{18}0/^{16}0$ अनुपातों सम्बन्धी पर्यवेक्षण द्वारा प्राप्त आंकड़ों का प्रयोग भी पुराने दौर की जलवायु को कल्पित करने में सहायक हैं। पृथ्वी पर जमी बर्फ के नमूनों में कैद ऑक्सीजन में ऑक्सीजन-18 और ऑक्सीजन -16 के अनुपात उस समय के समुद्री सतह के तापमान के बारे में बताते हैं जब यह जल वाष्पीकृत हुआ होगा, क्योंकि प्रत्येक ताप दशा के लिय इनका एक विशिष्ट

अनुपात होता है । यह तरीका प्रातिनिधिक (प्रॉक्सी) जलवायु आँकड़े प्रदान करने वाली कई विधियों में सर्वप्रमुख है।

ऐतिहासिक और पुरातात्विक साक्ष्य : हाल के इतिहास में जलवायु बदलाव को चिन्हित करने के लिये बस्तियों और कृषि प्रतिरूपों में संगत बदलाव का अध्ययन किया जाता है। पुरातात्विक साक्ष्य, मौखिक इतिहास और ऐतिहासिक दस्तावेजों का अध्ययन पुराने समय की जलवायु को पुनःकल्पित करने में सहायक हैं। जलवायु दशाओं में परिवर्तन को कई सभ्यताओं के पतन के कारण के रूप में भी चिह्नित किया जाता रहा है ।

हिमनद

हिमनदों को जलवायु में बदलाव के संकेतकों में सर्वथा संवेदनशील संकेतक के रूप में देखा जाता है । हिमनदों का आकार इनके ऊपरी हिस्से में बर्फबारी के कारण होने वाले बर्फ के आगम और निचले सिरे पर बर्फ के पिघलने के बीच के संतुलन पर आधारित होता है, जिसे हिमनद का द्रव्यमान संतुलन भी कहा जाता

है । तापमान के अधिक होने की दशा में हिमनदों का यह द्रव्यमान संतुलन ऋणात्मक हो जाता है, अर्थात् हिमपात से जितनी बर्फ का आगम होता है उससे ज्यादा बर्फ निचले हिस्सों में पिघलने लगती है और परिणामस्वरूप हिमनद पीछे की ओर खिसकने लगता है जिसे हिमनद निवर्तन कहा जाता है । इसके विपरीत तापमान में कमी आने पर हिमनद की लम्बाई बढ़ती है ।

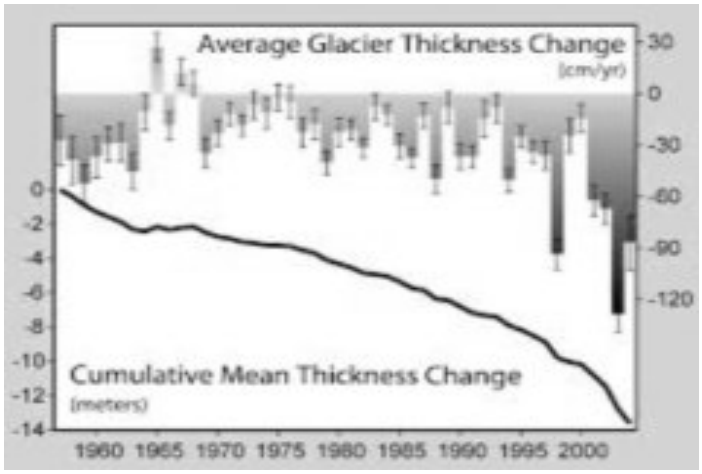

पिछली आधी सदी में, वैश्विक रूप से हिमनदों की मोटाई में कमी

के साथ बदलाव आता है और इसकी मोटाई और फैलाव बदलता रहता है । उत्तरी ध्रुव के पास, आर्कटिक सागर में हर वर्ष कुछ मात्र में बर्फ स्थाई रूप से रहती है और गर्मियों में भी यह चादर पूरी तरह पिघल कर समाप्त नहीं होती, जबकि दक्षिणी महासागर में (अंटार्कटिका के चारों ओर) यह हर साल पूरी तरह समाप्त हो जाती है, और जाड़ों में पुनः बनती है । उपग्रह से प्राप्त आँकड़े यह बताते

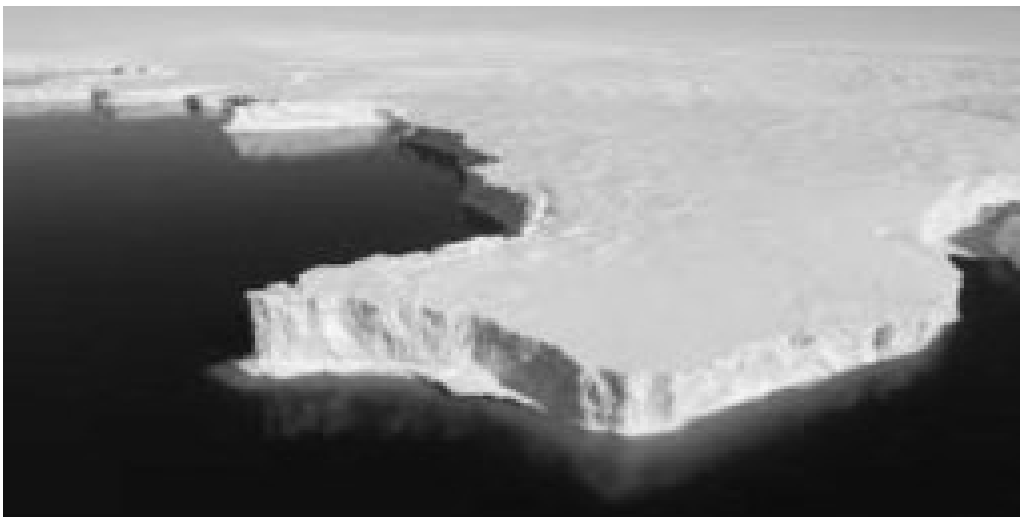

आर्कटिक समुद्री हिम का क्षय :

पृथ्वी के ध्रुवीय क्षेत्रों में जमा बर्फ के विस्तार और मोटाई के आँकड़ें भी यह प्रमाणित करते हैं कि पिछले कुछ दशकों में पृथ्वी की जलवायु में परिवर्तन आया है । आर्कटिक सागर में जमी बर्फ समुद्री खारा जल है जो जमी हुई अवस्था में है और समुद्र में तैरता रहता है। इसमें ऋतुओं हैं कि उत्तरी ध्रुव की समुद्री हिमचादर 1981-2010 के औसतन की तुलना में, वर्तमान में प्रतिदशक लगभग 13.3 प्रतिशत की दर से घट रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले वर्ष इस चादर में अभूतपूर्व पिघलाव दर्ज किया गया ।

***

बस्तर का दशहरा

विवेक टांडेकर, बी.ए. द्वितीय वर्ष

संकलित

बस्तर में दुनिया का सबसे लंबे समय तक दशहरा मनाया जाता है। यह उत्सव 75 दिन तक चलता हैं। विजयादशमी पर जहाँ पूरी दुनिया रावण का दहन होता है तो वहीं बस्तर में विजय रथ चलाया जाता है। विजयादशमी पर आदिवासी लकड़ी के बड़े रथ को चुराकर कुम्हडाकोट ले जाया जाता हैं। इसे भीतर रैनीश् रस्म कहा जाता है।

बस्तर अंचल में आयोजित होने वाले पारंपरिक पर्वो में बस्तर दशहरा सर्वश्रेष्ठ पर्व है। इसका संबध सीधे महिषासुर मर्दिनी माँ दुर्गा से जुड़ा है। पौराणिक वर्णन के अनुसर अश्विन शुक्ल दशमी को दुर्गा ने अत्याचारी महिषासुर को शिरोच्छेदन किया था। इसी कारण इस तिथि को विजयादशमी उत्सव के रूप में लोक मान्यता प्राप्त हुई। जाहिर है कि बस्तर अंचल का दशहरा पर्व रावण वध से संबंध नहीं रखता। बस्तर दशहरा की परंपरा और इसकी जन स्वीकृति इतनी विस्तृत एवं व्यापक है कि निरंतर 75 दिन चलता है। यह अपने प्रारंभिक काल से ही जगदलपुर नगर में अत्यंत गरिमा एवं सांस्कृतिक वैभव के साथ मनाया जाता रहा है।

- रथ चुराने के लिए किलेपाल, गढिया और करेकोट परगना के 55 गावों के हजारों लोग आते हैं जो राजा के प्रति नाराजगी प्रकट करते हैं। कहा जाता है राजशाही के दौर में कभी आदिवासियों को दशहरा की भागीदारी में सम्मान नहीं मिला था।

- इससे नाराज होकर आदिवासियों ने रथ चुरा लिया था। तब से यह परपरा बन गई है। राजा कुम्हड़ाकोट पहुंचेंगे और रथ चुराने वाले और रूठे आदिवासियों के साथ

खाना खाकर उनकी नाराजगी दूर करेंगे। इसके बाद रथ को वापस जगदलपुर लाएंगे। अब राजा की जगह मां दंतेश्वरी का छत्र रखा जाता है।

अनोखा इसलिए क्योकि शुरू से लेकर आज तक रथ का आकार 603 साल से समान है।

- बस्तर दशहरा इसलिए भी अनोखा है क्योकि पिछले 603 साल से दशहरे में चलने वाले रथ के आकार में कोई फर्क ही नहीं आया है।

- यह लकड़ी का रथ 25 फीट ऊंचा 18 फीट चौड़ा और 32 फीट लंबा ही बनाया जाता है।

- ग्रामीण अपने हाथों से रथ बनाते हैं। आधुनिक औजारों और मशीनों का इस्तेमाल नहीं करते हैं यह बारिश से शुरू होकर सर्दी की शुरुआत तक चलता है

- बस्तर के आदिविसियों की अभूतपूर्व भागीदारी का ही प्रतिफल है कि बस्तर दशहरा की राष्ट्रीय पहचान स्थापित हुई । आदिवासियों ने इसके प्रारंभिक काल से ही बस्तर के राजाओं को हर प्रकार से सहयोग प्रदान किया। जिसका यह परिणाम निकला कि बस्तर दशहरा का विकास एक ऐसी परंपरा के रूप में हुआ जिसका सिर्फ आदिवासी समुदाय ही नहीं समस्त छत्तीसगढ़वासी गर्व करते हैं। इस पर्व में अन्नदान, पशुदान और श्रमदान की जो परंपरा विकसित हुई उससे साबित होता है कि हमारे समाज में सामुदायिक भावना की बुनियाद अत्यंत मजबूत है। भूतपूर्व बस्तर राज्य में परगनिया मांझी, माँझी मुकद्दम और कोटवार आदि ग्रामीण दशहरे की व्यवस्था में समय से पहले ही मनोयोग से ही जुट जाया करते थे।

प्रतिवर्ष दशहरा पर्व के लिए परगानिया माँझी अपने अपने परगनों से सामग्री जुटाने का प्रयत्न करते थे।

सामग्री जुटाने का काम दो तीन महीने पहले से होने लगता था। इसके लिए प्रत्येक तहसील का तहसीलदार सर्वप्रथम बिसाहा पैसा बाँट देता था, जिससे गाँव-गाँव से बकरे, सुअर, भैंसे, चावल, दाल, तेल, नमक, मिर्च आदि बड़ी आसानी से जुटा लिए जाते थे। सामग्री के औपचारिक मूल्य को बिसाहा पैसा कहते थे। एकत्रिक सामग्री मंगनी चारडर दसराहा बोकड़ा कहलाती थी। सारी संग्रहित सामग्री जगदलपुर स्थित कोठी के कोठिया को सौप दी जाती थी। भूतपूर्व बस्तर रियासत में व्यवस्था के तहत पूर्णतः सार्वजनिक दशहरा मनाया जाता था। समय बदला परिस्थितियाँ बदलीं, समाज बदला और इसके साथ ही मनुष्य का जीवन भी बदला। शासन ने जन भावनाओं का सम्मान करते हुए, इसमें अपनी रचनात्मक भूमिका निर्धारित की। ऐसी भूमिका कि यह परंपरा लगातार विकसित होती रहे।

एक अनुश्रुति के अनुसार बस्तर के चालुक्या नरेश भैराजदेव के पुत्र पुरुषोत्तम देव ने एक बार श्री जगन्ननाथपुरी तक पदयात्रा कर मंदिर में एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ तथा स्वर्ण भूषण आदि सामग्री भेट में अर्पित की थी। इस पर पुजारी को स्वप्न हुआ था। स्वप्न में श्री जगन्नाथ जी ने राजा पुरषोत्तम देव को रथपति घोषित करने हेतु पुजारी को आदेश दिया था। कहते हैं कि राजा पुरषोत्तम देव जब पुरी धाम से बस्तर लौटे तभी से गोंचा और दशहर पर्वो में रथ चनाने की प्रथा चल पड़ी। राजा पुरषोत्तम देव ने फल्गुन कृष्ण चार दिन सोमवार संवत1465 को 25 वर्ष की आयु में शासन की बागडोर सँभाली थी।

बस्तर दशहरा बहु आयामी है। धर्म, संस्कृति, कला, इतिहास और राजनीति से इसके प्रत्यक्ष संबंध तो जुड़ता ही है साथ-साथ परोक्ष रूप से बस्तर दशहरा समाज की उच्च एवं परिष्कृत सांस्कतिक परंपरा का साक्षी भी बनता है। आज का बस्तर दशहरा पूर्णतः दंतेश्वरी का दशहरा है। बस्तर दशहरे की यह एक तंत्रीय पर्व प्रणाली आज के बदलते जीवन मूल्यों में भी दर्शकों को आकर्षित करती चल रही है। यह इसकी एक बड़ी खासियत है कहना न होगा आज का जो बस्तर दशहरा हम देख रहे हैं वह हमें अपने गौरवशाली अतीत से जोड़ता है। एक ऐसा अतीत जो बस्तर के आदिवासियों की अमूल्य धरोहर है जिस पर संपूर्ण भारतवासी गर्व करते हैं।

***

प्रकृति का प्रेम

राहुल कुमावत, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (राजनीति)

रात्रि में ओढ़ती प्रकृति
काले घने केशों का जाल...
चमकती नभ पर शुद्ध शीतल
चन्द्रमा का प्रकाश ...
असंख्य हिमकण की भाँति, बिखरे सितारे ...
लगते कल्टूम के कुसुम या परियों की आँखें ...
कितनी मादकता पूर्ण अंधकार
कुलांच रहे जुगनू, पावस की रात ...

सूर्य की क्षीण अरुण रेख-सा प्रकाश ...
लगता नविवाहिता के अलकों में, कुमकुम चूर्ण रंग समान ..
अंधकार को चीर कर
किसलय-सी नभ पर छायी ...
सूरज की फैली लाली
सभी के लिये नया सबेरा लायी ...

मनोहारी लगता, जो कनक सूर्य प्रकाश
शीत काल में
ग्रीष्मकाल में लगता, असंख्य शूल समान ...

कौन कहता है परमेश्वर और प्रकृति
ये दोनों नहीं रहते साथ .....
जो प्रकृति रस में रम जाए ...
उनके सिर में होता है, परमेश्वर का हाथ ...

प्राकृतिक वन का अर्थ, सभी के लिये असमान है
किसी के लिये मनोहर दृश्य
किसी के लिए अर्थ का साधन,
तो किसी के लिए, निवास स्थान
किन्तु प्रकृति का प्रेम, सभी के लिए समान है ...
इसके संतुलन के लिए
वृक्ष लगायें
भविष्य के लिए
पर्यावरण बचाएं
पुनः मन प्रफुल्लित कर देगी हरियाली ...
फूलों की महक, सूरज की लाली
सूरज की लाली .... ।

कुदरत की शोभा फुलवारी

रसंध्या साहू, बी.काम. (प्रथम वर्ष)

कुदरत की शोभा फुलवारी
जाऊँ मैं तुझ पर बलिहारी
प्रभु की सृष्टि इतनी प्यारी
देखो उसकी लीला न्यारी ।

भाँति-भाँति के फूल खिले हैं
भौरें इनसे गले मिले हैं
बाग में कितने पेड़ खड़े हैं
छायादार ये पेड़ घने हैं ।

फूलों से झुकी हैं डालें
पवन चले झूमे मतवारी ।

पेड़ों-सा उदार बनें हम
सबके कंठ का हार बनें हम
फूलों-सा मुस्कुराएँ हम सब
सुख बाँटे, सुख पायें हम सब ।

प्रकृति

संध्या बघेल, बी.ए. (प्रथम वर्ष)

हरी चादर ओढ़े आयी हूँ मैं
देखो संग मेरे कितनी खुशियाँ लायी हूँ मैं
मुझमें समाये है कुदरत के सारे रंग
आओ तुम्हें भी, इन प्यारे रंगों से सजा दू मैं।

पत्तियों में ओस की बूंदें टपक कर
और भी खूबसूरत हो जाती हैं
भोर की किरण, हर रोज मुझे स्वयं से मिलाती है
जहाँ इन्द्रधनुष मेरे दामन में, और भी
रंग भर जाती है ।

अगर न होती मैं, तुम्हें प्राण वायु देता कौन?
कहाँ से मिटती भूख तुम्हारी,
भोजन उपलब्ध कराता कौन ?

ईश्वर का दिया प्यारा-सा उपहार हूँ मैं,
किसी के लिये वरदान तो,
किसी के लिए भगवान हूँ मैं ।

कभी औषधि, तो कभी प्राणवायु बनकर
तुम्हारे प्राणों की रक्षा करती हूँ मैं ।
देखो! हरी चादर ओढ़े आयी हूँ मैं ।।

पर्यटन स्थल

युगांश सावरिया, बी.एमसी. द्वितीय सेमेस्टर (पीसीएम)

रूप इतना मनमोहक कि सभी को अच्छे लग जाते हैं

दूर-दूर से लोग इनकी सुन्दरता को देखने आते हैं

यही तो है, जो सभी देश की शोभा बढ़ाते हैं

पशु, पक्षी, नदी और पहाड़ सभी यहाँ मिल जाते हैं

देखने मनोहर दृश्य और इतिहास भी यहाँ मिल जाते हैं

वर्तमान हो या भविष्य सभी तो यह बलताते हैं

यह पर्यटन स्थल ही है, जो अपना सौन्दर्य दिखाते हैं

इसीलिए तो यह हमारे दिल को छू जाते हैं

पर्यटन स्थल ही तो हमें प्रकृति से जुड़ना सिखलाते हैं ।

नारी तोर रूप अनेक

आरती साहनी एम.ए., प्रथम सेमेस्टर(हिन्दी)

नारी तोर रूप अनेक हे,
तै पहिली बेटी रहिथस,
बाद में हवस तैं नारी
ओकर बाद तोला मिलय सौभाग्य,
अऊ बन जाथस तैं महतारी ।
तोर हे रूप अनेक
कइसे करौं में बखान वो ।

कभू तैं बेटी में
त कभू बहुरिया
कभू तैं रहिथस अर्धांगिनी,
कभू हस तैं महतारी
हर रूप तोर दिव्य हे,
जीवन के आधार तोर से हे,
तोर कोख ले जनम लेथे जम्मो परानी ।
तोर बिन अधूरा हे जीवन,
जीवन के सबे रंग हे बेरंग ।

नारी तोर रूप अनेक हे,
नारी तोर रूप अनेक हे ।।

'माँ'

हे माँ! तूने ही मुझे धरती पर जन्म दिया
हे माँ! तूने ही, मुझे जिंदगी से रूबरू किया।
अगर माँ न होती तो हम न होते
ये जिन्दगी अधूरी है माँ के बिना
क्योंकि माँ ने ही तो हमको जन्म दिया ।
माँ है जो हमसे कभी रूठती नहीं
चाहे लाख हम उन्हें सताते रहे
माँ ने हमें न कभी रोने दिया
भले खुद अंधेरे में रोती रहीं
घुट-घुट कर सारे दर्द सहती रहीं
कितनी परवाह हैं माँ को हमारी
है जान से प्यारी, माँ हमारी ।
हमारी हर ख्वाहिश, माँ ने पूरी की
अपने बच्चे को तकलीफ न होने दी ।
कभी जो दुख की छाया पड़ी
अम्मा तूने लिया हमें आँचल तले ।
माँ को बच्चों ने दर्द जो दिया, परन्तु
माँ के हृदय ने हमसे सदा प्रेम किया
ऐसा है दरिया दिल माँ का हृदय
जिसने सदा ममता व आशीर्वाद ही दिया ।
हे माँ! तूने ही धरती पे मुझे जन्म दिया,
हे माँ! तूने ही मुझे जिंदगी से रूबरू किया ।

कोरोना काल में शिक्षा

कु. धालिन, एम.एमसी. तृतीय सेमेस्टर (प्राणी शास्त्र)

आज सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी से पीड़ित है । मानव अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। साथ ही अनेक दिखावटी एवं गैर-जरूरी तत्व जीवन-चर्या में कम हो रहे हैं। हम सभी दिन-प्रतिदिन सहज एवं सरल होते जा रहे हैं। इससे तमाम बदलाव हो रहे हैं। जिनसे शिक्षा का क्षेत्र भी अछूत नहीं है । शिक्षा व्यवस्था का भी अनेक मानकों का सामान्य परिस्थिति में अनुपालन करती रही है ।

किन्तु अभी हम बेहद आसामान्य परिस्थितियों से गुजर रहे हैं । प्रत्यक्ष रूप से हम समाज के अन्य घटकों से मिलने में असमर्थ हैं। किन्तु क्या जीवन वास्तव में रूक गया है? ना हीं जीवन रुका नहीं है, बल्कि अपना रूप बदल रहा है । अपेक्षाएँ नए रूप में हमारे सम्मुख आ रही हैं और हम महसूस कर सकते हैं कि मनुष्य की जीवटता उसे हार नहीं मानने का हौसला प्रदान कर रही है।

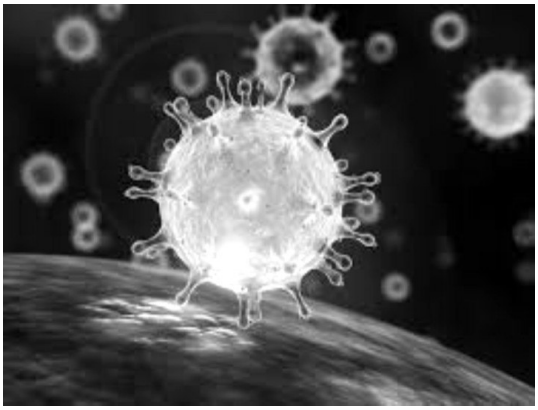

अब जबकि यह स्पष्ट है कि वर्तमान शैक्षिक सत्र पारम्परिक रूप से स्थापित मानदण्डों के आधार पर पूरा नहीं किया जा सकता है तब नीति नियंताओं ने इसके दूरगामी असर का अनुमान लगा लिया था और वैकल्पिक मॉडल पर काफी पहले कार्य करना प्रारम्भ कर दिया था ।

आज अध्ययन-अध्यापन के डिजिटल स्वरूप को मान्यता प्रदान की गई है । कक्षा में आमने सामने के संप्रेषण का स्थान इंटरनेट, मोबाइल, लेपटॉप आदि आभासी कक्षाओं ने ले लिया है ।

जूम, सिसको, वेब एक्स, गूगल क्लासरूम, टीसीएस आयन डिजिटल क्लासरूम आदि ने लोकप्रियता के आधार पर शिक्षा जगत में अपनी पैठ बनानी प्रारम्भ कर दी है ।

प्रारंभिक स्तर पर यह सब उपयोग के दौरान कठिन जान पड़ते हैं किन्तु एक बार अभ्यस्त हो जाने पर प्रक्रिया सरल प्रतीत होती है। हाँ, इतना भय अवश्य रहता है जितना कि तकनीक को पहली बार इस्तेमाल के समय होता है ।

साथ ही तकनीक का असमय फेल होना जैसे इंटरनेट की स्पीड, कनेक्टीविटी की समस्या, लॉकडाउन के समय में कोई साथ उपस्थित होकर सिखाने एवं बताने वाला नहीं होने से भी ऑनलाइन ट्यूटोरियल की सहायता से ही सीखने की मजबूरी, घर में जो साधन है उन्हीं की सहायता लेकर उसे रिकार्ड करना, नोट्स बनाना, उनकी डिजिटल कॉपी तैयार करना, छात्रों से संवाद करना आदि अनेक प्रकार की चुनौतियों शिक्षा समुदाय के सम्मुख हैं । फिर भी इच्छा शक्ति अतिरिक्त समय एवं अपने प्रयासों के द्वारा हमारे शिक्षक इसे कर रहे हैं । पाठ्यक्रम पूरे हो रहे हैं, छात्र इस माधयम में शिक्षण पद्धति द्वारा शिक्षा प्राप्त करने हेतु अपने को ढाल रहे हैं जो शुभ संकेत हैं। यह नए प्रकार का बदलाव है जिसने व्यापक स्तर पर परिवर्तन का आगाज किया है ।

आने वाले समय में इसका व्यापक असर हो सकता है । राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा जगत में भी इसे बढ़ावा तो दिया जा रहा था, किन्तु इसे समस्त भागीदारों का अपेक्षित सहयोग प्राप्त नहीं हो रहा था । समस्त शिक्षा व्यवस्था के समक्ष कोविड-19 के दुष्परिणामों के फलस्वरूप आसन्न परिस्थितियों के कारणों से ही सही डिजिटल शिक्षा के इस यथार्थ से हमारा साक्षात्कार सामूहिक रूप से कराने का कारण बन रहा है ।

इस दिशा में भारत सरकार द्वारा अपनी विभिन्न नियामक संस्थाओं के माध्यम से निरन्तर प्रयास किया जा रहा था कि वैश्विक स्तर पर उपलब्ध ज्ञान के खुलेपन एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की प्रतिस्पर्धा में हम अपने को तैयार रखें । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद, नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैकिंग, फ्रेमवर्क, नैक यानी नेशनल एसेसमेंट एंड एक्रिडिटेशन काऊँसिल आदि संस्थाओं या रैकिंग एजेसियों ने ओपन लर्निंग प्लेटफार्म को बढ़ावा देने का प्रयास किया था।

विश्व की दुर्लभ पुस्तकें डिजिटल फार्म में लाखों की संख्या में छात्रों को उपलब्ध कराई गई NPTEL यानी National prograomm on technology enhanced learing द्वारा ऑनलाइन पढ़ाई के नये अवसर प्रदान कर परिवर्तन करने को बढ़ावा दिया गया ।

विश्वविद्यालय एवं डिग्री कॉलेज में होने वाली प्राध्यापकों की नियुक्ति के समय आवेदन करने की अर्हता के निर्धारण में भी इन पदों में किये गये प्रयासों को अंको के रूप में आवश्यक हिस्सा बनाया गया, ताकि शिक्षक समुदाय डिजिटल अध्यापन की ओर अपनी रुचि बढ़ा सके ।

इन सभी सरकारी प्रयासों के बावजूद भी ई-कंटेंट के निर्माण की गति धीमी थी और अधिकांश शिक्षक समुदाय उससे दूरी बनाये हुए था, किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में बालात ही सही पर अधिसंख्य शिक्षक समुदाय को डिजिटल माध्यम से पढ़ने और पढ़ाने के प्रति अपने को सहज करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

आज प्राथमिक, माध्यामिक एवं उच्च शिक्षा सहित शिक्षा के प्रत्येक घटक को न केवल डिजिटल शिक्षण व्यवस्था ने छुआ है, बल्कि इनमें बड़े बदलाव की ओर अग्रसर किया है ।

सामानांतर शिक्षा तंत्र के रूप में चल रहे कोचिंग सेन्टर एवं व्यक्तिगत ट्यूटर भी इन माध्यमों का इस्तेमाल करने को उत्सुक हुए हैं । इसके साथ ही पहले से डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में अपना स्थान बनाने का प्रयास करने वाले स्वतंत्र निकायों व संस्थाओं को भी बड़ा बाजार मिलने की राह आसान होती दिख रही है ।

डिजिटल शिक्षा के संभावित दोषों को दूर करने की भी आवश्यकता है। पाठ्यक्रमों का प्रयोगात्मक एवं प्रयुक्त ज्ञान का हिस्सा पूर्णतः छोड़ना उचित नहीं है जो डिजिटल माध्यम से प्रभावी ढंग से कराया जाना संभव नहीं है । सिर्फ करेंट डिलीवरी, प्रश्न बैंक एवं नोट्स का प्रेषण करना मात्र ही अध्यापन की इति श्री समझ लेना ठीक नहीं होगा । छात्रों के अनुकूल प्रणाली को अपनाकर परस्पर संप्रेषण का अवसर भी प्रदान करने की चुनौती डिजिटल शिक्षा प्रणाली में व्यावहारिक रूप में दिखाई पड़ती है ।

***

What makes the science so interesting?

Pragati Agrawal, M.Sc.III[rd] (Chemistry)

"Necessity is the mother of invention"

Is an English proverb. It means that the primary driving force for most new inventions is the need. The entire science is based on this fact.

What is the importance of science in our daily life?? Science is not just a subject. Science teacher us to keep logical mindset. It makes us a curious investigator of things, around us. Why the colour of sky is blue? Why the colour of sun looks red at time of sunrise and sunset. How do day and night change? How seasons change? Is there any planet other than earth in which life is possible? Do aliens erists? And many more questions. If we are able to answer such question now, a is only because of science. But there are many questions that are unanswered. A lot of mystery surrounds the change of seasons. We still don't have a definite answer. This is the beauty of science. t just keep evolving with time.

A few thousand years back we didn't know, how did earthquakes come. We didn't know how did volcano erupt. We didn't know that how and when eclipses happens.

If we go back in time we didn't know how day and night changes. We didn't know that earth mover around the sun. We also didn't know about the shape of the earth. Earth was considered to be flat. But over the years. Advancement in science continued and we are able to give definite answers of very interesting and mysterious questions. Science keeps evolving and devoloping.

Science is a field in which we learn every time. Scientist can never tell that they have figured every thing out in the universe. They never tells that they have understood every phenomenon in this whole space and nothing is left to discover. This makes the scientist. Passionate about the science. They know that it is impossible to understand each and every phenomena abut still they works with full dedication day and night. The driving force for this is the ever changing nature of science. There is nothing like stagnation in science.

Science is not about answers. Science is actually about questions in the first place and the second step is seeking the answers. You will fell wonders to infect we are all scientist. A child develops and progresses due to his scientific temperament. His curiosity his inquisitiveness and his undaunted spirit keeps his moving a head like a scientist.

Science helps us answer the great mysteries of the universe. It is in fact one of the most important channels of knowledge that leads to equitable a sustainable development.

***

हम झगड़ते क्यों हैं?

डॉ. शकील हुसैन,
सहा. प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)

लोकतंत्र के बारे में अब्राह्म लिंकन का यह मशहूर कथन है कि To the people for the people by the people लेकिन यह कथन वास्तव में ग्रीक दार्शनिक वलिआन का है जिसने लोकतंत्र को परिभाषित करते हुए कहा था - 'जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा' आज समकालीन विश्व में विशेषकर विकासशील देशों में हिंसा का ताण्डव है । एक ही देश के लोग आपस में लड़ रहे हैं, देशों में हिंसा का ताण्डव है। श्रीलंका में तमिल-सिंहली, सीरिया, यमन, पाकिस्तान, इथिपोपिया, सूडान, बर्मा, वेनेजुएला, कोलम्बिया आदि बहुत लम्बी सूची हैं इनकी । इन हिंसाग्रस्त देशों में 8.5 करोड़ लोगों को 2019 में विस्थापित होना पड़ा है । प्रश्न यह उठता है कि ये हिंसाग्रस्त देश जो सामान्यतः गरीब देश हैं, इनके लोग आपस में झगड़ते क्यों हैं? यदि उत्तर खोजें तो पता चलता है कि इन देशों में एक से अधिक धर्मों, प्रजातियों, संस्कृतियों, जातियों भाषाओं के लोग रहते हैं जो आपस में झगड़ते रहते हैं ।

जैसे सीरिया में शिया-सुन्नी, कुर्द, यमन में शिया-सुन्नी, श्रीलंका में तमिल-सिंहली, सूडान में ईसाई-मुस्लिम एवं रोमन कैथोलिक व प्रोटेस्टैण्ट, बर्मा में बौद्ध-रोहिंग्या एवं अन्य प्रजातियाँ। इनके आपस के झगड़े में कुछ बाहरी ताकतें इनकी पैसों और हथियारों से सहायता प्रदान करती हैं ।

इसके विपरीत बेल्जियम, कनाडा, इण्डोनिशिया, स्विटजरलैंड आदि में भी एक से अधिक भाषा-भाषी प्रजातियों, जातियों और धर्मों के लोग रहते हैं लेकिन इन देशों में कोई सामाजिक संघर्ष नहीं हैं, कोई हिंसा नहीं। इण्डोनेशिया से कनाडा और योरोप जैसे विकसित देश भी नहीं हैं । यहाँ के सबसे बड़े पर्यटक आकर्षण वाली द्वीप में हिंदू धर्म का बहुतायत है । लेकिन इण्डोनेशिया के मूल धर्मावलम्बी मुसलमानों से इनका कोई संघर्ष नहीं है ।

अब दो उदाहरण लेते हैं श्रीलंका और बेल्जियम का तथा यमन और स्विटजरलैण्ड का ।

यमन - अरबी प्रायद्वीप के दक्षिण में स्थित अरब भूमि का एकमात्र देश है जहाँ थोड़ी बहुत वर्षा होती है। इसीलिए इसे अरब का ओएसिस या नखलिस्तान कहा जाता है । यहाँ की मुस्लिम आबादी में शिया और सुन्नी पर्याप्त संख्या में हैं। शियों को ईरान और सुन्नियों को सऊदी अरब सहायता प्रदान करता है । फलतः दोनों सत्ता वर्चस्व के लिए लड़ रहे हैं । कमोबेश पूरे पश्चिम एशिया में यही हाल हैं ।

स्विटजरलैण्ड - धरती के इस स्वर्ग में चार राष्ट्रभाषाएँ हैं। क्योंकि यहाँ चार प्रजातियों या भाषा-भाषी लोग हैं । जर्मन, फ्रेंच, इटैलियन और स्थानीय मूल निवासी । इनमें जर्मन 65 प्रतिशत से अधिक हैं और मूल निवासी स्विस 5 प्रतिशत से भी कम । उस हिसाब से चारों में सत्ता संघर्ष होते रहना चाहिए वर्चस्व के लिये । मूल निवासियों को दुखी रहना चाहिए क्योंकि विदेशियों ने कब्जा कर लिया । जर्मन के लोगों का हर तरफ वर्चस्व होना चाहिए क्योंकि वो 65

प्रतिशत से अधिक हैं। उस देश की सीमा जर्मनी, फ्रांस, इटली से लगती हैं। अतः इन देशों को अपने लोगों की सहायता करनी चाहिए । कुल मिलाकर स्वीटजरलैंड में सामाजिक ताना बाना ऐसा है कि यहाँ हमेशा लड़ाई होने रहना चाहिए । लेकिन यहाँ ऐसा कुछ नहीं होता । यमन, सीरिया, श्री लंका जैसे । यह देश दुनिया का सबसे शांत और तटस्थ देश है । यहाँ मामूली विवाद भी नहीं होता । दो विश्व युद्धों में न तो इसने हिस्सा लिया और न ही यहाँ विश्व युद्ध लड़ा गया ।

तो प्रश्न यह उठता है कि ऐसा क्या है कि समान हालात में यमन, सीरिया, श्रीलंका में लोग लड़ रहे हैं और बेल्जियम, स्विटजरलैंड, इण्डोनेशिया में शांति है। उत्तर ढूंढों तो इसके दो उत्तर मिलते हैं -

1- हिंसा का मूल कारण है -

(अ) जब कुछ लोग बाकी लोगों को 'अपना बनाने के बजाए' 'अपने जैसा बनाने' 'की बल पूर्वक कोशिश करते हैं।'

(ब) कुछ लोग अपना भाषायी, जातीय, प्रजातीय सांस्कृतिक या धार्मिक प्रभुत्व चाहते हैं । अतः सत्ता में भागीदारी (पावर शेयरिंग) नहीं करते । साथ रहने वाले अन्य समूहों को या तो धर्मान्तरण आदि करके उनके जैसा बनना होगा या उनका प्रभुत्व स्वीकार करके उनके अधीन रहना होगा । अधिकांश हिंसाग्रस्त देशों में यही स्थिति हैं ।

अब दूसरा प्रश्न यह है कि स्विटजरलैंड में शांति क्यों हैं? या इस हिंसा का समाधान क्या है? उत्तर यह है कि बेल्जियम, कनाडा, इण्डोनशिया और स्विटरजरलैंड आदि देशों में 'सहअस्तित्व' और 'सत्ता में सबकी भागीदारी' को एक सामाजिक-राजनीतिक मूल्य के रूप में स्वीकार कर लिया है । इसलिए उन्होंने स्वीकार कर लिया है कि एक दूसरे की प्रजाति, भाषा, धर्म उनके लिए कोई समस्या नहीं है, जो जैसा है, अच्छा है, सुन्दर है, उसे न तो अपने जैसा बनाने की जरूरत हैं न ही अपने अधीन रखने की जरूरत है। सब श्रेष्ठ है, सर्वश्रेष्ठ कोई नहीं है। सर्वश्रेष्ठता का विचार एक हिंसक विचार है । इसे ही 'बहु संस्कृतिवाद' भी कहते हैं । इसी कारण स्विटजरलैण्ड ने चारों भाषाओं को राजभाषा का दर्जा दिया है। वहाँ कार्य पालिका भी बहुत है अर्थात् राष्ट्रपति एक-एक साल के लिए होते हैं, चार साल के लिये चार राष्ट्रपति । कोई सत्ता संघर्ष नहीं बल्कि सत्ता सहभागिता पावर शेयरिंग ।

इसी विचार के प्रसार के लिए राजनीति विज्ञान विभाग में , Co existence power sharing and Democracy» 'सह अस्तित्व सत्ता सहभागिता और लोकतंत्र' विषय पर एक मूल्यवर्धन पाठ्यक्रम वैल्यू एडेड कोर्स 30 घण्टे का प्रारम्भ किया गया है ।

इस प्रकार बीसवीं सदी में इन देशों ने दुनिया को यह बताया कि लोकतंत्र तभी सफल हो सकता है जब हम सहअस्तित्व, सत्ता सहभागिता, बहुसंस्कृतिवाद को स्वीकार कर समाज में स्थापित करें ।

***

प्राकृतिक सौन्दर्य

लक्ष्मी देवांगन बी.एससी. (तृतीय वर्ष)

जग के ऊर्वर आँगन में बिखरी है जिसकी छाया
ध्यान लगाकर देखो जगह-जगह पर सिखाती है
हमको जीवन की परिभाषा ।

खड़े होकर पर्वत पर आवाज मैंने लगायी
लौटकर वो ध्वनि मेरे ही पास आई ।
सीखी थी मैंने, जीवन की सच्चाई उस दिन
करोगे जो तुम दूसरों के लिये, वही
तुम्हारे पास लौटकर आयेगा एक दिन ।

परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है
पेड़ों की डालियों में पत्तियों का आना
जीवन के सफर में सुख-दुख की कहानी,
इन पेड़ों की पत्तियों की तरह ही होती है ।

सागर के हृदय की विशालता सिखाती है
सिखाती है कठिनाईयों को समेटकर जीना ।
पेड़ों की छाया में ही तो पंछियों का रैन बसेरा है
इनके होने से हम हैं और कहते हैं जीवन मेरा है !

प्रकृति में हम हैं और हममें प्रकृति
मदद माँगती है ये हमसे अपनी सुरक्षा के लिए
न ठुकराया करो इसे,
उस ठोकर का हिसाब कहर बनकर लेती है ये ।

खूब था वो कोरोना का कहर,
जो इसके रूठने से आया था
अपनी गंदगी साफ करने, इसने भी शोर मचाया था ।
सुन्दर विश्व की कल्पना, ऊर्जा से भरपूर है
समझो तो इस प्रकृति की गहराई को
ये भी जिन्दगी का एक दस्तूर है ।

मोर धरती

कु. तृप्ति बारले बी.एससी. प्रथम (इलेक्ट्रानिक्स)

हरियर लुगरा पहिरे हे धरती
कतका मनोरम दृश्य हे जी ।

सुरुज ह तोरे हरे नैना,
नदिया नरवा मन गहना हे जी।

भोर के बेरा ल सुरुज ह लाये,
दिन भर ऊजाला फैलाये जी ।

सोये फूल मन के ये खिलना,
पंक्षी मन के पंख फैलाना,
उछाह भरे नदिया, नरवा मन,

चंदा हरे भुइयाँ के टिकली,
बड़े छोटे होथे ये टिकली ह जी ।

चंदा के सुघ्घर चाँदनी ले,
हिरदे मोर जुड़ाथे जी ।

भुइँया हरे हमर महतारी
ऐला मत उजारव जी,
ए भुँइया के हम लइका सब
आरती एखर उतारव जी ।

दोहा

अमित कुमार टंडन. बी.ए. (तृतीय वर्ष)

मत करना अभिमान तुम, बड़ा समझकर नाम ।
घातक होता है सदा, इसका जी परिणाम।।

मन से सभी निकाल दो, भ्रामक जटिल विचार ।
तन को कर दे खोखला, ऐसा करता वार ।।

भेद भाव सब छोड़ के, रखना सबसे मीत ।
इससे ही होगा भला, और मिलेगी जीत ।।

कर लो सबसे प्रेम तुम मोल समझ लो आज ।
भाई-चारा बांटकर, करना बढ़िया काज ।।

खुद से ही उम्मीद रख, साहस रख भरपूर।
जीवन के हर लक्ष्य से, रखना गम को दूर ।।

जीवन का यह तथ्य है, कोशिश कर हर बार ।
जब तक होते ना सफल, करते रहना यार ।।

जीवन एक शतरंज है, कभी हार, कभी जीत।
सहज प्रेम सद्भाव से, गा लो भाई गीत।।

रखना खुद से दूर तुम, लोभ मोह मद त्रास ।
मन के शुद्ध विचार का , करता है ये नाश ।।

तरह तरह के लोग

अमित कुमार टंडन. बी.ए. (तृतीय वर्ष)

तरह तरह के लोग हैं प्यारे,
कुछ मितभाषी कुछ वाचाल।
जिनके शब्दों में है टकराहट,
बोले तो आ जाए भूचाल ।

कई करतब दिखलाने वाले,
करते हैं जो सदा कमाल ।
जिनके हाथों में जादू है,
उनकी प्रतिभा बने मिसाल ।

कैसी भी दुविधा आ जाए,
खुद को जिसने लिया निकाल ।
वो ही बन सकता है काबिल,
गैर हालात में खुद को ढाल।

अपनी प्रतिभा वो ही जाने,
जिसने खुद को परखा आज ।
जिसके आगे नतमस्तक है,
दौलत-शौहरत तख्तो-ताज ।

Role of Dr. Bindeshwar Pathak in Socio-economic development of untouchables

by Ku. Pragya Nema, M.A. III Sem. (History)

Untouchability, as a curse for the Indian society since Vedic times still exist in the modern Indian society. The person who showed courage for raise the problems faced by untouchables, specially scavengers is DR.BINDESHWAR PATHAK, founder of Sulabh International a social service organisation.

It was not just a sanitation revolution but it was socio-economic revolution. It has focused on the social inclusion of untouchables and their economic development. Bindeshwar Pathak has contributed immensely in the field of sanitation, sludge management, manual scavengers, dignity of widows, education programs and toilet museums. Dr. Pathak was greatly inspired by Mahatma Gandhi.

» When Dr. Pathak was a child, he touched a manual scavenger with curiosity to know what will happen, The consequences were bad. He was severely punished by his grandmother.

In 1968 in Bettiah town of Bihar a boy was attacked by a bull. As the People rushed to save him, but somebody in the crowd shouted that young boy was untouchables. Hearing this everybody moved away and left him to die. Pathak quickly rushed in to help and took the boy to the hospital but boy died.

This was the level of superstition and discrimination that prevailed in rural India against untouchable. That day he vowed to dedicate his life for the emancipation of people labelled as untouchables.

Condition of women

In those days dry latrines were common and were cleaned by untouchables specially women. Open defecation was also a common phenomenon. Women were the worst sufferers as a result of this practice.

According to a report, innumerable cases are registered in the police station by women are subjected to wrong actions while they are going in open for toilets.

According to UN report, problem of open defecation was 24% in 1990, it has

reduced to 15% in 2011. In numbers this signifies a drop of 244 million from 1040 million.

Dr. Pathak's proposal

Dr. Pathak has proposed a solution of 2 soak pits toilet where solid waste will get converted into the soil after sometime due to the presence of bacteria and water will get absorbed by the soil and work as groundwater recharge. Holes are dug intervals to soak water and gases. They are free from smell, the excreta which has converted into soil become great and natural fertilizers for farm without any harmful chemicals. The methane gases comes out in the sludge digestion process are used in biogas cooking in several areas. Pathak went door to door to motivate and educate the beneficiaries to get their bucket toilets a into Sulabh toilet.

Successful Sulabh Campaign

By 1980, 25,000 people were using sulabh facilities in Patna.Generally Sulabhs are constructed in the public places. Facilities for drinking water, changing rooms, telephone, health care, night shelter and even primary education are provided in some Sulabh complexes.

Economic development from sulabh

Sulabh pay and use facility.

Sulabh biogas.

Sulabh integrated healthcare.

Employment generations.

Rehabilitation to scavangers

Nai disha, a vocational training centre was set up. Sulabh is providing education to the women and teaching them to read and write as they believe that education is the key to development. In addition to education stipends are also provided to women who join training centre. These stipends are Played in the form of cheques. This encourager them to open a bank account and start saving. They have control over their money and this is the first step to make them independent. Sulabh is providing training to women in different field to make them economically strong. Women who has been rehabilitated are getting trained as beautician or in food processing, sewing or embroidery. They are also provided with personality development classes for building their self confidence

Awards

- In 1991, Dr. Pathak was awarded by Padma Bhushan.

- In 1992, Dr. Pathak was awarded by the international Saint Francis prize.

Conclusion

Sulabh is simple sanitation technique which does not rely on expensive infrastructure. Sulabh is a way of thought that treats sewage resource with energy and nutrients which can be used to genrate money.

Bindeshwar Pathak has tried to solve the problem that has been a persistent problem since Vedic period. He had the took courage to make Gandhi's ideology a reality.

***

My NCC Journey

Prerna Sharma, SUO (NCC)

The recent Republic day saw the impeccably dressed NCC cadets marching together at the grand parade in Vijaypath in New Delhi. After the parade, the Indian prime minister participated in the Republic Day NCC Rally, and praised the organisation since he himself was an NCC cadet in his school. The value of the "RD camp" was elevated further when the PM said he was never selected for the much-vaunted camp and the boy who got selected, had become a celebrity at his school!

The word 'NCC' brings a strange sense of courage, discipline and pride among many of us. We look up to those students who are a part of NCC and admire them, whose motto is 'Unity and Discipline'.

'NCC' stands for the 'National Cadet Corps' that was established way back in 1948. NCC cadets are split into two levels. The school level provides A level certificate and the college level provides the B and C level certificates. The organisation aims to develop disciplined cadets under its Army Wing, Naval Wing and Airforce Wing for motivating the youth to take up a career in the armed forces.

For every NCC student, there would be a long story to tell which would become a travelogue of their success. Likewise every journey is special in its own way, my story is also one of them, the major two parts of which are the RDC 2019 (Republic Day Camp) and YEP RUSSIA, MOSCOW (Youth Exchange Programme)

RDC 2019 (Republic Day Camp)

I am Senior Under Officer Prerana from No. 37 CG BN NCC Durg Chhattisgarh, and I am going to share my experience of RDC. My journey was incredible. I had naver thought that I would have improved so much in almost every aspect of my life.

Being an NCC cadet it's a dream of every cadet to be a part of RDC journey and so was my dream. The selection process the starts from the battalion level where students of different colleges participate in different events for further selection. Once this selection is over, the selected cadets are trained in their respective events to fight for Inter Group Competition (IGC).

In IGC I participated in NIAP, flag area and represented as the best Cadet of Raipur Group. According to me the most precious camp before RDC is IGC because the selection ratio is low as compared to number of cadets. For getting selected you need to prove that you are multitalented among other cadets and master of a particular event. Our IGC was from 15th oct to 25th oct in Gwalior (MP). If one focus he/she can easily rec-

ognize whether he/she is selected for future or not. During the selection process they basically point you out and call your chest number for further inquiry, so one can conclude that he/she is selected. And I was the lucky one to get highlighted because of my performance in NIAP.

We were back home after camp and was curious to know our results. After a few days I got call from my ANO mam (Major Sapna Sharma) regarding my selection. Happiness was on its peak but it was just the beginning of a long journey. Selected cadets got their call letter for DCATC-1 which was from 10th Nov to 19th Nov in Bhopal. DCATC-2 was also in continuity from 20th Nov to 30th Nov at same location. Those who are selected in DCATC-1 will remain their itself for DCATC-2.

We were at Bhopal on 10th morning. It was a mixed feeling of joy and curiosity. After reaching at centre, we registered ourself and were allotted rooms. There were cadets from different groups like Gwalior, Bhopal, Indore, Saogur, Jabalpur. We were familiar with some of the faces which we saw in IGC event. First day was normal, from next day we used to wake up at 5 am for morning workout which ended up with Rollcall and basis instructions.

After breakfast there was morning drill and after that we were divided on the basis of our events. Drill and Guard of honour cadets were busy with their practice on ground while cultural cadets used to practice in hall. Though I was home sick for some days but I did leave my hope. And our CO sir would motivate us by say him " To know your limit; You have to cross your limit "

So I kept this line in my head throughout the camp and faced every hurdle which came my way. RDC is a once in a lifetime opportunity for us. So we tried to enjoy every day and every moment of it.

We made friends and even got attached with cadets of different groups and made some buddy pairs. Remember one rule of camp that you must have a buddy pair with you always. I gave my best and was qualified for DCATC-2. This camp had same rules and procedure. Now we were familiar with different cadets and our ustads (Training Instructor). DCATC-2 went in a good speed or I can say that we were too busy in practicing that days didn't bothered us and we were at the end of this camp also. Needed to say goodbye to some of our good friends those who couldn't make up for next camp. This bond is different from friendship, actually we all were like a family now.

The camp went on and we were marked on the basis of our performance

I WAS AWARDED AS THE BEST SENIOR WING CADET OF

RAIPUR BY THE GOVERNOR OF MADHYA PRADESH ANANDI BAHAN PATELAND HOME MINISTER OF CHHATTISGARH TAMRADHWAJ SAHU

After DCATC-2 we got some days of break. It feels good after so many days to see home but honestly everyone misses camp place too. Our PRE-RDC camp was from 20th Dec to 30th Dec and the selected cadets were sent directly from Bhopal to Delhi.

" Practice makes a man perfect" this statement unravelled itself and came to life as I toiled day after day and made it to PRE-RDC

I was in PRE-RDC now and my main event was NIAP MC but also participated in other cultural events. In PRE-RDC we had our BC and YEP exams. I was eligible for YEP and BC both ,so it was a plus point for me because being a BC or YEP your chances for RDC increases.

Now it was our last day in Bhopal, next day we've to leave for Delhi. Our kits were distributed. This feeling can not be laid in words. No doubt our dream was about to come true. I still remember none of us could sleep that night. But some of my friends were out from PRE-RDC, I really missed them. Next day we've to leave for Delhi. On new year we were in Delhi.

On reaching DG NCC first thing I saw was the hell march (Paratroopers marching), this gave everyone goose-bumps. We had to open our backpacks for routine check-up. One thing I still remembered, that it was too cold that evening . After some instructions we were sent to the building of MP & CG DTE. It was home for us. Our beds were distributed and within no time we had our dinner. It was a rush day so everyone was very tired and went to sleep early.

Some basic points about RDC are that you'll have a proper bed and blanket for sleep but you'll not get proper time to sleep, you'll have plenty of dishes but won't have time to enjoy them, you'll get warm water for bathing but it's hard to manage time for shower. Every evening we had our Roll Call where we need to march in mufti uniform. After that next day instructions were given. One of the best thing was that you won't regret your birthday there because everyday we used to cut cake during rollcall. No one can celebrate their birthday better than this. where cadets of different state wish you, including different officers. Our rollcall ended with NCC song and that too with high josh…!

Everyday was a new chapter there. Beside daily events we had a new experiencs memory. Some good memories are from Delhi Darshan. How can one forget that day.We also interacted with the YEP cadets from different countries. It was such an impressive meet with them. We

made unbreakable bonds with our buddies and created a lots of memories with them. Whenever I think of those moment a wave of astonishing memories come in my mind with drops of tears in my eyes.

I really miss my buddies and those wonderful days with them.

Our most lovable place was Kalpataru (cafeteria). Oh! That place.!! Sometimes we used to chill there in the evening time and we tasted almost every dish of kalpataru. Our contingent commander throw a party the day after we were done with our cultural program. We had a lots of fun that day.

Buddy, it's not about your goal, it's about who you become while achieving your goal. Don't forget to enjoy your present moment. Celebrate small things. RDC is the best 30 days of my life I have ever had till now. I can never forget these beautiful days of drill, ragda, enjoyment, refreshment and many things.RDC will not only improve your personality instead it will help you to discover who you are. Never leave hope.

God has perfect timing for everything and it's highly possible that by not being where you thought you should be, you will end up exactly where you meant to go.

I realised this when after a couple of months when we were back home I was short listed for YEP Russia Moscow to represent my country as Youth Ambassador. We, a team 10 cadets accompanied with my officer, travelled to Russia. Everyone was excited as it was our first international trip. We got to explore the realms of Russia through their food, culture, custom and traditions.

We also interacted with youth organisation of Russia which was known as Russian Youth Federation (VYF) . We spent 12 days in Russia which was very memorable and words can never do justice to this experience. YEP is the prestigious camps of all. YEP is all based on sharing culture amongst the respective countries for peace, harmony and better understanding of humanity.

NCC has helped me to grow, and to strive as an individual while teaching the essence of selflessness, true patriotism and ethics. It has help me understand the balance of discipline with the importance of team work and time management. The taste of failure doesn't mean that it's the end of a journey rather a challenge to improve and another opportunity to try to excel. NCC provides not only aspirants for armed forces but an ideal being in all walks of life. I am proud to be the part of NCC and I also aim to join the Indian Armed Forces soon. ***

आधुनिक भारत में महामारियाँ : एक शब्द चित्र

डॉ. ज्योति धारकर सहा.प्राध्यापक (इतिहास)

इस समय पूरा विश्व कोरोना महामारी की चपेट में हैं और अब तक केवल भारत में 23.36 लाख से ज्यादा लोगों की इससे मौत हो चुकी है । एक तरफ जहाँ हम 2021 में भी इस महामारी से जूझ रहे हैं वहीं लगता है कि हम पुराने अनुभवों से सीख नहीं लेते हैं । कहा भी जाता है कि मानव इतिहास से सबक नहीं लेता इसीलिए इतिहास बार-बार खुद को दोहराता है ।

महामारियों का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव सभ्यता का इतिहास। ऐतिहासिक पृष्ठों पर ऐसी अनेक महामारियों का जिक्र है जिनकी भयावहता रोंगटे खड़ी कर देती है । आइए सबसे पहले जानते हैं कि महामारी क्या होती है ?

जब किसी रोग का प्रकोप सामान्य की अपेक्षा बहुत अधिक होता है तो उसे महामारी (epidemic) कहते हैं । महामारी किसी एक स्थान, क्षेत्र या जनसंख्या के भूभाग पर सीमित होती है, लेकिन कोई बीमारी दूसरे देशों और दूसरे महाद्विपों में भी फैल जाए तो उसे पैनडेमिक (pendemic) कहते हैं । बिल्कुल उसी तरह जिस तरह WHO ने अब कोरोना वायरस को पैनडेमिक यानी महामारी घोषित कर दिया है ।

आइये अब हम भारत में विभिन्न महामारियों के इतिहास को जानते हैं । सबसे पहले जिक्र करते हैं 1915-1926 तक फैली बीमीरी इंसेफेलाईटिस लेटार्गिक (Encephalitis Lethargica) इसे सुस्त इंसेफेलाइसस के रूप में भी जाना जाता है । 1915-1926 के बीच यह बीमारी पूरी दुनिया में फैल गई । यह एक तीव्र संक्रामक बीमारी थी । जिसका वायरस मानव के केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र पर हमला करता है। इस बीमारी की मुख्य विशेषता थी, बढ़ती हुई उदासीनता, उन्नींदापन और सुस्ती, यह नाक और मुँह (nasal and oral secretions)से फैलता था। भारत की अपेक्षा योरोप में इस बीमारी ने अधिक कहर ढाया।

1918 - 1920 स्पेनिश फ्लू - (Spenish Flu) अभी दुनिया इन्सेफलाईटिस लेयजिका से लड़ रही थी, एक नया वायरस फैल गया जिसका नाम था 'स्पेनिश फ्लू' । यही वह समय भी था जब दुनिया 1918 में प्रथम विश्व युद्ध की विभीषका से उबरने का प्रयास कर रही थी, ठीक उसी समय स्पेनिश फ्लू ने दस्तक दी थी । प्रथम विश्व युद्ध में जितने लोग मारे गये, स्पेनिस फ्लू ने उससे दो गुना लोगों को लील लिया था । उस दौरान करीब 5 करोड़ लोग मारे गये । यह मानव इतिहास की सबसे भीषण महामारियों में से एक थी ।

डॉक्टरों ने स्पेनिश फ्लू को इतिहास के सबसे बड़े होलोकॉस्ट की संज्ञा दी थी । भारतीय सैनिकों को लेकर एक जहाज 29 मई 1918 को मुम्बई बंदगाह पहुँचा और दो हफ्ते वहीं फंसा रहा । जल्दी ही मुम्बई स्पेनिश फ्लू का बड़ा केन्द्र बन गया । बेहद तेजी से फैलते संक्रमण ने पूरे देश में पैर पसारे । कम से कम 1 करोड़ 20 लाख लोगों ने देश में जान गवाई। उन दिनों हम अंग्रेजों के अधीन थे। अंग्रेजी सरकार को इसे नियंत्रित करने के लिये स्थानीय और जातिगत, सामाजिक और राजनीतिक संगठनों की मदद ली थी बाद में इन्हीं संगठनों की मदद गाँधीजी ने स्वतंत्रता के लिये भी ली ।

सत्य तो यह है कि उस वक्त भारत ने अपनी आबादी का छह फीसदी हिस्सा इस बीमारी में खो दिया । मरने वालों में ज्यादातर महिलाएं थी, ऐसा इसलिए हुआ था

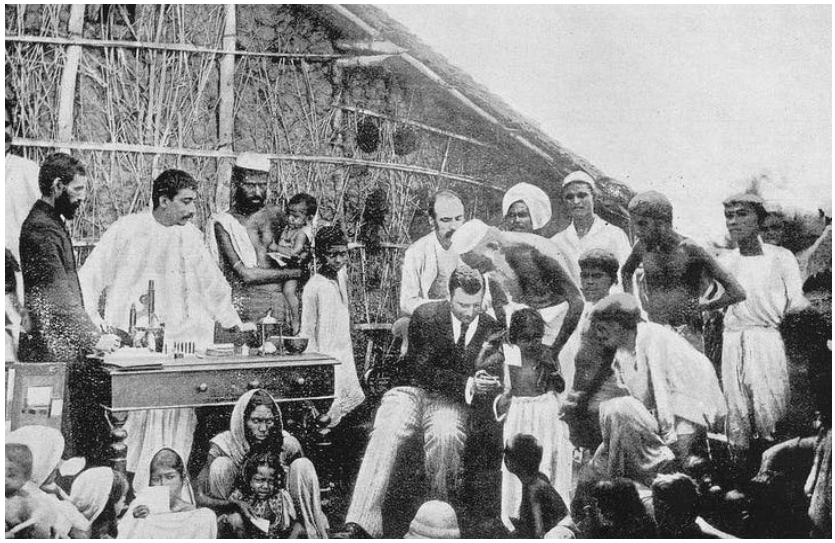

जल संचय प्रणाली ने इस शहर को भारत में हैजा की महामारी का केन्द्र बना दिया ।

1968-1969 फ्लू महामारी (Flu Pandemic) - 1968 में फ्लू, इन्फ्लूऐंजा ए वायरस के (H_3N_2) स्ट्रेन के कारण हॉगकॉग में फैला और दो महिने के भीतर भारत पँहुच गया । वियतनाम युद्ध के बाद वियतनाम से लौट रहे अमेरिकन सैनिक इस वायरस के शिकार बने और महामारी का विनाशकारी रूप सामने आया। विभिन्न स्त्रोतों से यह वायरस भारत में आया और तेजी से देशभर में पैलता चला गया । चिकित्सकीय चेतना और स्वास्थ संबंधी जागृति के अभाव में हजारों लोगों ने प्राण गँवाये ।

क्योंकि महिलाएं बड़े पैमाने पर कुपोषण का शिकार थीं अपेक्षाकृत अधिक अस्वास्थकर माहौल में रहने को मजबूर थीं ।

गाँधी, प्रेमचंद जैसे अनेक राजनीतिक और सामाजिक नेता किस्मत के धनी थे जो स्पेनिश फ्लू से संक्रमित होने के बावजूद जल्दी ही उस समय स्वस्थ हो गये । कविवर सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की पत्नी, पुत्र तथा अनेक पारिवारिक सदस्य अपने प्राण न बचा पाये । वे लिखते हैं :- ''मेरा परिवार पलक झपकते ही मेरे आँखों से ओझल हो गया था।'' वे आगे लिखते हैं - गंगा नदी लाशों से पट गई थी, चारों तरफ इतने सारे शव थे कि उन्हें जलाने के लिये लकड़ी कम पड़ रही थी ।

'स्पेनिश फ्लू' ने भारत के बड़े शहरों को भी वीराना कर दिया था । यद्यपि सरकारी, गैर सरकारी और स्वयं सेवी समूहों ने आगे बढ़कर मोर्चा संभाला, पैसे, कपड़े, दवाईयाँ और जीवन के लिये अति आवश्यक वस्तुओं की मदद की । फिर भी सामान्य स्थिति को लौटने में वर्षों लग गये ।

1961-1975 : हैजा महामारी (Cholera Pandamic) - 1817 के बाद से, विब्रियो कोलेरा (बैक्टेरिया का एक प्रकार) वैश्विक रूप से हैजा की महामारी का कारण बना । 5 साल की समयावधि के भीतर, यह वायरस एशिया के कुछ हिस्सों में फैल गया । जहाँ से यह बंगालदेश और भारत तक पहुँचा । कोलकाता में खराब

1974 : चेचक महामारी - (Smallpox Pandemic) चेचक, दो वायरस वेरिएंट में से किसी एक के कारण होता था, वैरियोला मेजर या वेरोला माईनर, रिपोर्टो के अनुसार, विश्व में चेचक के 60 प्रतिशत मामले भारत में रिर्पोट किए गये थे और दुनिया के अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक जटिल एवं विषैले थे । सम्पूर्ण देश चेचक से भयाक्रांत हो उठा । इस खतरनाक स्थितियों से छुटकारा पाने के लिए भारत ने राष्ट्रीय चेचक उन्मूलन कार्यक्रम (NSEP) शुरू किया था, लेकिन यह कार्यक्रम वांछित परिणाम प्राप्त करने में असफल रहा । चेचक की भयावहता को कम करने के लिए सोवियत संघ और WHO ने असरदार मदद की, 1977 में देश चेचक से पूर्णतः मुक्त हो गया ।

1994 - सूरत में प्लेग (Plague in Surat) - सितम्बर 1994 में, न्यूमोमिक प्लेग ने सूरत में दस्तक दी। प्लेग का मुख्य कारण, शहर में खुली नालियाँ, खराब सिवरेज प्रमाली, अस्वच्छता आदि थे। प्लेग से भयभीत बड़ी संख्या में लोग सूरत शहर को छोड़कर अन्य

शहरों में भाग गये। परिणामस्वरूप देश के अन्य क्षेत्रों में भी प्लेग फैल गया ।

झूठी अफवाहें एवं गलत ईलाज ने भी स्थिति को अत्यन्त गंभीर बना दिया । देखते ही देखते प्लेग ने खाद्य संकट और जल संकट को खड़ा कर दिया । स्थानीय स्वशासन ने WHO के निर्देशों का यथातथ्य पालन कर मृत्यु के बढ़ते आकंड़ों को संभालने की कोशिश की ।

2002-2004 : सार्स (Sars) - 21 वीं सदी की पहली महामारी सार्स के रूप में सामने आयी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक फैलने वाली यह बीमारी वस्तुतः एक गंभीर तीव्र श्वसन सिन्ड्रोम (acute respiratory syndrome) था । जिसे SARS Cov नाम दिया गया था । यह कोविद-19 के समान ही थी । यह वायरस लगातार उत्परिवर्तन (mutations) के लिए जाना जाता था और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में खांसी तथा छींकने के माध्यम से फैलता था ।

2014-2015 - स्वाईन फ्लू (Swine flu)

2014 के अंतिम महिनों के दौरान (H_1V_1) वायरस की की रिर्पोट आने लगी और 'स्वाईन फ्लू' का अत्यन्त खतरनाक स्वरूप सामने आया । गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, महाराष्ट्र तथा तेलंगाना 'स्वाईन फ्लू' से सर्वाधिक प्रभावित होने वाले राज्य थे । मार्च 2015 तक शासन द्वारा लगातार जागरूकता अभियान चलाये गये फिर भी देश भर में लगभग 33,000 मामले रिपोर्ट किये गये । देशभर में लगभग 2000 लोगों ने अपनी जान गँवाई ।

2017- जापानी एन्सेफलाईटिस - (Japani Encephalitis) मच्छर के काटने के कारण 2017 में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर शहर में सैकड़ों बच्चो की मौत हो गयी । इसके लिए जापानी इंसेफेलीटिस और एक्यूट सिफेलीटिस सिंड्रों को जिम्मेदार माना गया । इन दोनों वायरल संक्रमणों से मस्तिष्क में सूजन तथा शारीरिक विकलांगता एवं कुछ मामलों में मृत्यु भी हो जाती है । शासन के प्रयत्नों से ही इस बीमारी की विकरालता से बचा जा सका । यद्यपि अभी भी देश के विभिन्न राज्यों में इन बीमारी के लक्षण दिखायी दे जाते हैं ।

2018 : निपाह वायरस (Nipah Virus) - मई 2018 में केरल में एक विलक्षण वायरस के कारण संक्रमण का वेग दिखाई दिया । चमगादड़ों से फैलने वाले इस संक्रमण को निपाह वायरस के नाम से चिन्हित किया गया । इसके पहले कि यह वायरस जन सामान्य में तेजी से फैलता, केरल सरकार द्वारा वायरस के प्रसार को कम करने तथा निवारक सुरक्षात्मक उपाय अपनाये गये और एक माह के भीतर ही निपाह वायरस पर पूर्णतः नियंत्रण कर लिया गया । यदि निपाह वायरस को फैलने से नहीं रोका जाता तो स्थिति कोरना की भांति विषम हो सकती थी।

2019 : कोरोना वायरस (Corona Virus) - और अब बात कोविद-19 की । 2019 में कोरोना वायरस सर्दी, खांसी, बुखार तथा सांस लेने में तकलीफ जैसे सामान्य लक्षणों के साथ सामने आया और फिर निमोनिया गंभीर श्वसन सिन्ड्रोम, गुर्दे की विफलता और यहाँ तक की मृत्यु में बदलता चला गया ।

भारत में 30 जनवरी 2020 को केरल के त्रिशूर जिले में भारत के प्रथम कोविद-19 से पीड़ित रोगी की पुष्टि हुई । आज देश के सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में कोरोना वायरस के संक्रमण की गंभीरता को आसानी से समझा जा सकता है । महामारी का स्वरूप इतना व्यापक है कि केन्द्र सरकार को महामारी रोग अधिनियम 1897 के प्रावधानों को लागू करना पड़ा । शैक्षणिक एवं वाणिज्यिक संस्थानों को बंद कर दिया गया और सभी पर्यटक वीजा को निलाम्बित करने जैसे अनेक निर्णय लेने पड़े । वस्तुतः कोरोना की वजह से जीवन किस तरह प्रभावित हुआ है यह बताने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हममें से हरेक ने इन अनुभवों को स्वयं महसूस किया है । कोविद-19 की त्रासदी से भरे समय में सीरम इंस्टीट्यूट और भारत बायोटेक की वैक्सीन की सफलता ने आशा के एक नये सूर्य को अवश्य उदित किया है । किन्तु इस नए सूर्य के प्रकाश में हमें अतीत की महामारियों के इतिहास को नहीं विस्मृत करना चाहिए ताकि नवागत भविष्य को संवारा जा सके ।

***

2020-21 साहित्य-संस्कृति से जुड़ी महान हस्तियों का जन्मशती वर्ष है । उन्हें स्मरण करने का अर्थ अपनी परम्परा के सूत्रों से जुड़ना और यह भी याद रखना है कि वे न होते तो हमारा जीवन ठीक नहीं होता, जैसा कि वह है । हमारे सांस्कृतिक जीवन में उनका हस्तक्षेप गहरे मायने रखता है । इसलिए हम उन्हें स्मरण करते हैं ।

फणीश्वरनाथ 'रेणु'

फणीश्वरनाथ 'रेणु'

(4 मार्च 1921 - 11 अप्रैल 1977)

फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म औराही हिंगना, जिला पूर्णियां, बिहार में हुआ। आप आजीवन शोषण और दमन के विरूद्ध संधर्षरत रहे। इसी प्रसंग में सोशलिस्ट पार्टी से जा जुड़े व राजनीति में सक्रिय भागीदारी की। 1942 के भारत-छोड़ो आंन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। 1954 में 'मैला आँचल' उपन्यास प्रकाशित हुआ तत्पश्चात् हिन्दी के कथाकार के रूप में अभूतपूर्व प्रतिष्ठा मिली। जे. पी.आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी की और सत्ता द्वारा दमन के विरोध में पद्मश्री का त्याग कर दिया।

लेखन कार्य - फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने 1936 के आसपास से कहानी लेखन की शुरुआत की थी। 1944 में जेल से मुक्त हुए, तब घर लौटने पर उन्होंने 'बटबाबा' नामक पहली परिपक्व कहानी लिखी। रेणु की दूसरी कहानी 'पहलवान की ढोलक' थी । 1972 में रेणु ने अपनी अंतिम कहानी 'भित्तिचित्र की मयूरी' लिखी। उनकी अब तक उपलब्ध कहानियों की संख्या 63 है। 'रेणु' को जितनी प्रसिद्धि उपन्यासों से मिली, उतनी ही प्रसिद्धि उनको उनकी कहानियों से भी मिली। 'ठुमरी', 'अगिनखोर', 'आदिम रात्रि की महक', 'एक श्रावणी दोपहरी की धूप', 'अच्छे आदमी', 'सम्पूर्ण कहानियां', आदि उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं। उनकी कहानी 'मारे गए गुलफ़ाम' पर आधारित फिल्म 'तीसरी कसम' ने भी उन्हें काफी प्रसिद्धि दिलवाई।

साहित्यिक कृतियाँ

उपन्यास - मैला आंचल, परती परिकथा, जूलूस, दीर्घतपा, कितने चौराहे, पलटू बाबू रोड ।

कथा-संग्रह - एक आदिम रात्रि की महक, ठुमरी, अग्निखोर, अच्छे आदमी ।

रिपोर्ताज - ऋणजल-धनजल, नेपाली क्रांतिकथा, वनतुलसी की गंध, श्रुत अश्रुत पूर्वे ।

प्रसिद्ध कहानियाँ - मारे गये गुलफाम (तीसरी कसम), एक आदिम रात्रि की महक, लाल पान की बेगम, पंचलाइट, तबे एकला चलो रे, ठेस ।

देहांत : 11 अप्रैल, 1977 को पटना में अंतिम सांस ली।

पंचलैट

फणीश्वरनाथ 'रेणु'

कहानी

पिछले पंद्रह महीने से दंड-जुर्माने के पैसे जमा करके महतो टोली के पंचों ने पेट्रोमेक्स खरीदा है इस बार, रामनवमी के मेले में । गाँव में सब मिलाकर आठ पंचायतें हैं । हरेक जाति की अलग अलग ''सभाचट्टी'' है। सभी पंचायतों में दरी, जाजिम, सतरंजी और पेट्रोमेक्स हैं - पेट्रोमेक्स, जिसे गाँव वाले पंचलैट कहते हैं ।

पंचलैट खरीदने के बाद पंचो ने मेले में ही तय किया - दस रुपये जो बच गए हैं, इससे पूजा सामग्री खरीद ली जाए - बिना नेम टेम के कल-कब्जे वाली चीज़ का पुन्याह नहीं करना चाहिए । अँगरेज़ बहादुर के राज में भी पुल बनाने के पहले बलि दी जाती थी ।

मेले में सभी दिन-दहाड़े ही गाँव लौटे; सबसे आगे पंचायत का छड़ीदार पंचलैट का डिब्बा माथे पर लेकर और उसके पीछे सरदार, दीवान, और पंच वगैरह । गाँव के बाहर ही ब्रह्मण टोली के फुटंगी झा ने टोक दिया - कितने मे लालटेन खरीद हुआ महतो ?

. . . .देखते नहीं हैं, पंचलैट है! बामन टोली के लोग ऐसे ही बात करते हैं । अपने घर की ढिबरी को भी बिजली-बत्ती कहेंगे और दूसरों के पंचलैट को लालटेन ।

टोले भर के लोग जमा हो गए । औरत-मर्द, बूढ़े-बच्चे सभी कामकाज छोड़कर दौड़ आये - चल रे चल! अपना पंचलैट आया है, पंचलैट ! छड़ीदार अगनू महतो रह - रहकर लोगों को चेतावनी देने लगा - हाँ, दूर से, जरा दूर से ! छू-छा मत करो, ठेस न लगे ।

सरदार ने अपनी स्त्री से कहा- सांझ को पूजा होगी; जल्द से नहा-धोकर चौका-पीढ़ा लगाओ ।

टोले की कीर्तन-मंडली के मूलगैन ने अपने भगतिया पंच को समझा कर कहा - देखो, आज पंचलैट की

रौशनी मे कीर्तन होगा । बेताले लोगों से पहले ही कह देता हूँ , आज यदि आखर धरने में डेढ़-बेड़ हुआ, तो दूसरे दिन से एकदम बैकाट ।

औरतों की मंडली मे गुलरी काकी गोसाईं का गीत गुनगुनाने लगी । छोटे-छोटे बच्चों ने उत्साह के मारे बेवजह शोरगुल मचाना शुरू किया। सूरज डूबने के एक घंटा पहले ही टोले भर के लोग सरदार के दरवाजे पर आकर खड़े हो गए - पंचलैट, पंचलैट !

पंचलैट के सिवा और कोई गप नहीं, कोई दूसरी बात नहीं । सरदार ने गुड़ीगुड़ी पीते हुआ कहा- दुकानदार ने पहले सुनाया, पूरे पांच कौड़ी पांच रुपया । मैंने कहा की दुकानदार साहेब मत समझिये की हम एकदम देहाती हैं । बहुत बहुत पंचलैट देखा है । इसके बाद दुकानदार मेरा मुँह देखने लगा । बोला, लगता है आप जाती के सरदार हैं । ठीक है, जब आप सरदार होकर खुद पंचलैट खरीदने आये हैं तो जाइए, पूरे पांच कौड़ी में आपको दे रहे हैं ।

दीवान जी ने कहा - अलबत्ता चेहरा परखने वाला दुकानदार है । पंचलैट का बक्सा दूकान का नौकर देना नहीं चाहता था । मैंने कहा, देखिये दूकानदार साहेब, बिना बक्सा पंचलैट कैसे ले जायेंगे । दूकानदार ने नौकर को डांटते हुए कहा, क्यों रें ! दीवान जी की आँख के आगे ''धुरखेल'' करता है ; दे दो बक्सा ।

टोले के लोगो ने अपने सरदार और दीवान को श्रद्धा-भरी निगाहों से देखा । छड़ीदार ने औरतों की मंडली को सुनाया- रास्ते मे सन्न-सन्न बोलता था पंचलैट ।

लेकिन . . . . ऐन मौके पर ''लेकिन'' लग गया ! रुदल साह बनिए की दूकान से तीन बोतल किरासन तेल आया और सवाल पैदा हुआ, पंचलैट को जलाएगा कौन ?

यह बात पहले किसी के दिमाग में नहीं आई थी । पंचलैट खरीदने के पहले किसी ने न सोचा । खरीदने के बाद भी नहीं । अब पूजा की सामग्री चौकी पर सजी हुई है, किर्तनिया लोग खोल-ढोल-करताल खोल कर बैठे हैं, और पंचलैट पड़ा हुआ है । गाँव वालो ने आज तक कोई ऐसी चीज़ नहीं खरीदी, जिसमे जलाने-बुझाने की झंझट हो। कहावत है न, भाई रे, गाय लूं ? तो दुहे कौन ?... लो मजा ! अब इस कल-कब्जे वाली चीज़ को कौन बाले?

यह बात नहीं की गाँव भर मे कोई पंचलैट जलाने वाला नहीं । हरेक पंचायत मे पंचलैट है, उसके जलाने वाले जानकार हैं । लेकिन सवाल है कि पहली बार नेम-टेम करके, शुभ-लाभ करके, दूसरी पंचायत के आदमी की मदद से पंचलैट जलेगा? इससे तो अच्छा है कि पंचलैट पड़ा रहे । जिन्दगी भर ताना कौन सहे ! बात-बात मे दूसरे टोले के लोग कूट करेंगे - तुम लोगों का पंचलैट पहली बार दूसरे के हाथ .....! न, न ! पंचायत की इज्जत का सवाल है । दूसरे टोले के लोगो से मत कहिये ।

चारों ओर उदासी छा गयी । अन्धेरा बढ़ने लगा । किसी ने अपने घर मे आज ढिबरी भी नहीं जलाई थी । . . . . . आखिर पंचलैट के सामने ढिबरी कौन जलाता है ।

सब किये-कराये पर पानी फिर रहा था । सरदार, दीवान और छड़ीदार कि मुँह मे बोली नहीं । पंचों के चेहरे उतर गए थे । किसी ने दबी आवाज़ मे कहा - कल-कब्जे वाली चीज़ का नखरा बहुत बड़ा होता है ।

एक नौजवान ने आकर सूचना दी - राजपूत टोली के लोग हसतें- हसतें पागल हो रहे हैं । कहते हैं, कान पकड़ कर पंचलैट के सामने पांचबार उठो-बैठो, तुरंत जलने लगेगा ।

पंचों ने सुनकर मन-ही-मन कहा - भगवान् ने हसने का मौका दिया है, हसेंगे नहीं ? एक बूढ़े ने लाकर खबर दी - रूदल साह बनिया भारी बतंगड़ आदमी है । कह रहा है पंचलैट का पम्पू, जरा होशियारी से देना ।

गुलरी काकी की बेटी मुनरी के मुँह में बार-बार एक बात आकर मन में लौट जाती है । वह कैसे बोले? वह जानती है कि गोधन पंचलैट बालना जानता है । लेकिन, गोधन का हुक्का-पानी पंचायत से बंद है । मुनरी कि माँ ने पंचायत से फरियाद की थी कि गोधन रोज उसकी बेटी को देखकर ''सलम-सलम'' वाला सलीमा का गीत गाता है - हम तुमसे मोहब्बत करके सलम । पंचों की निगाह पर गोधन

बहुत दिन से चढ़ा हुआ था। दूसरे गाँव से आकर बसा है गोधन, और अब तक टोले के पंचों को पान-सुपारी खाने के लिए भी कुछ नहीं दिया । परवाह ही नहीं करता । बस, पंचों को मौका मिला । दस रुपया जुर्माना । न देने से हुक्का-पानी बंद ... आज तक गोधन पंचायत से बाहर है । उससे कैसे कहा जाए ! मुनरी उसका नाम कैसे ले ? और उधर जाती का पानी उतर रहा है ।

मुनरी ने चालाकी से अपनी सहली कनेली के कान में बात दाल दी - कनेली ! ....चिल्ले, चिल्ले -ह्य-ह्य, चीन. . . .

कनेली मुस्कराकर रहा गयी-गोधन .... तो बंद है । मुनरी बोली - तू कह तो सरदार से । ''गोधन जानता है पंचलैट बालना ।'' कनेली बोली ।

कौन, गोधन ? जानता है बालना ? लेकिन . . .

सरदार ने दीवान की ओर देखा और दीवान ने पंचों की ओर । पंचों ने एक मत होकर हुक्का-पानी बंद किया है । सलीमा का गीत गाकर आँख का इशारा मारने वाले गोधन से गाँव भर के लोग नाराज़ थे । सरदार ने कहा - जाति की बंदिश क्या, जबकि जाति की इज्जत ही पानी में बही जा रही है ! क्यों जी दीवान ?

दीवान ने कहा - ठीक है ।

पंचों ने भी एक स्वर में कहा - ठीक है । गोधन को खोल दिया जाय ।

सरदार ने छड़ीदार को भेजा । छड़ीदार वापस आकर बोला - गोधन आने को राज़ी नहीं हो रहा है। कहता है, पंचों की क्या परतीत है ? कोई कल-कब्जा बिगड़ गया तो मुझे ही दंड जुर्माना भरना पड़ेगा ।

छड़ीदार ने रोनी सूरत बना कर कहा - किसी तरह से गोधन को राज़ी करवाइए, नहीं तो कल से गाँव मे मुँह दिखाना मुश्किल हो जाएगा ।

गुलरी काकी बोली - जरा मैं देखूं कहके ।

गुलरी काकी उठ कर गोधन के झोपड़े की ओर गयी और गोधन को मना लाई । सभी के चेहरे पर नयी आशा की रोशनी चमकी । गोधन चुपचाप पंचलैट में तेल भरने लगा। सरदार की स्त्री ने पूजा सामग्री के पास चक्कर काटती हुई बिल्ली को भगाया । कीर्तन-मंडली के मूलगैन मुरछल के बालों को संवारने लगा। गोधन ने पूछा - इस्पिरिट कहाँ है ? बिना इस्पिरिट के कैसे जलेगा ?

. . . . लो मजा ! अब यह दूसरा बखेड़ा खड़ा हुआ । सभी ने मन ही मन सरदार, दीवान और पंचों की बुद्धि पर अविश्वास प्रकट किया - बिना बूझे-समझे काम करते हैं यह लोग । उपस्थित जन-समूह में फिर मायूसी छा गई । लेकिन, गोधन बड़ा होशियार लड़का है । बिना इस्पिरिट के ही पंचलैट जलाएगा ..... थोडा गरी का तेल ला दो । मुनरी दौड़कर गई और एक मलसी गरी का तेल ले आई । गोधन पंचलैट में पम्प देने लगा ।

पंचलैट की रेशमी थैली मे धीरे-धीरे रौशनी आने लगी । गोधन कभी मुंह से फूंकता, कभी पंचलैट की चाबी घुमाता । थोड़ी देर के बाद पंचलैट से सनसनाहट की आवाज़ निकालने लगी और रोशनी बढ़ती गई। लोगों के दिल का मैल दूर हो गया। गोधन बड़ा काबिल लड़का है । अंत में पंचलैट की रोशनी से सारी टोली जगमगा उठी, तो कीर्तनिया लोगों ने एक स्वर में, महावीर स्वामी की जय-ध्वनि के साथ कीर्तन शुरू कर दिया । पंचलैट की रोशनी में सभी के मुस्कराते हुए चेहरे स्पष्ट हो गए । गोधन ने सबका दिल जीत लिया । मुनरी ने हरकत-भरी निगाह से गोधन की ओर देखा । आँखें चार हुई और आँखों ही आँखों मे बातें हुई - कहा सुना माफ़ करना ! मेरा क्या कसूर ?

सरदार ने गोधन को बहुत प्यार से पास बुला कर कहा - तुमने जाति की इज्जत रखी है। तुम्हारे सात खून माफ़ । खूब गाओ सलीमा का गाना ।

गुलरी काकी बोली - आज रात में मेरे घर में खाना गोधन। गोधन ने एक बार फिर मुनरी की ओर देखा। मुनरी की पलके झुक गई ।

कीर्तनिया लोगो ने एक कीर्तन समाप्त कर जयध्वनि की - जय हो ! जय हो ! ..... पंचलैट के प्रकाश में पेड़-पौधों का पत्ता-पत्ता पुलकित हो रहा था। ***

लाला जगदलपुरी

लाला जगदलपुरी

(17 दिसम्बर 1920 - 14 अगस्त 2013)

जन्म स्थान : जगदलपुर (बस्तर),

विधाएँ :- कविता, कथा संग्रह, इतिहास-संस्कृति ।

गजल संग्रह :- मिमियाती जिंदगी दहाड़ते परिवेश, - पड़ाव, हमसफ़र , आंचलिक कविताएँ, जिंदगी के लिये जूझती गजलें।

इतिहास-संस्कृति : 1. बस्तर : इतिहास एवं संस्कृति (1994, म.प्र.हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल), 2- बस्तर-लोक : कला-संस्कृति प्रसंग (2003, आकृति संस्थान, जगदलपुर), 3- बस्तर की लोकोक्तियाँ (2000, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ), 4- बस्तर की लोकोक्तियाँ (2008, छ.ग.राज्य हिन्दी ग्रन्थ अकादमी)

लोक कथा संग्रह : 1 - हल्बी लोक कथाएँ (1972, लोक चेतना प्रकाशन, जबलपुर), 2 - वनकुमार और अन्य लोक कथाएँ (1990, नवभारती प्रकाशन, इलाहाबाद), 3 - बस्तर की मौखिक कथाएँ (1991, बस्तर संभाग हल्बी साहित्य परिषद्, कोंडागाँव), 4- बस्तर की लोक कथाएँ

अनुवाद : 1 - प्रेमचंद चो बारा कहनी (1984, वन्या प्रकाशन, भोपाल), 2 - बुआ चो चिठी मन (1988, वन्या प्रकाशन, भोपाल), 3 - रामकथा (1991, वन्या प्रकाशन, भोपाल), 4- हल्बी पंचतन्त्र (1971, इन्द्रावती प्रकाशन, जगदलपुर)

सम्मान - 28 अक्टूबर 1972 को 'चंदैनी-गोंदा' के धमतरी मंच पर सम्मानित, एवं उससे पूर्व सम्मानित, म.प्र. प्रगतिशील लेखक संघ के जगदलपुर अधिवेशन में 29 अक्टूबर 1982 को सम्मानित, 07 सितम्बर 1985 को जगदलपुर स्थित 'दण्डकारण्य समाचार' प्रेस द्वारा सम्मानित, छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 1988 में रायपुर में सम्मानित-पुरस्कृत, 2004 में छत्तीसगढ़ शासन के पं. सुन्दरलाल शर्मा साहित्य सम्मान से अलंकृत।

लाला जगदलपुरी की कविताएँ

1
गाँव गवाँ गे

गाँव-गाँव म गाँव गवाँ गे

खोजत-खोजत पाँव गवाँ गे

अइसन लहँकिस धाम भितरहा

छाँव-छाँव म छाँव गवाँ गे ।

अइसन चाल चलिस सकुनी हर

धरम राज के दाँव गवाँ गे

झोप-झोप म झोप बाढ़ गे

कुरिया-कुरिया ढाँव गवाँ गे ।

जब ले मुढ़ चढ़े अगास हे

माँ भुइयाँ के नाँव गवाँ गे ।

2
धूप में छाँव लुटा दूँ तो चलूँ

और कुछ दर्द चुरा लूँ, तो चलूँ

आँसुओं को समझा लूँ, तो चलूँ

दर्द बे-ठौर हो गए हैं जो

उन्हें हृदय में बसा लूँ, तो चलूँ ।

गुलाब की सुंगध-सा बह कर

भोर का मन महका दूँ, तो चलूँ।

ठहरो, किरनों की गठरी को,

ठीक से सिर पे उठा लूँ , तो चलूँ ।

जिन्दगी यह तपती दोपहरी,

जिसे डूबा न सके साँझ कोई

ऐसा इक सूर्य उगा लूँ, तो चलूँ ।

3
हल्बी बोली में ग़ज़ल

धुंगिया दिया एहो, कनकचुड़ी

लसलसा डंडिक गोठेयाऊँ।

आजी काय साग खादतना से तमी,

साँगुन दिया डंडिक गोठेयाऊँ ।

अनुवाद -

अरे ! कनकचुड़ी धान की लहलहती फसल

आओ थोड़ी देर बतिया लें ।

यह तो बताओ कि आज तुमने कौन-सा साग खाया?

आओ बैठो थोड़ी देर बतिया लें ।

4
भतरी बोली में कविता

आमी खेतेआर, मसागत आमर

आमी भुतियार, मसागत आमर

गभार-धार, मसागत आमर

नाँगर-फार, मसागत आमर

धान-धन के नँगायला पुटका

हईं सौकार, मसागत आमर।

अनुवाद -

हम खेतिहर, मशक्कत हमारी,

हम मजदूर, मशक्कत हमारी ।

गभार हो या धार, मशक्कत हमारी,

हाल-फाल मशक्कत हमारी ।

धान-धन को हड़प गया पुटका,

वही हो गया साहूकार । मशक्कत हमारी ।

5
का कहिबे?

मन रोवत हे, मुँह गावत हे का कहिबे?
गदहा घलो कका लागत हे का कहिबे?
अब्बड़ अगियाय लागिस छइहाँ बैरी
लहँकत धाम ह सितरावत हे का कहिबे?
खोर-खोर म कुकुर भूकिस रे भइया
घर म बधवा नरियावत हे का कहिबे?
छोंरिस बैरी मया-दया के रददा ला
सेवा ला पीवत-खावत हे का कहिबे?
चर डारे हे बखरी भर ईमान ला
कतका खातिस पगुरावत हे का कहिबे?
सावन-भादो बारों मास गरिबहा के
लकड़ी-कस मन गुँगवावत हे का कहिबे ?

6.
बस्तर दशहरा

पेड़ कट कट कर
कहाँ के कहाँ चले गये
पर फूल रथ/रैनी रथ/हर रथ
जहाँ का वहीं खड़ा है
अपने विशालकाय रथ के सामने
रह गये बौने के बौने
रथ निर्माता बस्तर के
और खिंचाव में है
प्रजातंत्र के हाथों
छत्रपति रथ की
राजसी रस्सियाँ।

अमृत राय

अमृत राय

(जन्म 3 दिसम्बर 1921- निधन 14 अगस्त 1966)

अमृत राय प्रेमचंद के छोटे बेटे थे । उनका जन्म 03 सितम्बर 1921 को वाराणसी, उत्तरप्रदेश में हुआ। वे मूलतः कहानीकार व उपन्यासकार थे । उन्हें अनुवाद तथा जीवनीकार के रूप में भी ख्याति मिली । आपने व्यंग्य तथा समालोचना के अलावा नाट्य-लेखन भी किया है । अंग्रेजी, बंगला और हिन्दी भाषा पर उनका समान अधिकार था। 14 अगस्त, 1996 को आपका निधन हो गया ।

प्रमुख कृतियाँ - साहित्य में संयुक्त मोर्चा, सुबह का रंग, लाल धरती, नई समीक्षा, नागफनी का देश, हाथी के दांत, अग्निशिखा, कस्बे का एक दिन, गिली मिट्टी, कठघरे, भटियाली, बतरस, कलम का सिपाही (जीवनी) प्रमुख हैं।

अनुवाद : आदि विद्रोही (स्पार्टाकस), फांसी के तख्ते से (ज्यूलियस फ्यूचिक), हेमलेट, समरगाथा।

संपादन : हंस एवं नई कहानी पत्रिका का संपादन ।

सम्मान : 'कलम के सिपाही' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

साहिर लुधियानवी

साहिर 'लुधियानवी'

(जन्म 8 मार्च 1921- निधन 25 अक्टूबर 1980)

साहिर लुधियानवी का जन्म 8 मार्च 1921 को लुधियाना, पंजाब में हुआ । उनके बचपन का नाम अब्दुल हयी साहिर था । उनके पिता का नाम फज़ल मोहम्मद तथा माता का नाम सरदार बेगम था । साहिर एक प्रसिद्ध शायर तथा गीतकार थे । उन्होंने लाहौर में रहते हुए 1948 तक चार उर्दू पत्रिकाओं का संपादन किया । इसके बाद 1949 से बंबई ही उनकी कर्मभूमि रही। शाहिद कॉलेज के दिनों से ही शेरो शायरी के लिए प्रसिद्ध हो गये थे । 1945 में पहली पुस्तक 'तख्तियाँ,'(कविता संग्रह) प्रकाशित हो गई थी । उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण फिल्मों के लिए गीति लिखे । 25 अक्टूबर 1980 में उनका निधन हुआ ।

प्रमुख कृतियाँ - तख्तियाँ, जाग उठे ख्वाब कई (कविता संग्रह) परछाईयाँ (ग़ज़ल संग्रह) और फिल्मी रचनाएं प्रमुख हैं।

सम्मान - 1964 में फिल्म 'ताजमहल' तथा 1974 में फिल्म कभी-कभी के गीतों के लिए 'फिल्म फेयर अवार्ड'। 1971 में उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया।

SCIENTIFIC ACHIEVEMENTS OF DEPARTMENT OF BIOTECHNOLOGY

1. COVID- 19 Virus Inhibition by Medicinal Plants

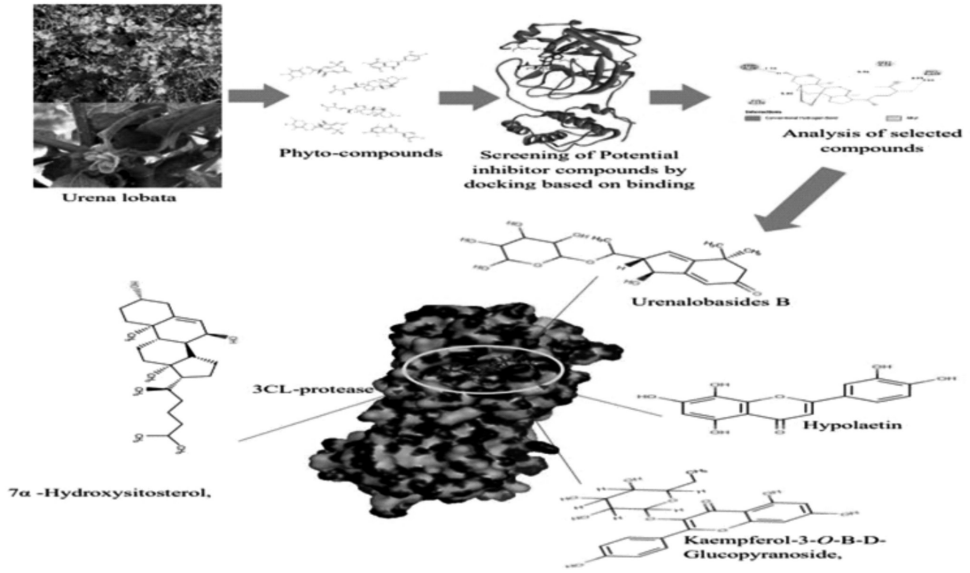

Showing some compounds from Urena lobata have been found competent to dock Mpro protease of SARS-CoV-2.

The Department of Biotechnology is performing scientific validation of traditional knowledge and in this connection the plants used by our traditional healers are being examined. We have examined Urena lobata and detected following pharmaceutically significant compounds -

1. 7- alpha Hydroxysitosterol.
2. Urenalobasidase B
3. Hypolaetin
4. Kaempferol - 3 - O - B - D - Glucopyranoside

In second phase we have examined feasibility of inhibition of Mpro protease from SARS-CoV-2 (Coronavirus) which is responsible for replication of virus inside human cells. We found that above compounds successfully docked Mpro protease and are competent to inhibit virus replication in cell. Further Pharmacodynamic and Pharmacokinetic studies are being performed. In our Department of Biotechnology, we have examined Air quality index of Chhattisgarh and correlated with surge of COVID-19 infections. The study was

2. Impact of Air Quality Index on surge of COVID-19.

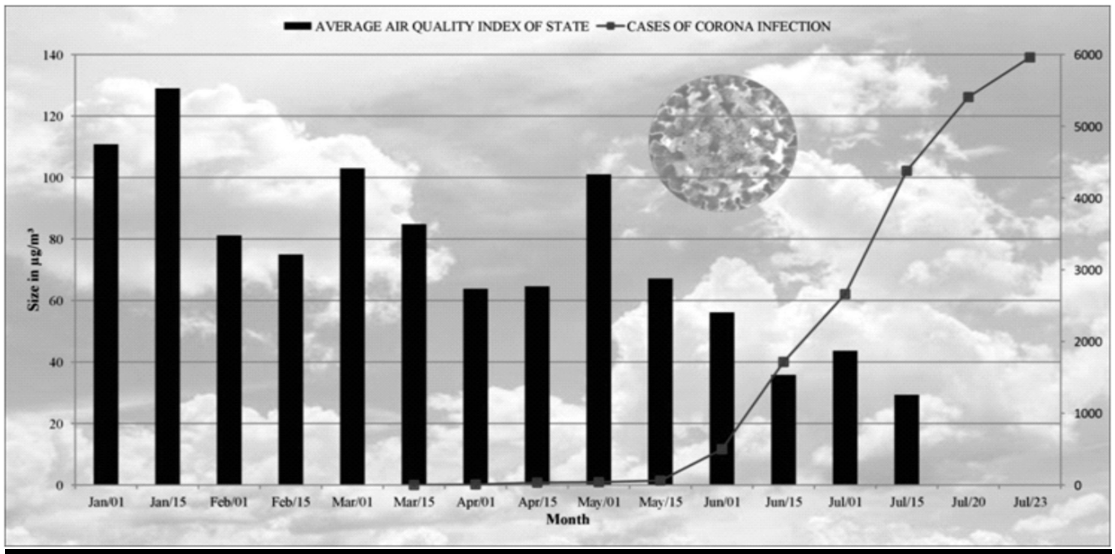

Showing a negative correlation between air quality index and surge of COVID-19 from Chhattisgarh.

comparative for pre lockdown, lockdown and post lockdown period. In maximum parts of the world, viz. - China, USA, Italy, Germany, Brazil, there was a positive correlation with surge of COVID-19 but in our Chhattisgarh we found negative correlation. In our study another major finding was unprecedented increase in NO_2 concentration during lockdown period in air which has imparted acceleration in respiratory problems among COVID-19 patients. The finding is useful in future epidemics related to respiratory problems.

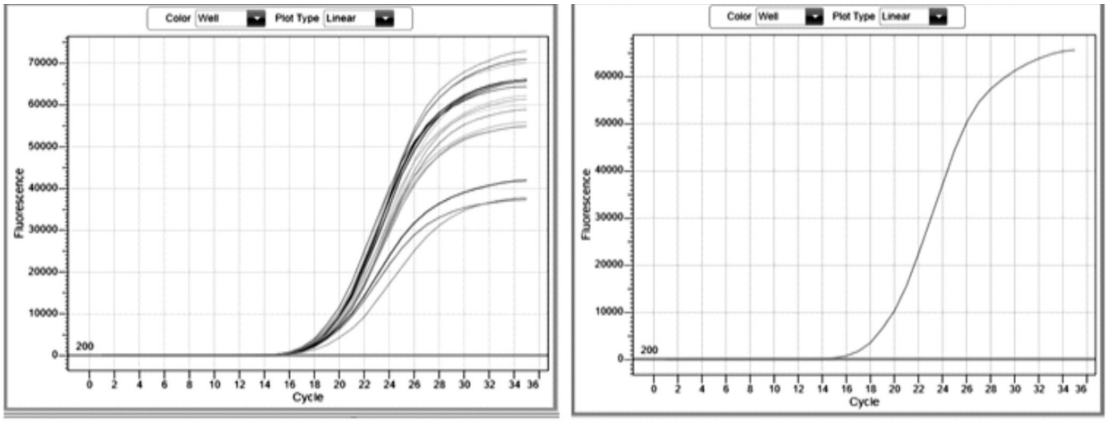

New genes, Mahidol, Union and Chinese have been reported from population of Chhattisgarh in a genomic study

3. New Gene detected from Patients of Sickle Cell Anemia of Chhattisgarh

Sickle Cell Anemia testing camp organized by Department of Biotechnology.

The Department of Biotechnology is engaged in evaluation of various mono-genetic diseases from Chhattisgarh, especially for Sickle Cell Anemia & Glucose-6-phosphate dehydrogenase deficiency. In the course of study, first time we reported three new genes from patients of Sickle Cell Anemia of Chhattisgarh, the genes are -

1. Mahidol
2. Chinese, and
3. Union

The finding is significant for management of patients suffering from such diseases, from population of Chhattisgarh.

***

प्रस्तुति - डॉ. अनिल श्रीवास्तव, प्राध्यापक (प्राणी शास्त्र)